@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
शुक्रवार, 9 मई 2025

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 177 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

पाकिस्तान को भारत ने दिया मुंहतोड़ जवाब

सिम्मी कौर बब्बर

नई दिल्ली, 8 मई। पहलगाम हमले के जवाब में भारत के मिसाइल हमलों के बाद पाकिस्तान बौखला गया है। अपनी बौखलाहट में उसने भारत के कई अग्रिम स्थानों पर गोलाबारी की है। हालांकि, भारतीय सेनाओं की जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान को काफी खामियाजा उठाना पड़ा है। भारत की सीमा से सटे पाकिस्तान के सबसे बड़े शहर लाहौर में उसे काफी नुकसान पहुंचा है। भारत ने लाहौर में पाकिस्तान का एयर डिफेंस सिस्टम पूरी तरह ध्वस्त कर दिया है। इसी के साथ, पाकिस्तान ने भारत में 15 शहरों में स्थित सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने की कोशिश की, जिसे सेना ने नाकाम कर दिया। गुरुवार शाम विदेश सचिव विवेक मिस्त्री, कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने दोबारा प्रेस ब्रीफिंग कर इस जानकारी को दोहराया। गुरुवार सुबह से पाकिस्तानी मीडिया के हवाले से इस तरह की खबरें सामने आ रही थीं कि लाहौर में कुछ धमाके सुनाई दिए हैं। अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों से भी इसी तरह की खबरें सामने आ रही थीं। इसके बाद सरकार के पत्र सूचना कार्यालय यानी पीआईबी की तरफ से दोपहर 2:34 बजे एक वक्तव्य जारी किया गया। इसमें कहा गया कि माहौल को और तनावपूर्ण बनाने की पाकिस्तान की कोशिशों को नाकाम कर दिया गया है। साथ ही भारत ने पाकिस्तान की हरकतों का माकूल जवाब दिया है। सरकार की तरफ से जारी वक्तव्य में कहा गया कि बुधवार को ऑपरेशन सिंदूर की ब्रीफिंग के दौरान भारत ने यह स्पष्ट किया था कि हमारा जवाब संतुलित था और टकराव बढ़ाने के मकसद से नहीं था। ब्रीफिंग में यह स्पष्ट किया गया था कि हमने पाकिस्तान के सैन्य प्रतिष्ठानों को टारगेट नहीं किया है। लिहाजा, अगर भारत के सैन्य ठिकानों पर कोई हमला किया जाता है तो इसका उचित जवाब दिया जाएगा। वक्तव्य के मुताबिक, 7 और 8 मई की दरमियानी रात को पाकिस्तान ने उत्तर और पश्चिम भारत के कई क्षेत्रों को निशाना बनाया। इनमें अवंतीपुरा, श्रीनगर, जम्मू, पठानकोट, अमृतसर, कपूरथला, जालंधर, लुधियाना, आदमपुर, बठिंडा, चंडीगढ़, उत्तरलाई, नाल, फलौदी और भुज शामिल थे। पाकिस्तान ने ड्रोन और मिसाइलों के जरिए इन स्थानों को निशाना बनाया। हालांकि, काउंटर‚ऱ और एयर डिफेंस सिस्टम की मदद से भारत ने इन हमलों को निष्क्रिय कर दिया। हमलों को निष्क्रिय करने के बाद मलबे को बरामद कर लिया गया है। वक्तव्य के अनुसार, गुरुवार सुबह देश के सशस्त्र बलों ने अपनी जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान के कई ठिकानों को निशाना बनाया। पाकिस्तान जिस तरह से हमले कर रहा है, भारत का जवाब भी वैसा ही है। विश्वसनीय जानकारी के अनुसार पता लगा है कि लाहौर में पाकिस्तान के एयर डिफेंस सिस्टम को निष्क्रिय कर दिया गया है। पाकिस्तान नियंत्रण रेखा स्थित जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा, बारामूला, उड़ी, पुंछ, मेंढर और राजौरी सेक्टर में मोर्टार से गोले दाग रहा है, इनमें 16 नागरिकों की जान गई है। इनमें तीन महिलाएं और पांच बच्चे शामिल हैं। यहां भी भारत को पाकिस्तान को करारा जवाब देना पड़ा, जिसके बाद पाकिस्तान को गोलाबारी रोकना पड़ी। इससे पहले देश के सशस्त्र बलों ने 6 से 7 मई की दरमियानी रात को 1:05 बजे से लेकर 1:30 बजे तक ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया। 25 मिनट के इस ऑपरेशन में 24 मिसाइलों के जरिए नौ आतंकी शिविरों को ध्वस्त कर दिया गया। इन नौ ठिकानों में से पांच पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में थे, वहीं चार पाकिस्तान में थे। इन ठिकानों में आतंकियों को भर्ती किया जाता था। उन्हें प्रशिक्षित किया जाता था। उनके दिमाग में जहर भरा जाता था। अपहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर के बाद राजस्थान पुलिस ने पाकिस्तान से सटे सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई। पाकिस्तान ने गुरुवार रात 8:45 बजे एक बार फिर जम्मू में मिसाइल से हमला करने की कोशिश की। इसके बाद जम्मू से लेकर राजस्थान तक

ब्लैक आउट कर दिया गया है। न्यूज एजेंसी हृङ्क के अनुसार जैसलमेर में भारतीय वायु रक्षा द्वारा पाकिस्तानी ड्रोन को रोका गया। गुरुवार देर रात सीमा क्षेत्र में एक पाकिस्तानी ड्रोन भारतीय सीमा में घुसने की कोशिश कर रहा था, जिसे भारतीय वायु रक्षा प्रणाली ने समय रहते नष्ट कर दिया। राजस्थान बार्डर के नजदीक सभी जिलों में ब्लैक आउट कर दिया गया है। विस्फोटों की आवाज़ सुनी जा सकती है और आसमान में चमकती हुई रोशनी देखी जा सकती है। वहीं, जैसलमेर में सेना ने भारतीय सीमा में घुसे एक पाकिस्तानी पायलट को पकड़ा है। पाकिस्तानी पायलट लड़ाकू विमान के साथ भारतीय सीमा में दाखिल हुआ था। सेना की ओर से जैसलमेर, बाड़मेर और जोधपुर में हृङ्करू जारी है। बता दें कि हृङ्करू (नोटिस टू एयरमैन) यह पायलटों को संभावित खतरों के बारे में सचेत करने के लिए जारी किया जाने वाला नोटिस होता है। बाड़मेर डीएम से जानकारी देते हुए बताया कि राजस्थान स्थिति सामान्य है, किसी प्रकार की कोई हलचल नहीं है। हमले की आशंक के चलते प्रशासन की ओर से पहले ही सतर्कता बरती जा रही है। इस संदर्भ में राजस्थान पुलिस ने अपने सभी पुलिसकर्मियों की सभी प्रकार की छुट्टियों पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। पैरामेडिकल स्टाफ की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं। अधिकारियों ने गुरुवार को बताया कि एहतियात के तौर पर श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में सरकारी और निजी स्कूल बंद कर दिए गए हैं। जोधपुर के सभी कॉलेजों को भी बंद रखने का आदेश दिया गया है। इसके अलावा एहतियात के तौर पर बीकानेर, अजमेर के किशनगढ़ और जोधपुर हवाई अड्डों पर 10 मई तक उड़ानों का परिचालन निलंबित कर दिया गया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थिति का जायजा लेने के बाद यह निर्णय लिया गया। सूत्रों के अनुसार मुख्य सचिव सुधांश पंत और राज्य पुलिस प्रमुख यूआर साहू ने संभागीय आयुक्तों, कलेक्टरों और पुलिस महानिरीक्षकों तथा पुलिस अधीक्षकों के साथ समीक्षा बैठक की और उन्हें अपने मुख्यालयों में मौजूद रहने के निर्देश दिए। पाकिस्तान की हिमाकत के बाद गुरुवार रात में ही मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने लॉ एंड आर्डर की उच्च स्तरीय बैठक बुलाई है। मुख्यमंत्री निवास पर ये बैठक आयोजित की जा रही है। बैठक में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जैसलमेर, बाड़मेर, गंगानगर और बीकानेर कलेक्टर एसपी से बात की जा रही है। इस दौरान मुख्य सचिव सुधांशु पंत, गृहसचिव आनंद कुमार, छत्नक्क यूआर साहू, एसीएस शिखर अग्रवाल, ‚छत्न लॉ एंड ऑडर विशाल बंसल, छत्न इंटेलिजेंस संजय अग्रवाल, सिद्धार्थ सिहाग उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री ने कलेक्टर, एसपी, आईजी से बात कर बॉर्डर स्थित बा?मेर, जैसलमेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर जिलों के लिए तत्काल पांच-पांच करो? रुपये जारी करने के निर्देश दिए हैं। अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस प्रशासन, कानून एवं व्यवस्था विशाल बंसल द्वारा गुरुवार को सभी रेंज आईजी, कमिश्नर सहित जिला एसपी, डीसीपी एवं कमांडेंट को ईमेल संदेश जारी कर इस संबंध में सख्त निर्देश दिए गए हैं।

पाकिस्तान की 8 मिसाइल और कई ड्रोन मार गिराए गए

संजय अरोड़ा

नई दिल्ली, 8 मई। अभारत के ऑपरेशन सिंदूर और लाहौर में पड़ोसी मुल्क के एयर डिफेंस सिस्टम को तबाह करने के बाद बौखलाए पाकिस्तान ने गुरुवार (वीरवार) रात आठ बजे जम्मू संभाग के जम्मू, सांबा, आरएसपुरा और अरनिया सहित कई इलाकों में आत्मघाती ड्रोन और मिसाइलों से हमला किया। भारत के एयर डिफेंस सिस्टम (एस-400) ने दुश्मन की आठ मिसाइलों और कई ड्रोन को हवा में ही मार गिराया। हमले के साथ ही सीमावर्ती इलाकों में भी भारी गोलाबारी शुरू कर दी। भारतीय सेना दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब दे रही है। रात आठ बजे जम्मू शहर धमाकों से गूंजने लगा। धमाकों के साथ ही पूरे शहर की बिजली बंद कर दी गई। बाजारों में खरीदारी करने निकले लोग भी सुरक्षित जगहों की ओर लौटने लगे। मिसाइलों का

मलबा लपटों के साथ गिरते दिखा। पाकिस्तान ने भारत के रक्षा ठिकानों को भी निशाना बनाने की कोशिश की। जम्मू एयरपोर्ट पर मिसाइलें दागीं, जिनको भारत ने आसमान में नष्ट कर दिया। सांबा, अखनूर, सुंजवां जम्मू यूनिवर्सिटी सहित कई इलाकों में आत्मघाती ड्रोन और मिसाइलों के साथ हमला करने की कोशिश की गई। उधर, जम्मू संभाग के पुंछ जिले के दिग्वार, करमाडा, सलोटी, माल्टी सहित अन्य सेक्टरों में पाकिस्तान भारी गोलाबारी कर रहा है। राजोरी जिले में भी गोले दागे गए हैं। सांबा में करीब दस धमाकों की आवाज सुनी गई है।

पठानकोट में पाकिस्तानी फाइटर जेट मार गिराया

सौरभ शर्मा

नई दिल्ली, 8 मई। अऑपरेशन सिंदूर के तहत की गई भारतीय कार्रवाई से पाकिस्तान बौखला उठा है। सरहद पर बीते 36 घंटे में तेजी से हालात बदले हैं। पाकिस्तान जंग पर आमादा है। पाकिस्तान ने भारत के 15 शहरों में स्थित सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने की कोशिश की, जिसे सेना ने नाकाम कर दिया। वहीं, अभी खबर आई है कि भारतीय वायु रक्षा बलों ने पठानकोट सेक्टर में पाकिस्तानी वायुसेना का एक जेट और नौशेरा सेक्टर में दो पाकिस्तानी ड्रोन को मार गिराया है। वहीं, रक्षा सूत्रों ने यह भी बताया कि जम्मू-कश्मीर के नौशेरा सेक्टर में भारतीय सेना की वायु रक्षा इकाइयों ने दो पाकिस्तानी ड्रोन को मार गिराया। सेक्टर में दोनों पक्षों के बीच भारी गोलाबारी हुई। एयर इंडिया ने कहा कि यात्री सुचारू चेक-इन और बोर्डिंग सुनिश्चित करने के लिए निर्धारित प्रस्थान से कम से कम तीन घंटे पहले अपने संबंधित हवाई अड्डों पर पहुंचें। प्रस्थान से 75 मिनट पहले चेक-इन बंद हो जाता है। अकासा एयर ने भी यात्रियों के लिए सलाह जारी की है। ट्वीट में कहा गया है कि भारत भर के सभी हवाई अड्डों पर सुरक्षा उपायों में वृद्धि के कारण हम यात्रियों से अनुरोध करते हैं कि आप प्रस्थान से कम से कम तीन घंटे पहले हवाई अड्डे पर पहुंचें, ताकि एक सहज चेक-इन और बोर्डिंग हो सके। यात्री हवाई अड्डे में प्रवेश के

लिए वैध सरकार द्वारा अनुमोदित फोटो पहचान दस्तावेज साथ लेकर चलें। आपके चेक-इन बैगेज के अलावा केवल सात किलोग्राम तक वजन वाले एक हैंडबैग की अनुमति होगी। नियामक दिशानिर्देशों के अनुसार सभी यात्रियों को बोर्डिंग से पहले द्वितीयक सुरक्षा जांच से गुजरना होगा। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर पाकिस्तानी ड्रोन और मिसाइलों द्वारा जम्मू, पठानकोट और उधमपुर में सैन्य स्टेशनों को निशाना बनाया गया। स्थापित मानक संचालन प्रक्रियाओं के अनुरूप क्षमताओं का उपयोग करके खतरों को तेजी से बेअसर कर दिया गया। किसी के हताहत होने या भौतिक नुकसान की सूचना नहीं मिली। भारत अपनी संप्रभुता की रक्षा करने और अपने लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह तैयार है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने इटली के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री से एंटोनियो ताजानी से फोन पर बात की। उन्होंने कहा कि उन्होंने आतंकवाद का दृढ़ता से मुकाबला करने के लिए भारत की लक्षित और संतुलित प्रतिक्रिया पर चर्चा की। किसी भी वृद्धि पर कड़ी प्रतिक्रिया देखने को मिलेगी। नागरिक उड्डयन सुरक्षा ब्यूरो (बीसीएएस) ने देश भर के सभी एयरलाइनों और हवाई अड्डों को सुरक्षा उपाय बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। सभी हवाई अड्डों पर सभी यात्रियों की सेकेंडरी लैडर पॉइंट चेकिंग (एसएलपीसी) की जाएगी। टर्मिनल बिल्डिंग में आगंतुकों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

भारत ने पाकिस्तान के पायलट को पकड़ा

जयपुर, 8 मई। अपाकिस्तान ने लगातार दूसरे दिन भारत के कई शहरों को निशाना बनाकर कायराना हमले किए हैं। जिसे सुरक्षाबलों ने नाकाम कर दिया है। पाकिस्तान ने गुरुवार देर शाम कई मिसाइलें और ड्रोन दागे थे। जिन्हें मार गिराया गया है। इसी बीच पाकिस्तान के एक पायलट को भी भारत की सीमा के अंदर पकड़ा गया। पाकिस्तान ने लगातार दूसरे दिन कई भारतीय शहरों को निशाना बनाते हुए ड्रोन हमले और मिसाइलें दागीं। भारतीय सेना ने मुंहतोड़ जवाब देते हुए सभी हमलों को नाकाम कर दिया है। वहीं सेना ने भारतीय सीमा के अंदर से एक पाकिस्तानी पायलट को कब्जे में लिया है। पाकिस्तानी पायलट ने लड़ाकू विमान के साथ भारत की सीमा में प्रवेश किया है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो भारत ने पाकिस्तान के लड़ाकू विमानों को मार गिराया है।

बिहार के पूर्व सीएम लालू यादव के खिलाफ चलेगा मनी लॉन्ड्रिंग का केस

तेजिन्दर कौर बब्बर

नई दिल्ली, 8 मई। अजमीन के बदले रेलवे में नौकरी घोटाले में बिहार के पूर्व सीएम लालू प्रसाद यादव की मुश्किलें बढ़ने वाली हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने जमीन के बदले नौकरी घोटाले के मनी लॉन्ड्रिंग मामले में लालू प्रसाद यादव के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी दे दी है। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि द्रौपदी मुर्मू ने सीआरपीसी की धारा 197(1) भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 218 के तहत मुकदमा चलाने की अनुमति दे दी है। जमीन के बदले रेलवे में नौकरी घोटाले की जांच ईडी कर रही है। ईडी ने पिछले साल अगस्त में 76 वर्षीय बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव, उनके बेटे और राज्य के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव और परिवार के अन्य सदस्यों के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया था। एजेंसी ने केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा दर्ज एक एफआईआर के आधार पर मनी लॉन्ड्रिंग कस मामला दर्ज किया था। ईडी ने चार्जशीट में लालू प्रसाद यादव पर अपराध की आय को छिपाने के लिए अपने परिवार के सदस्यों और सहयोगियों के साथ मिलकर आपराधिक साजिश रचने का आरोप लगाया था। ईडी ने आरोप लगाया था कि उन्होंने जमीनें इस तरीके से लीं, जिससे उनकी भागीदारी सामने न आए और परिवार को लाभ हो सके।

जीएसटी घोटाला मामले में ईडी की बड़ी कार्रवाई

कोलकाता, 8 मई। अप्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 14,325 करोड़ रु. के फर्जी जीएसटी बिल घोटाले का पर्दाफाश करते हुए कोलकाता, रांची और जमशेदपुर सहित देशभर के नौ ठिकानों पर छापेमारी की है। इन जगहों में आरोपियों के दफ्तर, घर और अन्य संदिग्ध ठिकाने शामिल थे। छापेमारी के दौरान ईडी ने कई अहम दस्तावेज, कंप्यूटर डाटा, बैंक खातों की जानकारी और अघोषित संपत्तियों के सबूत जब्त किए। जानकारी के मुताबिक, इस मामले में मुख्य आरोपियों अमित गुप्ता, सुमित गुप्ता और शिव कुमार देवड़ा पर फर्जी बिलों के जरिए 800 करोड़ से ज्यादा का इनपुट टैक्स क्रेडिट (आइटीसी) हड़पने का आरोप है। इन तीनों के साझेदार रहे जमशेदपुर के जुगसलाई के व्यवसायी विक्की भालोटिया के घर पर भी ईडी ने दबिश दी है। ईडी ने धनशोधन निरोधक कानून (पीएमएलए), 2002 के तहत कार्रवाई करते हुए कई दस्तावेज, डिजिटल डाटा और अघोषित संपत्तियां जब्त की हैं। पूर्व की जांच में जमशेदपुर के बबलू जायसवाल और विक्की भालोटिया का नाम भी पहले सामने आ चुका है, जिन पर इस घोटाले में शामिल होने का आरोप है। कुछ दिन पहले अमित गुप्ता, सुमित गुप्ता और शिव कुमार देवड़ा को जमशेदपुर की अदालत में भी पेश किया गया था। यह कार्रवाई गुरुवार को शुरू हुई और जांच अभी जारी है।

पीएम मोदी ने सचिवों के साथ की सुरक्षा समीक्षा बैठक

नरेश मल्होत्रा

नई दिल्ली, 8 मई। अजम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले का बदला भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर (पीओजेके) में दहशतगर्दों के नौ ठिकानों पर सटीक एयर स्ट्राइक कर लिया। भारत की तीनों सेनाओं ने 15 दिन बाद पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए ऑपरेशन सिंदूर चलाया। भारतीय सेना की इस कार्रवाई के बाद दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ गया है। संयुक्त राष्ट्र अध्यक्ष ने दोनों देशों से शांति की अपील की है। पाकिस्तान से सटे सीमावर्ती इलाकों में अलर्ट जारी किया गया है। वहां किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए रक्षा इकाइयों को सक्रिय कर दिया गया है। कुछ राज्यों में पुलिसकर्मियों की छुट्टियां रद्द की गई हैं। जानें पल पल के अपडेट... प्रधानमंत्री मोदी ने ऑपरेशन सिंदूर के बाद उपजे हालात को देखते हुए आज राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी घटनाओं और तैयारियों की समीक्षा के लिए मंत्रालयों के सचिवों के साथ बैठक की अध्यक्षता की। ताजा घटनाक्रम में गुजरात के तट पर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। अधिकारियों ने अप्रत्याशित स्थिति के कारण पुलिसकर्मियों की छुट्टियां रद्द कर दी हैं। उन्हें तत्काल ड्यूटी पर लौटने को कहा गया है। राज्य के पुलिस महानिदेशक विकास सहाय के इस फरमान के बाद राजकोट रेंज के पुलिस महानिरीक्षक अशोक कुमार यादव ने कहा कि पाकिस्तान में भारत के आतंकवाद विरोधी हमलों के बाद तटीय पुलिस को अलर्ट कर दिया गया है। यादव ने बताया कि राजकोट रेंज के अंतर्गत आने वाले पांच जिलों में से जामनगर, मोरबी और देवभूमि द्वारका में समुद्र तट है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान बुरी तरह से बौखला गया है और उसकी सेना द्वारा सीमावर्ती इलाकों में उकसावे वाली कार्रवाई के तहत भारी गोलीबारी की जा रही है। सरकार सीमावर्ती इलाकों से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर शिफ्ट कर रही है। विदेश मंत्रालय ने जम्मू कश्मीर में नियंत्रण रेखा पर पाकिस्तान की तरफ से लगातार हो रहे संघर्ष विराम उल्लंघन पर बयान दिया है। सरकार ने बताया कि पुंछ में 13 नागरिक मारे गए हैं, जबकि 44 घायल हुए हैं। अलग-अलग इलाकों में हताहत हुए लोगों को मिलाकर अब तक कुल घायलों की संख्या 59 हो गई है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष फिलेमोन यांग ने भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव को लेकर चिंता जताई है। नौ पाकिस्तानी आतंकी ठिकानों पर ऑपरेशन सिंदूर के बाद उपजे हालात को लेकर उन्होंने कहा, मैं भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ती शत्रुता को लेकर बहुत चिंतित हूं। मैं दोनों पक्षों से अधिकतम संयम बरतने और तत्काल तनाव कम करने का आह्वान करता हूं। मैं सभी आतंकवादी हमलों और नागरिकों तथा नागरिक बुनियादी ढांचे के विरुद्ध हमलों की निंदा करता हूं। उन्होंने कहा, मेरा दृढ़ विश्वास है कि संयुक्त राष्ट्र चार्टर और अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुरूप बातचीत

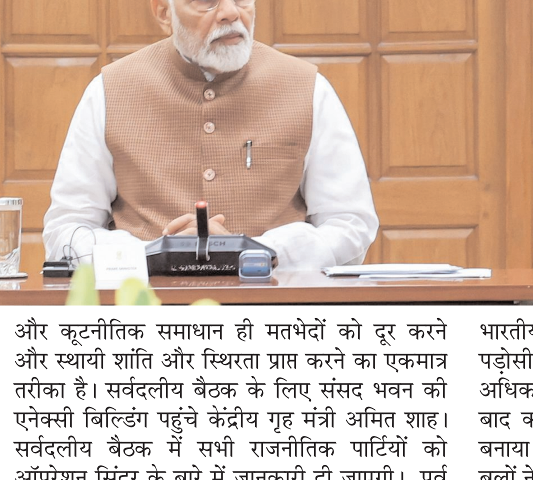

और कूटनीतिक समाधान ही मतभेदों को दूर करने और स्थायी शांति और स्थिरता प्राप्त करने का एकमात्र तरीका है। सर्वदलीय बैठक के लिए संसद भवन की एनेक्सी बिल्डिंग पहुंचे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह। सर्वदलीय बैठक में सभी राजनीतिक पार्टियों को ऑपरेशन सिंदूर के बारे में जानकारी दी जाएगी। पूर्व राजदूत केपी फेबियन ने ऑपरेशन सिंदूर पर कहा कि यह एक सुनियोजित ऑपरेशन था। पुलवामा हमले के बाद हमारे लड़ाकू विमान पाकिस्तान के हवाई क्षेत्र में दाखिल हुए। इस बार हमने बिना पाकिस्तान के हवाई क्षेत्र में गए हमला किया है। साथ ही पाकिस्तान में अंदर तक हमला किया है। सैन्य रणनीति के लिहाज से भी यह बेहद अहम है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़े तनाव को देखते हुए राजस्थान के जोधपुर में सभी निजी-सरकारी स्कूलों और आंगनबाड़ी केंद्रों में अवकाश की घोषणा की गई है। जिला कलेक्टर गौरव अग्रवाल ने कहा कि अगले आदेश तक समस्त शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक परीक्षाएं भी स्थगित रहेंगी। उन्होंने कहा कि आदेश का पालन न करने वालों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। पाकिस्तानी सैनिकों ने गुरुवार को लगातार दूसरे दिन जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर सीमा पार से गोलाबारी की। इससे एक दिन पहले भारतीय सशस्त्र बलों ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत पड़ोसी देश में आतंकी ढांचे को निशाना बनाया था। अधिकारियों ने बताया कि पाकिस्तान ने आधी रात के बाद करनाह इलाके में नागरिक इलाकों को निशाना बनाया और गोले और मोर्टार दागे। भारतीय सशस्त्र बलों ने बिना उकसावे के की गई गोलीबारी का प्रभावी ढंग से जवाब दिया।

पाकिस्तान सांसद: हम गुनहगार हैं, अल्लाह हमें माफ करे

नसीरउद्दीन

इस्लामाबाद, 8 मई। अऑपरेशन सिंदूर में आतंकी ठिकाने नष्ट होने, आतंकियों के मारे जाने और फिर हमले करने की पाकिस्तान की कोशिशों के नाकाम होने के बाद पड़ोसी मुल्क हबड़बड़ाया हुआ है। न सिर्फ पाकिस्तान की हुकूमत और उसकी फौज, बल्कि उसके सांसदों को भी मुल्क की फिक्र सताने लगी है। गुरुवार को पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में एक सांसद अपनी फिक्र जाहिर करते-करते गिड़गिड़ाने लगे। ये सांसद हैं पाकिस्तान की सेना के पूर्व मेजर ताहिर इकबाल। गुरुवार को पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में बोलते-बोलते उनका गला रुंध गया। उन्होंने कहा, मिलकर चलो और रब से दुआ कि हम तेरे आगे दरख्वास्त करते हैं कि इस मुल्क की हिफाजत करो। आपने (रब ने) कायदे-आजम से इंग्लैंड में मुलाकात की थी। आप उनके ख्वाब में आए थे और कहा था कि जाओ और जाकर पाकिस्तान का मसला हल करो, ये मुल्क बनकर रहेगा। अल्लाह-पाक ही इस मुल्क की हिफाजत फरमाएंगे। ...शायद ये हमारी कमी है। हम मजबूर हैं। हम गुनहगार हैं। तू हमें माफ कर दे। हम तेरे आगे सिर झुकाते हैं। माफी मांगते हैं। इसमें दो राय नहीं है कि हम तेरे बड़े गुनहगार हैं। तू रहमत का बड़ा जर्रा भी भेजेगा तो हमारी कामयाबी होगी। पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान खान की बहन अलीमा खान ने पाकिस्तान सरकार पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि शहबाज शरीफ की सरकार दावा कर रही है कि पांच भारतीय विमानों को मार गिराया, लेकिन भारतीय ड्रोन बिना किसी चुनौती के रावलपिंडी तक कैसे पहुंचे हैं? लगातार ड्रोन आ रहे हैं। सरकार का दावा झूठा है।

ब्रिटेन और सिंगापुर ने जारी की नई ट्रैवल एडवाइजरी, नागरिकों को जम्मू-कश्मीर और सीमा क्षेत्रों से दूर रहने की सलाह

लंदन/नई दिल्ली। भारत-पाकिस्तान सीमा पर बढ़ते सैन्य तनाव को देखते हुए ब्रिटेन के विदेश कार्यालय (एफसीडीओ) ने अपना यात्रा परामर्श अपडेट कर दिया है। इसमें ब्रिटिश नागरिकों को भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा से 10 किलोमीटर के दायरे में किसी भी प्रकार की यात्रा से सख्त परहेज करने की सलाह दी गई है। नवीनतम परामर्श में विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर के संवेदनशील क्षेत्रों जैसे पहलगाम, गुलमर्ग, सोनमर्ग, श्रीनगर शहर, और जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग की यात्रा से भी मना किया गया है। इसके अलावा, लाइन ऑफ कंट्रोल (एलओसी) के 10 मील (लगभग 16 किलोमीटर) के भीतर किसी भी क्षेत्र में यात्रा पर पूरी तरह रोक लगाने की सिफारिश की गई है। ब्रिटिश सरकार ने यह कदम भारत द्वारा हाल ही में किए गए 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद उठाया है, जिसमें भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान और पीओके में आतंकी ठिकानों पर सटीक हमले किए थे। इस सैन्य कार्रवाई के बाद से दोनों देशों के बीच तनाव और अधिक गहराया है। ब्रिटेन के विदेश कार्यालय ने बयान में कहा, ÷क्षेत्र में मौजूदा सुरक्षा स्थिति अत्यधिक संवेदनशील बनी हुई है। हम अपने नागरिकों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं और उन्हें अपील करते हैं कि वे अनावश्यक यात्रा से बचें।

सिस्टीन चैपल से निकला काला धुआं, अब तक नहीं चुना गया नया पोप

वेटिकन सिटी। वैटिकन के सिस्टीन चैपल की चिमनी से निकले काले धुएं ने यह संकेत दे दिया कि कैथोलिक चर्च को फिलहाल नया पोप नहीं मिला है। 133 कार्डिनल्स ने इस गुप्त और पारंपरिक प्रक्रिया की शुरुआत कर दी है, लेकिन पहले दौर की वोटिंग में कोई स्पष्ट निर्णय नहीं हो सका।कैथोलिक चर्च के 2,000 साल पुराने इतिहास में सबसे अधिक भौगोलिक विविधता वाले इस कॉन्क्लेव की शुरुआत रोमन रीति-रिवाज़ों, लाल वस्त्रधारी कार्डिनल्स की उपस्थिति, लैटिन मंत्रोच्चारण और भव्य माहौल के बीच हुई। पहले मतदान के असफल रहने के बाद कार्डिनल्स गुरुवार को फिर से मतदान करेंगे। सेंट पीटर्स स्क्वायर में हजारों श्रद्धालु विशाल स्क्रीन पर मतदान प्रक्रिया का इंतजार करते रहे। जैसे ही चिमनी से धुआं निकला, लोगों ने उत्साहपूर्वक प्रतिक्रिया दी, हालांकि काले धुएं ने उम्मीदों पर फिलहाल पानी फेर दिया। वहीं, लंदन से आए 27 वर्षीय गैब्रियल कैप्री ने कहा, उम्मीद है कि कार्डिनल्स ऐसा नेता चुनें जो शांति स्थापित कर सके और चर्च को एकजुट करने की क्षमता रखता हो।

भारत से युद्ध नहीं चाहता पाकिस्तान, लेकिन पूरी तरह तैयार हैः पाक रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ

इस्लामाबाद। भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव के बीच पाक रक्षा मंत्री ख्वाजा मोहम्मद आसिफ ने कहा है कि उनका देश किसी भी हाल में पूर्ण युद्ध से बचना चाहता है, लेकिन यदि युद्ध थोपा गया तो पाकिस्तान की सेना पूरी तरह तैयार है। अमेरिकी न्यूज नेटवर्क को दिए एक विशेष साक्षात्कार में आसिफ ने कहा, भारत की हालिया एयर स्ट्राइक हमारे लिए संघर्ष को और गहरा करने का खुला निमंत्रण है। यह अंतरराष्ट्रीय नियमों का स्पष्ट उल्लंघन है। उन्होंने आगे कहा, पाकिस्तान युद्ध नहीं चाहता, लेकिन अगर भारत युद्ध थोपता है, तो हम पूरी तरह से तैयार हैं। हमारी सेना सतर्क है और किसी भी आक्रामक कदम का मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम है। हमें ऑफ-गार्ड नहीं लिया जा सकता। रक्षा मंत्री ने यह भी कहा कि भारत की ओर से हमलों की तीव्रता बढ़ाए जाने के कारण संघर्ष का दायरा भी बढ़ रहा है, जो पूरे क्षेत्र की स्थिरता के लिए खतरा बन सकता है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से इस मामले में हस्तक्षेप करने की भी अपील की। इस बीच, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ ने भी भारत को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा था कि भारत को अपने कायराना हमले की कीमत चुकानी पड़ेगी।

गाजा पर इजराइली हमले तेज, 92 लोगों की मौत

देइर अल-बलाह (गाजा पट्टी)। इजराइल द्वारा गाजा पट्टी पर किए गए भीषण हवाई हमलों में कम से कम 92 लोगों की जान गई, जिनमें महिलाएं, बच्चे और एक स्थानीय पत्रकार भी शामिल हैं। यह हमला ऐसे समय हुआ है जब इजराइल ने गाजा में अपने सैन्य अभियान को और तेज करने की योजना बनाई है। यह युद्ध अब अपने 20वें महीने में प्रवेश कर चुका है। मध्य गाजा में किए गए दो बड़े हवाई हमलों में 33 लोगों की मौत और 86 से अधिक लोग घायल हुए, जिनमें कई बच्चे भी शामिल हैं। स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार, वास्तविक मृतकों की संख्या इससे अधिक हो सकती है। इजराइली सेना ने इन हमलों को लेकर फिलहाल कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया है। इन हमलों के कुछ ही दिन पहले इजराइली सरकार ने गाजा में अपने सैन्य अभियान को विस्तार देने की योजना को मंजूरी दी थी। इस योजना में गाजा के और अधिक हिस्सों पर कब्जा करना, पहले से कब्जाई गई जमीन पर नियंत्रण बनाए रखना, फिलिस्तीनियों को दक्षिणी गाजा की ओर जबरन विस्थापित करना और राहत वितरण व्यवस्था पर निजी सुरक्षा एजेंसियों की मदद से नियंत्रण हासिल करना शामिल है।

ट्रंप ने भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव को रोकने के लिए 'मदद' की पेशकश की

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत द्वारा पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में आतंकवादी ठिकानों पर हवाई हमला करने के बाद दोनों देशों के बीच तनाव काफी बढ़ गया है। इस बीच अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चिंता जताई है और कहा है कि वह इस मामले में मदद के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ता हुआ यह झगड़ा जल्द से जल्द रुक जाए। ट्रंप ने कहा, ÷यह बहुत दुखद है। मेरी स्थिति यह है कि मैं दोनों के साथ मिलकर काम करता हूं। मैं दोनों को बहुत अच्छी तरह से जानता हूं। मैं चाहता हूं कि वे आपस में मिलकर मामला सुलझाएं। उन्होंने एक-दूसरे को जवाब दिया है, लेकिन अब रुक जाना चाहिए। अगर मैं कुछ मदद कर सकता हूं तो मैं तैयार हूं। मैं उन दोनों को जानता हूं, हम दोनों देशों के साथ

बहुत अच्छे से मिलकर काम करते हैं। अगर मैं इसमें कुछ मदद कर सकता हूं तो मैं इसके लिए तैयार हूं। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर चलाकर पीओके और पाकिस्तान में आतंकवादी ठिकानों पर हमला किया। यह हमला जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले के जवाब में किया गया था, जिसमें 26 लोगों की मौत हो गई थी। अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने भी कहा कि वे भारत और पाकिस्तान के बीच की स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं। उन्होंने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि वे राष्ट्रपति ट्रंप की इस बात से सहमत हैं कि यह तनाव जल्द खत्म हो और अमेरिका दोनों देशों से शांति के लिए बातचीत करता रहेगा इससे पहले बुधवार को, ट्रंप ने मंगलवार को भारत के ऑपरेशन सिंदूर पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें उम्मीद है कि भारत और पाकिस्तान के बीच शत्रुता बहुत जल्दी खत्म हो जाएगी। इससे पहले ट्रंप ने कहा कि उन्हें इस झगड़े के बारे में तभी जानकारी मिली जब वे अपने ऑफिस में जा रहे थे। उन्होंने कहा कि यह बहुत अफसोसजनक है। पिछली बातों के आधार पर लोगों को पता था कि कुछ होने वाला है। भारत और पाकिस्तान पिछले कई दशकों से, बल्कि सदियों से, एक-दूसरे से लड़ते आ रहे हैं। जब उनसे पूछा गया कि क्या उनके पास दोनों देशों के लिए कोई संदेश है, तो उन्होंने कहा, नहीं, मैं बस चाहता हूं कि यह लड़ाई जल्दी खत्म हो।

अमेरिका को इजराइल-हमास युद्ध 24 घंटे में रुकने की उम्मीद

एजेंसी

वाशिंगटन। संयुक्त राज्य अमेरिका ने उम्मीद जताई है कि इजराइल-हमास युद्ध 24 घंटे में रुक सकता है। उसकी भारत-पाकिस्तान के मौजूदा तनाव पर भी नजर है। अमेरिका ने साफ किया है कि चीन पर टैरिफ वापस नहीं होगा। इस बीच ब्रिटेन से बड़ा व्यापार समझौता संभव है। न्यूज के अनुसार, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ओवल ऑफिस में पत्रकारों के सवालों पर इन मुद्दों पर खुलकर चर्चा की। ट्रंप ने कहा कि वह चीन पर टैरिफ वापस लेने के लिए तैयार नहीं हैं। राष्ट्रपति ने यह भी कहा कि इजराइल और हमास के लिए नए युद्धविराम और बंधक सौदे के प्रस्ताव की अच्छी खबर अगले 24 घंटों में आ सकती है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान और भारत के बीच गोलीबारी के बाद होने वाले घटनाक्रमों पर उनकी बारीकी से नजर है। सूत्रों के अनुसार, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप गुरुवार सुबह ब्रिटने के साथ व्यापार समझौते की घोषणा कर

सकते हैं। यह दर्जनों व्यापारिक साझेदारों पर भारी टैरिफ लगाए जाने के बाद पहला समझौता होगा। ट्रंप ने सोशल मीडिया पर कहा कि वह एक बड़े और अत्यधिक सम्मानित देश के प्रतिनिधियों के साथ एक प्रमुख व्यापार समझौते की घोषणा करेंगे।

अमेरिका के साथ नहीं होगी सीधी बात, ईरान ने प्रस्ताव से जुड़ी रिपोर्ट को किया खारिज

एजेंसी

तेहरान । ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बाघई ने हाल ही में एक मीडिया रिपोर्ट को खारिज कर दिया है, जिसमें यह कहा गया था कि तेहरान ने वाशिंगटन के साथ सीधे परमाणु वार्ता का प्रस्ताव दिया था। उन्होंने ईरान के प्रेस टीवी से बात करते हुए इजरायली न्यूज वेबसाइट वाईनेट की एक रिपोर्ट पर प्रतिक्रिया दी, जिसमें दावा किया गया था कि ईरानी विदेश मंत्री सईद अब्बास अराघची ने अमेरिकी मध्य पूर्व दूत स्टीव विटकॉफ से संपर्क किया था। साथ ही उन्होंने ओमानी मध्यस्थता से निराशा के कारण सीधे परमाणु वार्ता का अनुरोध किया था। समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, बाघई ने इस बात से भी इनकार किया कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अगले सप्ताह सऊदी अरब की अपनी आगामी यात्रा के दौरान ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान से मिल सकते हैं।प्रवक्ता ने मीडिया रिपोर्ट और अफवाहों को मनगढ़ंत और बेबुनियाद बताया। साथ ही कहा कि ईरान की कूटनीतिक गतिविधियों, जिसमें अमेरिका के साथ अप्रत्यक्ष

वार्ता शामिल है, उसकी सारी जानकारी विदेश मंत्रालय पारदर्शी, पेशेवर और समय पर तरीके से साझा करता है। ईरान और अमेरिका के प्रतिनिधिमंडलों का नेतृत्व अराघची और विटकॉफ कर रहे हैं, उन्होंने अब तक तीन दौर की अप्रत्यक्ष वार्ता की है। पहले और तीसरे दौर की वार्ता ओमान की राजधानी मस्कट में 12 और 26 अप्रैल को हुई, जबकि दूसरा दौर 19 अप्रैल को रोम में हुआ। चौथा दौर 3 मई को रोम में होने वाला था, लेकिन ओमान के मध्यस्थ ने लॉजिस्टिक कारणों से स्थगित कर दिया। ईरान के सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद से जुड़े नूर न्यूज ने मंगलवार को बताया कि ईरान और अमेरिका के बीच चौथे दौर की अप्रत्यक्ष वार्ता रविवार को मस्कट में होगी। हालांकि, बाघई ने कहा कि ईरान-अमेरिका वार्ता के चौथे दौर की निश्चित तारीख और स्थान अभी तय नहीं हुआ है। अमेरिका और ईरान दोनों ने अब तक अपनी वार्ताओं को सामान्य रूप से उपयोगी बताया है, जिसमें पिछला दौर भी शामिल है। यह घोषणा तब की गई है, जब अमेरिका ने ईरानी तेल और पेट्रोकेमिकल्स के कथित अवैध व्यापार में शामिल संस्थाओं पर नए प्रतिबंध लगाए हैं।

'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद पाकिस्तान और भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की फोन पर हुई बात, इशाक डार का दावा

एजेंसी

अंकारा (तुर्किये)। पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों के खिलाफ किए गए भारत के 'ऑपरेशन सिंदूर' से संघीय सरकार की नींद हराम है। इसके ठीक एक दिन बाद पाकिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने अपने भारतीय समकक्ष के साथ फोन पर बात की है। तुर्किये के समाचार प्रसारक 'टीआरटी वर्ल्ड चैनल' ने बुधवार देर रात पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार के हवाले से यह खुलासा किया। हालांकि नई दिल्ली का ऐसी किसी फोन पर हुई बातचीत को लेकर अभी तक आधिकारिक बयान नहीं आया है। पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री इशाक डार ने टीआरटी वर्ल्ड को दिए साक्षात्कार में इस घटनाक्रम की पुष्टि की। चैनल ने कहा कि 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के जवाब में भारत की ताजा सैन्य कार्रवाई के बाद यह पहला ऐसा संपर्क था। पहलगाम हमले में 26 लोगों की जान गई है। टीआरटी वर्ल्ड की रिपोर्ट के अनुसार, डार ने भारत के

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और पाकिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार असीम मलिक के बीच हुई बातचीत का बाकी कोई ब्यौरा नहीं दिया। चैनल ने अपने प्रसारण में कहा कि इस बातचीत को परमाणु सशस्त्र पड़ोसियों के बीच बड़े सैन्य टकराव की आशंका के बीच तनाव कम करने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। उल्लेखनीय है कि इस बातचीत पर भारत का कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। इस इंटरव्यू में डार ने कहा कि तुर्किये पहला देश है जिसने भारत के ऑपरेशन सिंदूर के बाद इस्लामाबाद से संपर्क किया।

उन्होंने कहा कि रात लगभग एक बजे मुझे सबसे पहला फोन तुर्किये के विदेश मंत्री का आया। इसके बाद तुर्किये के राष्ट्रपति ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ से फोन पर बात की। डार ने कहा कि भारत के हमलों के बाद व्यक्तिगत रूप से और पाकिस्तान के विदेश कार्यालय के माध्यम से उनसे संपर्क करने वाले पहले राजदूतों में से एक इस्लामाबाद में तुर्किये के राजदूत हैं। यह दोनों देशों के भाईचारे और दोस्ती का सबसे बड़ा उदाहरण है।

भारत ने पाकिस्तान के हमले को किया नाकाम, लाहौर में वायु रक्षा प्रणाली को किया नष्ट : पीआईबी

एजेंसी

इस्लामाबाद/नई दिल्ली। 07 मई 2025 की रात को पाकिस्तान की ओर से भारत के खिलाफ एक और उकसावे की कार्रवाई सामने आई। ड्रोन और मिसाइलों का इस्तेमाल करते हुए पाकिस्तान ने जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान और गुजरात के कई सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने की कोशिश की, जिसे भारतीय सुरक्षा बलों ने पूरी तरह से विफल कर दिया। भारतीय रक्षा मंत्रालय के अनुसार, पाकिस्तान ने अवंतीपुरा, श्रीनगर, जम्मू, पठानकोट, अमृतसर, कपूरथला, जालंधर, लुधियाना, आदमपुर, भटिंडा, चंडीगढ़, नल, फलौदी, उत्तरलाई और भुज जैसे स्थानों पर ड्रोन और मिसाइल भेजे। हालांकि, भारत की एकीकृत काउंटर यूएएस ग्रिड और वायु रक्षा प्रणालियों ने समय रहते सभी हमलों को निष्क्रिय कर दिया। विभिन्न स्थानों से बरामद मलबे से पाकिस्तान के हमले की

पुष्टि हुई है।इसके जवाब में, आज सुबह भारत ने पाकिस्तान के कई सैन्य ठिकानों पर आनुपातिक प्रतिक्रिया दी। वायुसेना द्वारा की गई इस जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान के लाहौर क्षेत्र में स्थित एक वायु रक्षा प्रणाली को सफलतापूर्वक निष्क्रिय कर दिया गया। इससे पहले 07 मई को ऑपरेशन सिंदूर पर प्रेस वार्ता के दौरान भारत ने स्पष्ट किया था कि उसकी प्रतिक्रिया संयमित, केंद्रित और गैर-आक्रामक होगी। भारत ने पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना न बनाए जाने की बात दोहराई थी, लेकिन यह भी कहा था कि भारतीय सैन्य ठिकानों पर किसी भी प्रकार का हमला उचित जवाब को आमंत्रित करेगा।पाकिस्तान की ओर से गोलीबारी की घटनाएं नियंत्रण रेखा पर भी तेज़ हो गई हैं। कुपवाड़ा, बारामुल्ला, उरी, पुंछ, मेंढर और राजौरी सेक्टरों में पाकिस्तान ने मोर्टार और भारी कैलिबर आर्टिलरी से अकारण फायरिंग की, जिसमें तीन महिलाओं और पांच बच्चों सहित सोलह नागरिकों की जान चली गई। इन घटनाओं के बाद भारत को भी जवाबी कार्रवाई करनी पड़ी ताकि मोर्टार और आर्टिलरी फायर को रोका जा सके। भारत ने एक बार फिर दोहराया है कि वह स्थिति को और न बढ़ाने का पक्षधर है, लेकिन उसकी यह प्रतिबद्धता तभी प्रभावी हो सकती है जब पाकिस्तान की सेना भी इसका सम्मान करे।

पाकिस्तान-भारत के मौजूदा तनाव ने अफगानिस्तान की चिंता बढ़ाई

एजेंसी

काबुल। पाकिस्तान और भारत के बीच ताजा तनाव ने अफगानिस्तान के व्यापार के लिए चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। बंदरगाहों पर अफगानिस्त से निर्यात होने वाले शिपमेंट रुक गए हैं। चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इन्वेस्टमेंट ने कहा कि इस स्थिति ने अफगानिस्तान की अर्थव्यवस्था पर और दबाव बढ़ा दिया है। टोलो न्यूज के अनुसार, चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इन्वेस्टमेंट के बोर्ड सदस्य खान जान अलोकोजय ने कहा कि यह स्थिति अफगानिस्तान के लिए नुकसानदेह है। सीमित आपूर्ति और उच्च मांग के कारण भारत में अफगान सामान अधिक महंगे हो गए हैं। भारत के लोगों को अफगानिस्तान के ताजे और सूखे फल पसंद हैं। दोनों देशों के बीच तनाव अफगानिस्तान के लिए गंभीर मुद्दा है। बोर्ड सदस्य ने पाकिस्तान और भारत की सरकार से पारगमन और व्यापार के मुद्दों को राजनीतिक और सुरक्षा मामलों से अलग करने का आह्वान किया है। वित्र मंत्रालय ने अफगानिस्तान की अर्थव्यवस्था पर भारत-पाकिस्तान तनाव के प्रत्यक्ष प्रभाव के बारे में भी चिंता व्यक्त की है। उप वित्त मंत्री अब्दुल लतीफ नाजारी ने कहा कि भारत-पाकिस्तान संबंधों में तनाव अफगानिस्तान की आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। अफगानिस्तान का जरूरी सामान वाघा सीमा के जरिए आयात होता रहा है।बढ़ते तनाव के साथ यह प्रक्रिया निस्संदेह अफगानिस्तान के आयात और निर्यात को गंभीर नुकसान पहुंचा सकती है। इस बीच, कुछ विशेषज्ञों का सुझाव है कि अफगानिस्तान भारत के साथ व्यापार जारी रखने के लिए ईरान के चाबहार बंदरगाह का अधिक से अधिक उपयोग कर सकता है।

अमेरिका रॉबर्ट एफ. कैनेडी हत्याकांड की 60,000 और फाइलों को सार्वजनिक करेगा

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड ने पूर्व सीनेटर रॉबर्ट एफ. कैनेडी हत्याकांड से जुड़ी करीब 60,000 फाइलों को सार्वजनिक करने की घोषणा की।

कैनेडी की हत्या साल 1968 में हुई थी। न्यूज के अनुसार, तुलसी गबार्ड ने कहा कि यह पिछले महीने जारी की गई करीब 10,000 फाइलों के अतिरिक्त हैं। उन्होंने कहा कि 10,000 फाइलों से खुलासा हुआ कि विदेशी धरती पर अफवाह फैल रही थी कि कैनेडी को उनकी वास्तविक हत्या की तारीख से एक महीने पहले गोली मार दी गई थी। गैबर्ड के अनुसार, हाल ही में जारी की गई फाइलें संघीय सरकार की अलमारियों में दशकों से पड़ी हुई थी।

उन्हें पहले कभी भी डिजिटल नहीं किया गया था या जनता के लिए सुलभ नहीं बनाया गया था। उन्होंने कहा कि अब तक सार्वजनिक की गई फाइलों में लॉस एंजिल्स पुलिस का कैनेडी के हत्यारे और प्रत्यक्षदर्शियों के साक्षात्कार की रिकॉर्डिंग शामिल हैं। अतिरिक्त फाइलें ड्डह्म्ष्द्धद्ब1द्गह्य.द्दश्1/ह्द्बद्म पर पहले से जारी की गई फाइलों के साथ अपलोड की जाती रहेंगी।

उल्लेखनीय है कि पूर्व सीनेटर रॉबर्ट एफ कैनेडी की हत्या अब भी रहस्य बनी हुई है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सत्ता में आते ही रॉबर्ट कैनेडी की हत्या से संबंधित दस्तावेजों को सार्वजनिक करने का वादा किया था। राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गाबार्ड का मानना है कि रॉबर्ट एफ कैनेडी की हत्या के लगभग 60 साल बाद अमेरिकी लोगों को पहली बार राष्ट्रपति ट्रंप के नेतृत्व में संघीय सरकार की जांच की समीक्षा करने का अवसर मिला है।

नेपाल से भारत में अवैध रूप से प्रवेश कर रहे चीन के चार नागरिक गिरफ्तार

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल से रक्सौल बॉर्डर के रास्ते भारत में अवैध रूप से घुसपैठ करते चीन के संदिग्ध चार नागरिक को एसएसबी ने नेपाल-भारत मैत्री ब्रिज से गिरफ्तार कर लिया। इसमें एक महिला भी है। वह बार- बार अपना बयान बदल रही है। एसएसबी के अनुसार, चीन की महिला खुद को कभी नेपाल तो कभी चीन का नागरिक बता रही है। वह हिंदी , नेपाली , अंग्रेजी और चीनी भाषा फर्राटेदार बोल रही है। जांच अधिकारियों ने बताया कि इस महिला के पास मिले कागजों में पाकिस्तान के मोबाइल नंबर मिले हैं। इस महिला का सबंध पाकिस्तान भी हो सकता है। वह वहां के किसी व्यक्ति के संपर्क में है। एसएसबी के अनुसार, तीनों पुरुष चीनी नागरिक पिछले एक हफ्ते से काठमाडू में रह रहे थे और

रक्सौल बॉर्डर से भारत में घुसपैठ करना चाहते थे। इस काम में उनकी मदद यह चीनी महिला कर रही थी। चारों से पूछताछ जारी है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत-नेपाल के रक्सौल बॉर्डर पर एसएसबी को हाई अलर्ट पर रखा गया है। यहां से गुजरने वाले सभी लोगों की गहन जांच की जा रही है। भारत मे प्रवेश करने वाले लोगो का पहचान पत्र देख कर ही प्रवेश की अनुमति दी जा रही है।

यूक्रेन ने रातभर रूस में किया ड्रोन हमला, मॉस्को को भी बनाया निशाना

एजेंसी

मॉस्को। यूक्रेन ने रूस में सारी रात मानवरहित हवाई वाहनों (यूएवी) से हमला किया। यूक्रेन ने राजधानी मॉस्को के कुछ हिस्सों को भी निशाना बनाया। रूस का दावा है कि यूक्रेन के ड्रोन हमलों को विफल कर दिया गया। रूस की सरकारी न्यूज एजेंसी तास ने रूस के रक्षा मंत्रालय के हवाले से यह जानकारी दी। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि देश की वायु रक्षा प्रणालियों ने रात को रूसी क्षेत्रों में 105 यूक्रेनी मानवरहित हवाई वाहनों को रोका और नष्ट कर दिया।

तालिबान और एनआरएफ एक-दूसरे पर हमला न करने पर सहमत

एजेंसी

काबुल। तालिबान और नेशनल रेजिस्टेंस फ्रंट (एनआरएफ) कल एक-दूसरे पर हमला न करने पर सहमत हो गए। एनआरएफ ऐसा सैन्य गठबंधन है, जो तालिबान के दमनकारी शासन के खिलाफ अफगानों को लामबंद करता है। इसको प्रतिरोध मोर्चा भी कहा जाता है। इसके नेता अहमद मसूद हैं। हमले रोकने की रजामंदी बुधवार दोपहर परवान प्रांत के केंद्र में दोनों पक्षों के बीच हुई । टोलो न्यूज के अनुसार, इस पहली बैठक में अहमद मसूद के समर्थकों और तालिबान प्रतिनिधियों ने लड़ाई रोकने के विकल्पों पर चर्चा की। एनआरएफ की स्थापना अगस्त 2021 में अहमद मसूद ने की थी। एनआरएफ के 12 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व मुजाहिदीन के पूर्व कमांडर अलमास जाहिद और छह सदस्यीय तालिबान प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व तालिबान के खुफिया उप नेता मोहम्मद मोहसिन हाशिमी ने किया। इस बैठक में हिस्सा लेने वाले

अगर चर्चा का कोई नतीजा नहीं निकलता तो सैन्य हमले का विकल्प तो खुला ही है। प्रतिरोध मोर्चा के सदस्य हामिद सैफी ने कहा कि वार्ता के नतीजे का इंतजार कर रहे हैं।

एनआरएफ के नेता मोहम्मद आलम एजेदयार ने अपने फेसबुक पेज पर लिखा कि दोनों पक्ष दूसरे दौर की वार्ता होने तक एक-दूसरे पर हमला नहीं करने पर सहमत हुए हैं। यह बैठक करीब तीन घंटे बाद समाप्त हुई। इस बीच, तालिबान प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य ने कहा कि तालिबान पंजशीर के मुद्दे पर चर्चा करना चाहता था, लेकिन मसूद के समर्थक भावी सरकार की संरचना पर चर्चा करना चाहते थे। इसलिए वार्ता का कोई ठोस नतीजा नहीं निकला। तालिबान के सांस्कृतिक आयोग के सदस्य अनामुल्लाह समांगानी ने कहा कि पंजशीर पर चर्चा शासन प्रणाली की समग्र संरचना पर केंद्रित रही। तालिबान के राजनीतिक कार्यालय के सदस्य नूरुल्लाह नूरी ने कहा कि आने वाले दिनों में चर्चा के नतीजे सामने आएंगे। अगर चर्चा का कोई नतीजा नहीं निकलता तो सैन्य हमले का विकल्प तो खुला ही है। प्रतिरोध मोर्चा के सदस्य हामिद सैफी ने कहा कि वार्ता के नतीजे का इंतजार कर रहे हैं। इसके बावजूद, हमारे पास सभी सैन्य तैयारियां भी हैं।

कौमी पत्रिका

संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002

फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address : qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

'ऑपरेशन सिंदूर' पर उदित राज और पृथ्वीराज चव्हाण के बयान पर भड़के शाहनवाज हुसैन, कांग्रेस से पूछ डाले कई सवाल

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर पर कांग्रेस नेताओं के विवादित टिप्पणियों पर भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शाहनवाज हुसैन ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कांग्रेस पार्टी पर सवाल उठाए और नसीहत दी कि जब पूरा देश एकजुट हो तो ऐसी बात नहीं करनी चाहिए। शाहनवाज हुसैन ने कहा, ÷कांग्रेस को क्या हो गया है? उनके नेता ऐसी बयानबाजी करके क्या साबित करना चाहते हैं? क्या पहलगाम में आतंकियों ने हमारी माताओं और बहनों का सिंदूर नहीं उजाड़ा? ऑपरेशन सिंदूर चलाकर भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पीओके के 9 आतंकी ठिकानों तबाह किया और पहलगाम का बदला लिया। लेकिन, भारतीय सेना के शौर्य पर भी कांग्रेस सवाल उठाने लगी है। दरअसल, महाराष्ट्र कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पृथ्वीराज चव्हाण ने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर कहा कि केंद्र सरकार इसका भावनात्मक लाभ ले रही है, वहीं, दिल्ली कांग्रेस के वरिष्ठ नेता उदित राज ने कहा कि बेहतर होता कि ऑपरेशन सिंदूर की जगह कोई और नाम दिया जाता। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता ने कहा कि कांग्रेस पार्टी सुझाव दे सकती थी। कांग्रेस अपनी सरकार में सभी चीजों का नाम तो गांधी के नाम पर ही रखती थी। लेकिन, अब सेना के शौर्य और ऑपरेशन सिंदूर पर गलत बयानबाजी कर रही है। कांग्रेस एक जुबान नहीं बोल रही है। जब देश एकजुट है तो पार्टी को अलग होने की जरूरत नहीं है।

केजरीवाल के खिलाफ सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के मामले में कोर्ट ने दिल्ली पुलिस से ताजा स्थिति रिपोर्ट मांगी

नई दिल्ली । दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल समेत अन्य के खिलाफ सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के एक पुराने मामले में राउज एवेन्यू कोर्ट ने दिल्ली पुलिस से ताजा स्थिति रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने यह आदेश मामले की आगे की सुनवाई के दौरान दिया, जिसमें शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया था कि चुनावी प्रचार के दौरान दीवारों पर पोस्टर और बैनर लगाकर सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाया गया। इस मामले की सुनवाई राउज एवेन्यू कोर्ट में चल रही है, जहां अदालत ने जांच अधिकारी को निर्देश दिया है कि वह अरविंद केजरीवाल और अन्य आरोपियों के खिलाफ दायर की गई सीडी (जिसमें कथित सबूत मौजूद हैं) और मूल शिकायत की प्रति शिकायतकर्ता को उपलब्ध कराएं। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि मामले की निष्पक्ष जांच और आगे की सुनवाई के लिए यह आवश्यक है कि शिकायतकर्ता के पास सभी जरूरी दस्तावेज उपलब्ध हों। कोर्ट ने यह भी बताया कि शिकायतकर्ता के पास उन फोटोग्राफ्स की प्रतियां नहीं हैं जो कथित रूप से अपराध से संबंधित हैं, इसलिए जांच अधिकारी को निर्देशित किया गया है कि वह सभी आवश्यक डिजिटल और लिखित सबूत शिकायतकर्ता को सौंपे।

भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच ईरान के विदेश मंत्री पहुंचे दिल्ली

नई दिल्ली । पहलगाम में हुए आतंकी हमले का बदला लेने के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव की स्थिति बनी हुए है। इस बीच पूर्व निर्धारित बैठक में हिस्सा लेने ईरान के विदेश मंत्री सईद अब्बास अराघची नई दिल्ली पहुंच गए हैं। वो 20वीं भारत-ईरान संयुक्त आयोग बैठक की सह-अध्यक्षता करेंगे। ईरान के विदेश मंत्री सईद अब्बास अराघची का भारत दौरा रणनीतिक संबंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से है। दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय वार्ता ऐसे समय में हो रही है जब दोनों देश भारत-ईरान मैत्रीसंधि की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। विदेश मंत्रालय की ओर से ईरान के विदेश मंत्री सईद अब्बास अराघची का स्वागत किया गया। सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर एक पोस्ट के जरिए विभाग के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, भारत-ईरान संयुक्त आयोग की बैठक के लिए नई दिल्ली पहुंचने पर विदेश मंत्री सईद अब्बास अराघची का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। भारत-ईरान मैत्री संधि की 75वीं वर्षगांठ पर यह द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा करने और उसे बढ़ाने का अवसर है।

पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को तबाह करने में इस्तेमाल की गई स्कैल्प और हैमर मिसाइल

नई दिल्ली। भारत ने पाकिस्तान और पीओके में नौ आतंकी ठिकानों को तबाह करके पहलगाम आतंकी हमले का बदला ले लिया।इस जवाबी कार्रवाई में फ्रांसीसी लड़ाकू विमान राफेल से दागी गई स्कैल्प और हैमर मिसाइल भी फ्रांस में ही बनी हैं। राफेल में तीन तरह की मिसाइलें लगाई जा सकती हैं, जिसमें मीटियोर, स्कैल्प और हैमर मिसाइल हैं। इन तीनों मिसाइलों के साथ लैस होने की वजह से ही राफेल ने चीन और पाकिस्तान की नींद उड़ा रखी है। हाइली एजाइल एंड मैनोवरेबल म्यूनिशन एक्टेंडेड रेंज (हैमर) हवा से जमीन पर मार करने वाले रॉकेट के जरिए चलने वाली मिसाइल किट है। हैमर मिसाइल हवा से जमीन पर 60 से 70 किलोमीटर तक दुश्मन को निशाना बना सकती है। राफेल में लगने वाली हैमर मिसाइल काफी खतरनाक है, जिसे जीपीएस के बिना भी 70 किलोमीटर की रेंज से लॉन्च किया जा सकता है। फ्रांस से 36 राफेल विमानों का सौदा होते समय भारत ने बजट के अभाव में फ्रांस से महंगे हैमर सिस्टम्स लेने के बजाय इजराइली स्पाइस-2000 बम से ही काम चलाने का निर्णय लिया था, लेकिन पहली खेप में पांच राफेल की आपूर्ति के बाद हैमर सिस्टम्स लेने के लिए फ्रांस को ऑर्डर किया गया था।सितम्बर, 2020 में भारत और फ्रांस की सरकारों के बीच हैमर कॉन्ट्रैक्ट पर हस्ताक्षर किए गए थे। इसकी आपूर्ति आमतौर पर एक साल में होनी थी, लेकिन फ्रांस ने भारत की जरूरत को तत्काल पूरा करने के लिए भारतीय राफेल को ऑल वेदर मिसाइल हैमर से लैस करने पर सहमति व्यक्त की। दूसरी खेप में तीन और राफेल विमानों की आपूर्ति होने के बाद बड़ी संख्या में हैमर सिस्टम्स भारतीय वायुसेना को मिल गई थीं।

अमित शाह ने सीमावर्ती राज्यों के मुख्यमंत्रियों, उपराज्यपालों के साथ सुरक्षा स्थिति की समीक्षा की

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नई दिल्ली में पाकिस्तान और नेपाल से सटे सीमावर्ती राज्यों के उपराज्यपालों और मुख्यमंत्रियों के साथ सुरक्षा समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के उपराज्यपाल, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, राजस्थान, गुजरात और पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री और सिक्किम सरकार के प्रतिनिधि शामिल हुए। बैठक में केंद्रीय गृह सचिव, खुफिया ब्यूरो (आईबी) के निदेशक, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के महानिदेशक और केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के महानिदेशक सहित गृह मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे। बैठक में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि 22 अप्रैल को कश्मीर के पहलगाम में हुए जघन्य आतंकवादी हमले के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि देश इस आतंकी हमले

के गुनहगारों और आतंकवाद के समर्थकों को कड़ा जवाब देगा। गृह मंत्री ने ऑपरेशन सिंदूर के बारे में प्रधानमंत्री मोदी के दृढ़ इच्छाशक्ति और निर्णय के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर भारत की सीमा, सेना और नागरिकों की ओर आंख उठाने वालों को भारत का मुंहतोड़ जवाब है। बैठक में मौजूद सभी मुख्यमंत्रियों और उपराज्यपालों ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए प्रधानमंत्री और तीनों सेनाओं का अभिनंदन किया।

गृहमंत्री शाह ने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले को नजरअंदाज किए बिना ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से इसका उचित जवाब दिया है जिससे पूरी दुनिया को कड़ा संदेश गया। विशेष इनपुट के बाद आतंकी शिविरों के खिलाफ भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा शुरू किया गया ऑपरेशन सिंदूर पूरी दुनिया के सामने मोदी सरकार की आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति का प्रमाण है। इस समय देश ने जो एकता दिखाई है, उससे देशवासियों का मनोबल बढ़ा है। अमित शाह ने कहा कि 6-7 मई की दरम्यानी रात को भारतीय सशस्त्र बलों ने आतंकवादियों से जुड़े नौ विशिष्ट ठिकानों पर हमला किया और उनके बुनियादी ढांचे को नष्ट कर दिया। भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा किए गए इस हमले में लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद, हिजबुल मुजाहिदीन और अन्य आतंकवादी संगठनों के आतंकवादी प्रशिक्षण शिविर, हथियार ठिकाने और कैंपों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया। गृहमंत्री ने कहा कि सभी राज्य मॉक ड्रिल के लिए जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार अपनी तैयारियां करें।

पहलगाम हमला- एनआईए नहीं चाहती छूटे कोई सुराग, फोटो-वीडियो साझा करने की अपील

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने पहलगाम आतंकी हमले के संबंध में पर्यटकों, आगंतुकों और स्थानीय लोगों से फोटो, वीडियो समेत अन्य जानकारी साझा करने की अपील की है। एनआईए का मानना है कि ये जानकारियां हमलावरों की पहचान और उनके तरीकों को समझने में अहम भूमिका निभा सकती हैं।

एनआईए पर हमले की जांच का प्रभार है। हमले की जांच के लिए एनआईए की टीमें पहलगाम में डेरा डाले हुए हैं। इस जघन्य अपराध के गवाहों से पूछताछ कर रही हैं। एजेंसी किसी भी तरह के सुराग को छोड़ना नहीं चाहती। इससे साजिश को उजागर करने में उसे मदद मिलेगी। 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले में 26 पर्यटक मारे गए थे। एजेंसी पहले से प्राप्त तस्वीरों और वीडियो की जांच कर रही है। अब एजेंसी सुनिश्चित करना चाहती है कि इस जघन्य अपराध की जांच में कोई भी उपयोगी जानकारी या सबूत छूट न

जाए। एनआईए ने अपनी वेबसाइट और सोशल मीडिया हैंडल के जरिए लोगों से मोबाइल नंबर 9654958816 और लैंडलाइन नंबर -01124368800 पर एजेंसी को कॉल करने, इनपुट साझा करने और विवरण देने का आग्रह किया है।

देश के मुस्लिम संगठनों ने ऑपरेशन सिंदूर की कामयाबी पर सरकार और सेना को दी बधाई

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का जश्न पूरा देश मना रहा है। देश के मुसलमान भी इस ऑपरेशन को लेकर खुशी का इजहार रहे हैं। देश के मुस्लिम संगठनों ने इस ऑपरेशन की कामयाबी पर सरकार और सेना को बधाई दी है। यह ऑपरेशन पहलगाम आतंकवादी हमले का बदला लेने के लिए भारतीय सेना के जरिए किया गया है, जिसमें पाक अधिकृत कश्मीर में मौजूद आतंकवादी शिविर को नष्ट किया गया है और बड़ी संख्या में आतंकवादियों के मारे जाने की भी खबरें मिली हैं। जमीअत उलमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद मदनी ने पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के जवाब में भारत की सैन्य कार्रवाई पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि जमीअत देश की संप्रभुता, अखंडता और सुरक्षा के मुद्दे पर किसी भी प्रकार का समझौता नहीं कर सकती। यदि पाकिस्तान की ओर से कोई युद्ध थोपने की कोशिश की जाती है, तो हम स्पष्ट और दो टूक शब्दों में यह ऐलान करते हैं कि पूरा देश, सभी धर्मों के लोग और विशेष रूप से मुसलमान, अपनी सेना के साथ चट्टान की तरह खड़े हैं। भारत हमारा वतन है, इसकी रक्षा करना हमारी राष्ट्रीय और संवैधानिक जिम्मेदारी है। हम भारत सरकार से अपील करते हैं कि वह दुश्मन की हर आक्रामक कार्रवाई का मुंहतोड़ जवाब दे। हम दुश्मनों को यह स्पष्ट संदेश देना चाहते हैं कि भारत एकजुट राष्ट्र की तरह हर कीमत पर अपने वतन की रक्षा करेगा।जमाअत-ए-इस्लामी हिंद के अध्यक्ष सैयद सआदतुल्लाह हू सैनी ने कहा कि हमारा मत है कि आतंकवाद एक गंभीर खतरा और मानवता के खिलाफ एक जघन्य अपराध है। देश और इसके लोगों की सुरक्षा, संरक्षा और शांति के लिए इसका समूल नष्ट होना अत्यंत आवश्यक है। आतंकवाद के खिलाफ देश की सशस्त्र सेनाओं और सुरक्षा एजेंसियों द्वारा की जा रही कार्रवाई को देशभर के सभी धर्मों और समुदायों का सम्पूर्ण समर्थन मिल रहा है। पूरा भारत एकजुट होकर हमारी सेनाओं के साथ खड़ा हैं। रजा एकेडमी के अध्यक्ष अल्हाज सईद नूरी ने भारतीय सेना के इस बदले की कारवाई पर खुशी का इजहार करते हुए कहा है कि हिंदुस्तान खुशी से झूम उठा और पर्यटकों पर हुए हमले का बदला लेने की खुशी में मिठाइयाँ बाँटी गईं। रज़ा अकैडमी ने सेना प्रमुख समेत जवानों का हौसला अफज़ाई करते हुए कहा कि आतंकवादियों को मिट्टी में मिलाकर ही दम लेंगे, पूरा हिंदुस्तान आपकी हिम्मत, जज़्बे और बहादुरी को सलाम करता है।

'ऑपरेशन सिंदूर' पर पाकिस्तानी झूठ बेनकाब, केन्द्र ने बताया इसे भ्रामक प्रचार

एजेंसी

नई दिल्ली। 'ऑपरेशन सिंदूर' पर पाकिस्तान का प्रोपेगेंडा तंत्र सक्रिय हो गया है। रात भारत द्वारा चलाए गए निर्णायक सैन्य अभियान 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद पाकिस्तान ने एक संगठित और उग्र भ्रामक प्रचार अभियान शुरू कर दिया है। फेक खबरों को खारिज करते हुए केन्द्र सरकार ने इसे एक हताश प्रयास बताया है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने जानकारी दी कि पाकिस्तान की तरफ से फैलाया जा रहा झूठ ध्यान भटकाने के उद्देश्य से किया जा रहा है। एक ओर भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा चलाया गया यह अभियान सटीक और प्रभावी रहा, दूसरी ओर पाकिस्तान समर्थित सोशल मीडिया अकाउंट्स और यहां तक कि कुछ प्रमुख राजनीतिक हस्तियां भी जानबूझकर झूठी खबरें फैला रही हैं, बनावटी सैन्य जीत और काल्पनिक जवाबी कार्रवाई की कहानियां गढ़ी जा रही हैं, जिनका हकीकत से कोई लेना-देना नहीं है। पीआईबी फैक्ट चेक ने वायरल पुरानी तस्वीरें, जिसमें दावा किया गया कि पाकिस्तान की सेना ने बहावलपुर के पास एक भारतीय राफेल विमान को मार गिराया का हवाला देते हुए खारिज कर दिया। पीआईबी फैक्ट चेक ने पुष्टि की कि यह तस्वीर दरअसल 2021 में पंजाब के मोगा में हुए एक मिग-21 दुर्घटना की है। इसका मौजूदा घटनाओं से कोई लेना-देना नहीं है। इसके साथ झूठा दावा एक वीडियो के रूप में सामने आया, जिसमें यह ग़लत तरीके से दावा किया गया कि भारतीय सेना ने चोरा पोस्ट पर सफेद झंडा उठाकर आत्मसमर्पण कर दिया। इस झूठे और मनगढ़ंत नैरेटिव को पाकिस्तान के मंत्री अत्ता उल्ला तारड़ ने न केवल समर्थन दिया बल्कि बिना किसी सबूत के सार्वजनिक रूप से इस दावे की पुष्टि भी की। पीआईबी फैक्ट चेक ने बताया कि यह स्पष्ट रूप से झूठी और अप्रमाणित कहानी को आधिकारिक समर्थन देकर, तारड़ ने न केवल अपने नागरिकों को गुमराह किया, बल्कि इस प्रोपेगेंडा अभियान को सक्रिय रूप से बढ़ावा भी दिया। एक और भ्रामक पोस्ट में एक वीडियो साझा किया गया, जिसमें दावा किया गया कि पाकिस्तान एयरफोर्स ने श्रीनगर एयरबेस को निशाना बनाया। लेकिन सच्चाई यह है कि यह वीडियो 2024 की शुरुआत में खैबर पख्तूनख्वा, पाकिस्तान में हुए सांप्रदायिक झड़पों का है। इस वीडियो का कश्मीर या किसी हालिया एयरस्ट्राइक से कोई लेना-देना नहीं है। एक अलग अफवाह में यह भी दावा किया गया कि पाकिस्तान ने भारतीय ब्रिगेड मुख्यालय को नष्ट कर दिया।

पाकिस्तान का झूठ बेनकाब :गुजरांवाला में भारतीय ड्रोन गिराने का दावा फर्जी

एजेंसी

नई दिल्ली। पाकिस्तान द्वारा भारतीय ड्रोन को गुजरांवाला में गिराने का दावा पूरी तरह से झूठा साबित हुआ है। प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी) फैक्ट चेक ने इस दावे को खारिज करते हुए खुलासा किया कि पाकिस्तानी सोशल मीडिया हैंडल्स द्वारा शेयर की जा रही तस्वीर 2022 की यूक्रेन-रूस युद्ध की है। पाकिस्तानी अकाउंट्स ने दावा किया था कि पाक सेना ने गुजरात के डिंगा गांव झंड पीर के पास एक भारतीय मानव रहित विमान (यूएवी) को गिरा दिया। हालांकि, पीआईबी ने अपनी जांच में पाया कि यह तस्वीर पुरानी है और इसका भारत-पाकिस्तान से कोई संबंध नहीं है। पीआईबी ने एक न्यूज रिपोर्ट का हवाला देते हुए इसकी पुष्टि की, जिसमें यह तस्वीर 2022 में यूक्रेन-रूस संघर्ष के दौरान प्रकाशित हुई थी।पीआईबी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक्स पोस्ट पर लिखा, ÷क्या यह भारतीय ड्रोन वास्तव में पाकिस्तान में इंटरसेप्ट किया गया? पाकिस्तान आधारित सोशल मीडिया हैंडल्स एक पुरानी तस्वीर साझा कर रहे

हैं, जिसमें दावा किया गया है कि पाकिस्तान सेना ने गुजरांवाला, पाकिस्तान में एक यूएवी ड्रोन को इंटरसेप्ट किया है। वायरल हो रही तस्वीर वर्ष 2022 के यूक्रेन-रूस संघर्ष से संबंधित है। पीआईबी ने 2022 की एक समाचार रिपोर्ट का लिंक भी पोस्ट में दिया है जो स्पष्ट करती है कि ये तस्वीर यूक्रेन-रूस युद्ध से संबंधित है, न कि भारत-पाकिस्तान संघर्ष से। ज्ञात हो कि ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारत के सफल आतंकवाद विरोधी हमलों के मद्देनजर, पाकिस्तान सरकार से जुड़े कई मीडिया आउटलेट और सोशल मीडिया अकाउंट्स को ऑपरेशन से जुड़े तथ्यों को विकृत करने के स्पष्ट प्रयास में भ्रामक और मनगढ़ंत कंटेंट प्रसारित करते हुए बेनकाब किया गया है। भारतीय सशस्त्र बलों ने पहलगाम पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में नौ आतंकवादी ठिकानों पर सटीक हमले किए, जिसमें काफी लोग हताहत हुए। यह ऑपरेशन सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ भारत की निरंतर लड़ाई का एक महत्वपूर्ण क्षण था। हमलों के बाद, पाकिस्तान की ओर से सोशल मीडिया पर फर्जी खबरों की बाढ़ सी आ गई। इसमें पाकिस्तानी मीडिया हाउस और संबद्ध हैंडल शामिल रहे, जिन्होंने सोशल प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर असत्यापित और झूठी कहानियां गढ़ीं। ऐसे ही एक झूठे दावे में बताया गया

NAME CHANGE
It is for general information that I, KAVITA SHARMA D/O RAMESH CHAND R/O RZ-52, KH NO-401/402/405, NALA PAR BASTI, EAST SAGAR PUR, NEAR RAILWAY LINE, SAGAR PUR, DWARKA, SOUTH WEST DELHI, DELHI-110045 declare that name of mine has been wrongly written as PARUL in my Aadhar Card-605792105151 Records. The actual name of mine is KAVITA SHARMA, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, RANUIKA DEVI Mother of No-15202826H Rank-HAV(DS) Name-RUTHURU SAMY D Presently residing at 1/61, MIDDLE STREET, VILL-VELLAKULAM, PO-VELLAKULAM, DIST-TIRUNEIVELI, TAMIL NADU-627719 have changed my name from RENUIKA DEVI to RENUGADEVI D for all future purposes vide Affidavit dated 08/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, MADHABI BASULI Wife of JC-675105H Rank-SUB/MT Name-SRIMANTA PAL Presently residing at VILL-REORA, PO-DWARIKA, TEH-BISHNUPUR, DIST-BANKURA, WEST BENGAL-722122, have changed my name from MADHABI BASULI to MADHABI PAL for all future purposes vide Affidavit dated 08/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, RANJANA PANDEY W/O PANKAJ PANDEY R/O H No. 145 G/F, Block –C, Maharani Enclave, Uttam Nagar, DK Mohan Garden, PO: D.K Mohan Garden, Dist: West Delhi, Delhi-110059 have changed the name of my minor Son HARSHIT PANDEY alias HARSH KUMAR PANDEY aged 17 years and he shall hereafter be known as HARSHIT PANDEY.

NAME CHANGE
I, No.14856961L Rank-SEP/MT Name-MOHIT Presently residing at VILL-BHUAPUR, PO-TIGAON, TEH+DIST-FARIDABAD, HARYANA-121101, have changed my mother's name from JAIVATI to JAYWATI for all future purposes vide Affidavit dated 08/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
It is for general information that I, SUHAIL S/o MOHAMMAD SALIM R/o House No. 157, Camp No. -1, Nangloi, Nangloi, NCT of Delhi, Delhi - 110041 declare that name of my father has been wrongly written as SALEEM KHAN in my 10th and 12th class Educational Documents. The actual name of my Father is MOHAMMAD SALIM, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, No.14856961L Rank-SEP/MT Name-MOHIT Presently residing at VILL-BHUAPUR, PO-TIGAON, TEH+DIST-FARIDABAD, HARYANA-121101, have changed my father's name from DHARM SINGH to DHARAM SINGH for all future purposes vide Affidavit dated 08/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, ARUL VIMALA MARIASUSAI D/O AROGYKIA SWAMY MARIASUSAI residing at H NO- W-89,, GREATER KAILASH-2, DELHI-110048 have changed my name to ARUL VIMALA GEETHA for all future purpose.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, Sandeep S/o Krishan R/o H.N.-847 Mujan Pana Village Bawana, Bawana, North West Delhi, Delhi-110039 declare that name of my mother has been wrongly written as Indra Devi in my 10th Class Educational Documents. The actual name of my mother is Indira which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, SANJANA OJHA, Daughter of SANJIW KUMAR OJHA, residing at B-95, T.F., MANSARAM PARK, SEWAK PARK, P.O. UTTAM NAGAR, WEST DELHI-110059, declare that my father's correct name is SANJIW KUMAR OJHA, which was previously recorded as SANJEEV KUMAR OJHA. He shall henceforth be known as SANJIW KUMAR OJHA for all official and legal purposes.

NAME CHANGE
I, GOPAL KUMAR S/O SHAMBHU PRASAD SINGH residing at H NO-A-17, GALI NO-2, NORTH CHHAJJU PUR, GOKAL PUR, DELHI-110094 Have changed my name to GOPAL SINGH for all future purpose.

NAME CHANGE
I, SAROJ Wife of JC-811948Y Rank-SUB MAJ Name-SURENDER SINGH R/o VPO-DULOTH AHIR, TEHSIL & DIST-MAHENDERGARH, HARYANA-123029, have changed my name from SAROJ to SAROJ DEVI for all future purposes vide Affidavit dated 08/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I hitherto known as Vijay Laxmi Sharma alias Vijay Sharma D/O Kasturi Lal Sharma W/O Ramesh Sharma R/O A-43,Second floor Inderpuri Delhi-110012 have changed my name and shall hereafter be known as VIJAY SHARMA.

NAME CHANGE
I, CHANDA KAUR Wife of HARBANS SINGH R/o B-3B/41B, JANAKPURI, DELHI-110058, have changed my name from CHANDA KAUR to CHANDA KHALSA for all future purposes.

NAME CHANGE
It is for general information that I MUKESH KUMAR S/O ROHTASH KUMAR R/O E-141, SHASTRI NAGAR ASHOK VIHAR, HO: NORTH WEST DELHI, DELHI-110052, declare that name of mine has been wrongly written as MUKESH KUMAR RAJORA in my minor son namely ANSH KUMAR aged 14 years in his school record. The actual name of mine is MUKESH KUMAR which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, Sandeep Kumar S/o Inder Singh Sangwan R/o 1406/7,Opposite Sector-5, Gurgaon Haryana-122001 have changed my name to Sandeep Kumar Sangwan for all future purposes.

NAME CHANGE
I hitherto known as Raghubir Singh Yadav alias RAGHBAR Singh Yadav S/O Jagmal Singh Yadav, R/O ?NO-103, Bagdola Village, Dwarka Sector - 8, PO: Raj Nagar - II, Delhi Cantonment,South West Delhi, Delhi,: 110077, have changed my name and shall hereafter be known as RAGHBAR SINGH YADAV.

NAME CHANGE
I, SHEELA DEVI Mother of No-3010649P Rank-HAV Name-KAMAL SINGH Permanent Address VPO-SUI, TEHSIL-BAWANI KHERA, DISTT-BHIWANI, HARYANA-127031, have changed my name from SHEELA DEVI to SHILA DEVI for all future purposes and in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 04/08/1959 instead of my correct date of birth as 01/01/1941 vide Affidavit dated 08/05/2025 before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE
I, hitherto known as Sujata Rani W/o Suraj Sherawat R/o 1710/E-54, Molarband Extn, Badarpur, New Delhi-110044, have changed my name and shall hereafter be known as Sujata Sherawat.

NAME CHANGE
I, hitherto known as Suraj S/o Chandan Singh R/o 1710/E-54, Molarband Extn, Badarpu, New Delhi-110044, have changed my name and shall hereafter be known as Suraj Sherawat.

NAME CHANGE
It is for general information that I Naveen Kumar Aggarwal S/O Munni Lal Agrwal, R/O E-162A, NEW ASHOK NAGAR, East Delhi, Delhi,- 110096 declare that name of mine has been wrongly written as Naveen Aggarwal in my minor son namely Dev Aggarwal aged 17 years in his 10th class educational document. The actual name of mine is Naveen Kumar Aggarwal, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, PUSPARANI BEHERA Wife of JC-673582L Rank-SUB/MT Name-ABHAYA KUMAR BEHERA Presently residing at VILL-ANKAPADA, PO-BIRIADIA, TEH-CHANDBALI, DIST-BHADRAK, ODISHA-756129, have changed my name from PUSPARANI BEHERA to PUSPA RANI BEHERA for all future purposes vide Affidavit dated 08/05/2025 before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE
That I, KAUSAR W/O RAISUDDIN declare as under that I disowned my Son MOHD JAVED along with his wife NAZIYA BEGUM and his son MOHAMMAD ISA from my all movable/immovable/Patrick properties/assets for his wrong behavior. I shall not be held responsible for any kind of acts done by him in money or transactions and police case and criminal activity illegal/legal and property purposes in the future. That he debarred from entering my premises situated at 1240 RAKAB GANJ GANJ MIR KHAN DELHI-110006.

NAME CHANGE
I, Harsh Kumar Sharma S/O Baldev Raj Sharma R/O H-6- B, Flat No - 002,Mahavir Enclave , Part -1,Old Som Bazar Wali Gali , Palam Village , South West Delhi, Delhi -110045, have changed the name of my minor Son namely Harkent Belbls Sharma aged 11 years and he shall hereafter be known as Tanish Kaushal

PUBLIC NOTICE
Notice is hereby given to the General Public on behalf of our client (SMFG India Credit Co. Ltd.) that **Mr. Vikas Gupta & Miss. Priyanka Gupta** are claiming to be the owners of Built up Second Floor Front RHS, bearing No. SF-3, area measuring 100 sq. yds., built on Property bearing No. WA-141, WA-141-A, & WA-141-B, (bearing Old Plot No.12 & 13) out of Khasra No. 305/212/2, situated in the abadi of WA-Block, Gali No.9, Ganesh Nagar-II, Shakarpur, in the area of Village Shakarpur Khas, Illaqa Shahdara, Delhi-110092, vide Sale Deed dated 27.09.2023, doc. no.7231, executed by (1) Mr. Rakesh Anand (2) Mrs. Anjana Anand (3) Mr. Ashwani Kumar Sharam (4) Mrs. Mohini Sharma Alias Jagtap Mohini Narendra. All persons are hereby informed that above owners want to mortgage the said property and intend to obtain a loan from our client **(SMFG India Credit Co. Ltd.)** against the said property, if anybody has any objection/s upon the ownership of above owner over the said property, its mortgage/litigation, and any other objections, kindly inform the undersigned in writing on the below mentioned address within 07 days of the present.
Kumar & Associates
(Advocates & Consultants)
200, Second Floor, 23, Shivaji Marg, Moti Nagar, New Delhi - 15
legal@knalegal.com
PH: 011-41112527-28

PUBLIC NOTICE
Information is given to general public at large that our client Mr. Mohan Kumar Awana and Mrs. Gitika are the owner of Leasehold Residential House No. 083, area measuring 63 sq. mtrs., M.I.G - I, Situated in Block - F, Sector - 27, Noida, Distt. Gautam Budh Nagar, U.P. by virtue of Transfer Deed dated 01.10.2022 duly registered in the office of SR I, Noida, as Doc No. 6432, Book No. 01, Vol No. 11510, Page Nos. 207-228, Dated 01.10.2022. in the chain document below mentioned documents not available i.e. (1) Original Allotment Letter, (2) Original Possession Certificate, (3) Original Lease Deed dated 12.02.1993, (4) Original Transfer Memorandum, (5) Original Transfer Deed cum Sale Deed dated 21.10.1993 & (6) Original Registered General Power of Attorney with ATS and Will dated 08.02.2000 now our client is declaring that that any other Person does not have any right over the said property, and same property sold too be Mr. Gajraj Singh and same has been finance by ICICI Home Finance Co. Ltd.. Branch: Karol Bagh, Delhi. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained
[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

सार्वजनिक सूचना
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किलों श्री रामचरन राठौर पुत्र श्री खचेरी लाल व श्रीमती श्यामवती राठौर पता मकान नं0 आर जेड–68, जैन कालोनी पार्ट–3, बुध बाजार रोड, उत्तम नगर, नई दिल्ली–110059 ने अपने पुत्र विक्की राठौर व पुत्रवधु श्रीमती रजनी देवी को उनके अभद्र व्यवहार व नियंत्रण में नहीं होने के कारण अपनी चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिये है और अपने सारे सम्बन्ध विच्छेद कर लिये है अगर भविष्य में उपरोक्त पुत्र व पुत्रवधु कोई नैतिक व अनैतिक एवं अपराधिक कार्य करते है तो वह उनका स्वयं का जोखिम होगा इसमें मेरे मुविक्किलों व मेरे मुवक्किलों के परिवार वालों का कोई लेना देना नहीं होगा।
A.K. SINGH & Associates
Advocates
Ch. No.-702, Lawyer's Chamber Block
Hall No.-01, Seat No.-16, Dwarka Court
Sector-10, New Delhi-110075

NOTICE
"Grand 1-10 Sportz 1.2 (2018) Petrol, Sleek Silver colour in good running condition available for sale. Interested parties may contact Manager, The Janata Co-operative Bank Ltd., 32, Netaji Subhash Marg, Darya Ganj, New Delhi-110002, at 9555178762".

NAME CHANGE
I, hitherto known as REKHA RAWAT Wife of Shri RAJENDRA SINGH residing at H NO-517, GALI NO-12, BLOCK-B, OM NAGAR, BADARPUR, DELHI-110044 have changed my name and shall hereafter be known as REKHA DEVI.

NAME CHANGE
I, Seema Devi W/O Shubh Narayan Singh, R/O House No. -593,Gali No -11 A Block, Kaushik Enclave, Burari, North Delhi, Delhi -110084, have changed my name and shall hereafter be known as Jyoti Kumari

PUBLIC NOTICE
GENERAL PUBLIC IS HEREBY INFORMED THAT ORIGINAL SALE DEED DATED 31.12.2010 EXECUTED BY MRS. VIDYA RANI IN FAVOUR OF MR. YOGESH KUMAR MENDIRATTA, MR. AMIT TALREJA AND MR. MOHIT NAGPAL IN RESPECT OF FIRST FLOOR, WITHOUT ROOF RIGHTS, OUT OF PROPERTY BEARING NO. RZ-H-4/95, LAND AREA MEASURING 62.7075 SQ.MTRS. I.E. 75 SQ.YDS., OUT OF KHASRA NO. 79/12, SITUATED IN THE REVENUE ESTATE OF VILLAGE PALAM, DELHI STATE DELHI COLONY KNOWN AS MAHAVIR ENCLAVE, NEW DELHI-110045 VIDE DULY REGD. AS DOC. NO. 16089, IN BOOK NO. 1, VOLUME NO. 5708, ON PAGES 81-87, ON DATED 31.12.2010, IN THE OFFICE OF SRO-9-NEW DELHI/DELHI., HAS BEEN LOST BY THE CURRENT OWNER MRS. KAVITA VATS, W/O MR. VINOD KUMAR VATS, R/O RZ-H-4/95, FIRST FLOOR, KALI WADI MANDIR, BENGALI COLONY, MAHAVIR ENCLAVE, PALAM VILLAGE, PO PALAM VILLAGE DISTRICT SOUTH WEST DELHI, DELHI-110045 AND THIS REGARD MRS. KAVITA VATS HAD LODGED ONLINE LOST REPORT VIDE LR NO. 2802825/2025 IN P.S: CRIME BRANCH, DELHI. AND NOW MRS. KIRAN BOURAI, C/O PRAKASH CHANDRA BOURAI, R/O C-47, GALI NO. 05, DASRATHPURI, DABRI, SOUTH WEST DELHI, DELHI-110045 IS GOING TO PURCHASE THE "FIRST FLOOR, WITHOUT ROOF RIGHTS, OUT OF PROPERTY BEARING NO. RZ-H-4/95, LAND AREA MEASURING 62.7075 SQ.MTRS. I.E. 75 SQ.YDS., OUT OF KHASRA NO. 79/12, SITUATED IN THE REVENUE ESTATE OF VILLAGE PALAM, DELHI STATE DELHI COLONY KNOWN AS MAHAVIR ENCLAVE, NEW DELHI-110045", FROM OWNER / SELLER MRS. KAVITA VATS, W/O MR. VINOD KUMAR VATS, R/O RZ-H-4/95, FIRST FLOOR, KALI WADI MANDIR, BENGALI COLONY, MAHAVIR ENCLAVE, PALAM VILLAGE, PO PALAM VILLAGE DISTRICT SOUTH WEST DELHI, DELHI-110045, WHICH WILL BE MORTGAGED WITH PNB HOUSING FINANCE LIMITED AS SECURITY AGAINST HOUSING LOAN FOR PURCHASING OF SAID PROPERTY. PLEASE SUBMIT THE SAID ORIGINAL SALE DEED IF FIND BY ANY PERSON. ALSO PLEASE CONTACT WITH WRITTEN OBJECTION LETTER WITH RELEVANT DOCUMENTS WITH UNDERSIGNED IF HAVING ANY OBJECTION IN RESPECT OF SAID PROPERTY/SALE DEED WITHIN 10 DAYS OF THIS PUBLICATION. ITS USE BY ANYONE IS ILLEGAL.
ADITYA VERMA, ADVOCATE
E-16, 1ST & 2ND FLOOR, E-BLOCK, MANSAROVAR PARK, SHAHDARA, DELHI-110032.
MOBILE NO. 9999042521 / 9958996685.

NAME CHANGE
It is for general information that I, DINESH KUMAR MITTAL S/o PUSHKAR RAJ MITTAL, R/o BH – 74, East Shalimar Bagh, Shalimar Bagh, North West Delhi, Delhi - 110088 declare that name of mine has been wrongly written as DINESH MITTAL in my minor son namely DHRUV MITTAL, aged 15 year in his School Record. The actual name of mine is DINESH KUMAR MITTAL, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
It is for general information that I SHIVANI SAINI D/O RAJ KUMAR SAINI R/O HOUSE NO-20, GALI NO-9, SUSHANT VIHAR, IBRAHIM PUR, NORTH WEST DELHI, DELHI-110036, declare that name of my father has been wrongly written as RAJ KUMAR in my 10th and 12th class educational documents. The actual name of my father is RAJ KUMAR SAINI which may be amended accordingly.

अमरूद के सरप्लस फलों की नीलामी 19 मई को

गुरुग्राम। जिला बागवानी अधिकारी नेहा यादव ने बताया कि गुरुग्राम स्थित राजकीय बाग एंव नर्सरी में वर्ष 2025-26 के लिए बाग में लगे अमरूद के सरप्लस फलों की नीलामी 19 मई को प्रात॒ 11 बजे राजकीय बाग एंव नर्सरी गुरूग्राम में की जाएगी। विषय वस्तु विशेषज्ञ आई.एच.डी.सी., होडल (पलवल) की अध्यक्षता में आयोजित इस नीलामी में नीलामी की कीमत खुली बोली के आधार पर तय की जाएगी। नीलामी से पहले बाग को देखने के इच्छुक फलों के क्रेता व विक्रेता एंव ठेकेदार किसी भी कार्य दिवस में आकर बाग का निरीक्षण कर सकते है। नेहा यादव ने बताया कि बोली में भाग लेने के लिये इच्छुक बोलीदाता को नर्सरी पर सुबह 9॒30 बजे से पूर्व पहुँचना होगा। उन्होंने बताया कि नीलामी में 5.5 एकड़ में 550 पौधों को शामिल किया गया है। प्रत्येक बोलीदाता को बोली में भाग लेने के लिए दस हजार रूपये की अग्रिम धरोहर राशि जमा करवानी होगी, जोकि सफल बोलीदाता के अतिरिक्त सभी को नीलामी के पश्चात वापिस कर दी जायगी। सफल बोलीदाता द्वारा जमा अग्रिम राशि को नीलामी राशि में समायोजित कर दिया जाएगा। नीलामी प्रक्रिया में उद्यान विभाग के अधिकारियों का फैसला सर्वमान्य होगा। नीलामी के विषय में अधिक जानकारी के लिए डा. पुष्पेन्द्र राजपूत, उद्यान विकास अधिकारी, राजकीय बाग एव नर्सरी, गुरूग्राम के मो0 नं0 9695316165 पर सम्पर्क कर सकते है।

तावडू में राष्ट्रगान जन-गण-मन के रचयिता रवीन्द्रनाथ टैगोर की जयंती श्रद्धा व हर्षोल्लास से मनाई

तावडू। शहर व क्षेत्र में राष्ट्रगान जन-गन-मन के रचयिता रवीन्द्रनाथ टैगोर की जयंती श्रद्धा व हर्षोल्लास से मनाई गई। इस दौरान उनके दिखाए मार्ग पर चलने का आह्वान किया गया। स्वमी विवेकानंद पब्लिक स्कूल के संचालक विनोद गोयल ने कहा कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और भारतीय साहित्य के नोबल पुरस्कार विजेता हैं। उन्हें गुरुदेव के नाम से भी जाना जाता है। बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूंकने वाले युगदृष्टा वे ही थे। वे एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार सम्मानित व्यक्ति हैं। उन्होंने कहा कि रवीन्द्रनाथ का जन्म 7 मई 1861 ईस्वी में बंगाल के उत्तरी कोलकाता में चितपुर रोड पर द्वारकानाथ ठाकुर की गली में देवेन्द्रनाथ ठाकुर के पुत्र के रूप में हुआ था। देवेन्द्रनाथ ठाकुर स्वयं बहुत प्रसिद्ध थे और संतो जैसे आचरण के कारण महर्षि कहलाते थे।

नूंह में डाकघर की बदहाल सेवाओं के चलते उपभोक्ताओं में भारी रोष

नूंह। जिला मुख्यालय नूंह के पुराने डीसी कार्यालय परिसर में स्थित डाकघर की बदहाल सेवाओं के चलते उपभोक्ताओं में भारी रोष है और अब उपभोक्ताओं का इसकी लचर सेवाओं के चलते इससे मोह भंग होने लगा है। पिछले वर्ष एक एजेंट द्वारा उपभोक्ताओं को करोड़ों का चूना लगाने के बाद दर्ज मुकदमा में डाकघर के अधिकारी-कर्मचारी आज तक चर्चा का विषय बने हुए हैं, लेकिन अब पिछले सप्ताह भर से डाकघर की नेटवर्किंग सहित अन्य समस्याएं सामने आने से कामकाज पूरी तरह से ठप हैं और उपभोक्ता आये दिन डाकघर के चक्कर काटकर बैरंग ही लौट रहे हैं। उपभोक्ता संजय कुमार, सुरेन्द्र, अली मोहम्मद, वकील आदि की माने तो स्कूली बच्चों के दाखिला सीजन, एफडी, शुकन्या योजना, लेन- देन, डाक रजिस्ट्री आदि के लिए वह डाकघर पर निर्भर हैं। लेकिन नूंह के पुराने डीसी कार्यालय परिसर में स्थित डाकघर में कामकाज ठप होने से वे परेशान है। उन्होंने बताया कि इस हाईफाई जमाने में भी डाकघर की सेवाएं पुराने ढर्रे पर काम कर रही है। उन्होंने जिला उपायुक्त से इस ओर ध्यान देकर तुरंत समस्या समाधान की फरियाद लगाई है। इस बारे में नूंह के मुख्य डाक घर के एक कर्मचारी ने बताया कि उनके डाकघर में पिछले सप्ताह भर से नेटवर्किंग समस्या के चलते कामकाज नहीं हो पा रहा हैं और इसके बारे में आगे लिख दिया गया हैं।

सडक़ों को लेकर डीसी ने ली अधिकारियों की बैठक

नारनौल। मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार सडक़ों को सुरक्षित और सुगम बनाने के लिए जिला प्रशासन महेंद्रगढ़ लगातार प्रयास कर रहा है। इसी संबंध में आज उपायुक्त डॉ. विवेक भारती ने लघु सचिवालय में जिला के विभिन्न विभागों के अधिकारियों की बैठक ली तथा 15 जून तक सभी सडक़े दुरुस्त करने के निर्देश दिए। डीसी ने कहा कि सरकार के निर्देशानुसार 15 जून तक प्रदेश की सभी सडक़ों को गड्ढा मुक्त किया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को आदेश दिया है कि अगले एक सप्ताह में सडक़ों का स्वयं निरीक्षण कर स्थिति की रिपोर्ट तैयार की जाए। उन्होंने बताया कि सडक़ तैयार होने के बाद संबंधित विभाग की तरफ से सर्टिफिकेट दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि जो सडक़ें अंडर गारंटी हैं, उन्हें निश्चित अवधि में ठेकेदार को दुरुस्त करने के निर्देश दिए जाएं। उन्होंने बताया कि प्रशासन का पूरा प्रयास है कि मानसून से पहले सडक़ों की मरम्मत करवा दी जाए ताकि आमजन को परेशानी ना हो। इस बैठक में नगर परिषद के एक्सईएन सुंदर श्योराण, बीएंडआर विभाग के एसडीओ जितेंद्र के अलावा अन्य विभागों के अधिकारी भी मौजूद थे।

किसानों को 'वर्टिकल बागवानी' की तरफ़ प्रोत्साहित करें कृषि अधिकारी : श्याम सिंह राणा

'हरियाणा राज्य बागवानी विकास एजेंसी' की बैठक की अध्यक्षता की

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि घटती कृषि-जोत को देखते हुए किसानों को 'वर्टिकल बागवानी' की तरफ़ प्रोत्साहित करें , जिससे कम क्षेत्र में अधिक आमदनी हो सकेगी। श्री राणा आज यहां 'एकीकृत बागवानी विकास मिशन' के तहत गठित 'हरियाणा राज्य बागवानी विकास एजेंसी' की जनरल बॉडी की द्वितीय बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण तथा बागवानी विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ राजा शेखर वुंडरू, बागवानी विभाग के महा निदेशक श्री रणबीर सिंह, विभागाध्यक्ष डॉ अर्जुन सैनी के अलावा अन्य अधिकारी तथा एजेंसी के कई सदस्य उपस्थित थे।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में तथा हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश में किसानों की कल्याणकारी सरकार है। मुख्यमंत्री की सोच है कि किसानों की आमदनी डबल हो , इस दिशा में प्रदेश सरकार सक्रियता से काम भी कर रही है।उन्होंने कहा कि कृषि से बेरोजगारी दूर हो सकती है, बशर्ते यह लाभकारी हो। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे इज़रायल और जापान की तर्ज पर किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों से रूबरू करवाएं ताकि कम पानी में और कम रासायनिक खादों से कृषि की बेहतरीन उपज ली जा सके। कृषि मंत्री ने अधिकारियों को आम बजट में बागवानी क्षेत्र के लिए तय किये गए बजट का पूर्ण रूप से सदुपयोग करने की सलाह दी और कहा कि इसके लिए लक्ष्य बना कर कार्य करें और उसको निर्धारित अवधि में पूरा करें। उन्होंने बागवानी के क्षेत्र में वृद्धि करने के निर्देश देते हुए कहा कि किसानों की सब्सिडी यथाशीघ्र उनके बैंक खाते में डीबीटी के माध्यम से स्थानांतरित हो जानी चाहिए।श्री श्याम सिंह राणा को बैठक में अवगत करवाया गया कि राज्य में विभिन्न सब्जी और फलों के करीब 400 क्लस्टर चिन्हित किये गए हैं। जिनमें पैक हाउस के लिए किसनों व किसान समूहों को अनुदान दिया जाएगा । उन्होंने बताया गया कि प्रदेश के दक्षिणी हिस्से में कम पानी में खजूर की खेती करने पर बल दिया जा रहा है। इसके लिए किसानों को लगातार प्रोत्साहित किया जा रहा है। एकीकृत बागवानी विकास योजना के अंतर्गत कवर की जा रही खजूर की खेती के लिए 1.60 लाख रूपये प्रति हेक्टेयर का अनुदान दिया जा रहा है।

भाखड़ा का पूरा पानी नहीं मिला तो पंजाब के सारे रास्ते रोकेंगे : रामपाल माजरा

हरियाणा में जल संकट है और नायब सरकार ने अब तक कोई कठोर कदम नहीं उठाया है॒ आदित्य देवीलाल

एजेंसी

चंडीगढ़। लगातार तीसरे दिन पंजाब द्वारा भाखड़ा के पानी का पूरा हिस्सा न देने और गैरकानूनी ढंग से बीबीएमबी पर ताला जड़ने के विरोध में इनेलो पार्टी ने सड़कों पर उतर कर जोरदार धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान इनेलो के कार्यकर्ताओं ने अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए मटके फोड़े और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के पुतले जलाए। खास बात यह भी रही कि सभी जिलों में महिलाएं भारी तादाद में मौजूद रही। गुरुग्राम जोन के 7 जिलों रोहतक में प्रदेशाध्यक्ष रामपाल माजरा, सोनीपत में प्रधान महासचिव प्रकाश भारती, गुरूग्राम में विधायक अदित्य देवीलाल, झज्जर में महिला प्रदेश प्रभारी सुनैना चौटाला, मेवात में पूर्व विधायक रणबीर मंदोला, रेवाड़ी में डॉ राजपाल यादव और पलवल में महेंद्र चौहान की अगुवाई में प्रदर्शन किया और सभी उपायुक्तों को प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपे। इनेलो के प्रदेश अध्यक्ष रामपाल माजरा ने

अपने संबोधन में कहा कि दिल्ली, हरियाणा और पंजाब से आप पार्टी का जनाधार पूरी तरह से खत्म चुका है। आप पार्टी के नेताओं की बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है जिसके कारण हरियाणा को पानी न देने जैसी घटिया और गिरी हुई हरकत की है। भाखड़ा का पानी न मिलने से हरियाणा के हजारों गांवों में पानी के लिए हाहाकार मच गया है। इनेलो पार्टी केंद्र सरकार से मांग करती है कि पंजाब में तुरंत राष्ट्रपति शासन लागू किया जाए। बीबीएमबी के फैसले के अनुसार हरियाणा को उसके हक का पानी दिया जाए ताकि प्रदेश में सिंचाई व पेयजल के लिए पानी की कमी न रहे। माजरा ने कहा कि अगर जल्दी ही भाखड़ा का पूरा पानी नहीं मिला तो पंजाब के सारे रास्ते रोकेंगे। इनेलो के प्रधान महासचिव प्रकाश भारती ने कहा कि आप पार्टी नकारात्मक सोच की पार्टी है।

लोगों को प्यासा मार कर राजनीतिक रोटियां सेंकने वाली ओछी राजनीति ने ही आप पार्टी का अंत किया है इनेलो विधायक आदित्य देवीलाल चौटाला ने कहा कि हरियाणा में भाखड़ा का पानी न मिलने में आप पार्टी के साथ साथ भाजपा सरकार भी पूर्ण रूप से जिम्मेदार है। हरियाणा में जल संकट है और मुख्यमंत्री ने आज तक कोई ऐसा कठोर कदम नहीं उठाया है जिससे कि पंजाब सरकार पूरा पानी देने को मजबूर हो जाए। पानी के मूल मुद्दे पर नायब सैनी सरकार ने पंजाब के समक्ष घुटने टेक दिए हैं।

राष्ट्रीय राजमार्गों के दोनों किनारों पर पेड़ पौधे लगने से पर्यावरण को मिलेगा बढ़ावा - अनिल विज

152-डी, जम्मू-कटरा एक्सप्रेसवे, पानीपत-रोहतक, अम्बाला-हिसार, पंचकूला-यमुनानगर आदि राष्ट्रीय राजमार्गों के बनने से आमजन को मिली बड़ी सुविधा- विज

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री श्री अनिल विज ने आज केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी का हरियाणा में विभिन्न राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण के लिए धन्यवाद करते हुए अनुरोध किया है कि राष्ट्रीय राजमार्गों के सौंदर्यकरण हेतु इनके किनारों पर पेड़-पौधे लगवाए जाएं जिससे पर्यावरण को बढ़ावा मिलेगा। इस संबंध में श्री विज ने केंद्रीय सड़क, परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी को अपनी ओर से एक अनुरोध पत्र भी भेजा है जिसमें राष्ट्रीय राजमार्ग के दोनों किनारो पर पेड़ पौधे लगाने का अनुरोध किया गया है। पत्र में श्री विज ने अनुरोध करते हुए बताया है कि राष्ट्रीय राजमार्गों के दोनों ओर पेड़ पौधे लगाने से राष्ट्रीय राजमार्गों की सुन्दरता भी बढ़ेगी। उन्होंने पत्र में बताया है कि केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी के मार्गदर्शन एवं भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अथक प्रयासों के चलते पिछले कुछ वर्षो में हरियाणा प्रदेश में कई राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण किया गया है, जिसमें प्रमुख रूप से 152-डी, जम्मू-कटरा एक्सप्रेसवे, पानीपत-रोहतक, अम्बाला-हिसार, पंचकूला-यमुनानगर आदि शामिल है। इन सभी राष्ट्रीय राजमार्गों के बनने से आमजन को बड़ी सुविधा मुहैया हुई है।

पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों पर सेना द्वारा की गई एयर स्ट्राइक से देशवासी खुश

गुरुग्राम। भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों पर की गई एयर स्ट्राइक से पूरे देश में खुशी का माहौल है। बीती रात भारतीय सेना द्वारा की गई स्ट्राइक पर हरियाणा आबकारी एवं कराधान कर्मचारी एसोसिएशन के राज्य प्रवक्ता लोकेश आहूजा व उनके सहयोगी समीर सांगवान ने कहा कि भारत आतंकवाद को जड़ से खत्म करने के लिए तैयार है। आतंकवादियों के एक-एक ठिकानों को तबाह करके पीएम मोदी ने अपने वादे को पूरा किया है। हमारी सेना ने आतंकवाद को मुंहतोड़ जवाब दिया है। मोदी सरकार ने जनता से किए अपने वादे को पूरा किया है। समीर सांगवान ने कहा कि वह शहीदों के दर्द को भली-भांति समझते हैं। क्योंकि उनके पिता सत्यवीर सांगवान थल सेना में कार्यरत थे। 22 मार्च 1986 को ऑपरेशन मेघदूत में शहीद हो गए थे। वहीं दूसरी ओर भाजपा के जिला अध्यक्ष सर्वप्रिय त्यागी ने कहा कि मोदी सरकार जो कहती है वह डंके की चोट पर करके दिखाती है। भारत की सेना द्वारा किए गए ऑपरेशन सिंदूर पर प्रतिक्रिया देते हुए जिला अध्यक्ष त्यागी ने कहा कि हमें अपनी सेनाओं पर गर्व है। श्री त्यागी ने कहा कि हमारी सेना ने पाकिस्तान में मौजूद 9 आतंकी ठिकानों को मटियामेट करके बता दिया कि यह मोदी का सशक्त और मजबूत भारत है। भारतीय सेना द्वारा चलाया गया ऑपरेशन सिंदूर पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि व उनके परिजनों के साथ न्याय है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार दहशतगर्दों से ठीक तरह से निपट रही है। भारत ने दुनिया को दिखा दिया कि हम आतंकवाद के मुद्दे पर जीरो टॉलरेन्स नीति पर चल रहे हैं।

वीर सैनिकों की कार्रवाई भारत की संप्रभुता और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल - कुमारी सैलजा

सांसद कुमारी सैलजा ने भारतीय सेना के पराक्रम को नमन करते हुए कहा- सशस्त्र बलों पर गर्व है

एजेंसी

चंडीगढ़। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सेना के पराक्रम की सराहना करते हुए कहा कि हमें अपने सशस्त्र बलों पर गर्व है, ये हमला भारतीय सेना ने पहलगाम आतंकी हमले के बदले के रूप में लिया है। हमारा देश आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। आतंकवाद चाहे देश में पनपे या सीमा पार से भेजा जा उसका निर्मूलन राष्ट्रीय हित में आवश्यक और अनिवार्य है। इस लड़ाई में कोई समझौता नहीं हो सकता। मीडिया को जारी बयान में सांसद कुमारी सैलजा ने भारतीय

सेना के पराक्रम को नमन करते हुए कहा कि हर देशवासी को अपनी सेना पर गर्व है। पहलगाम हमले के बाद ही कांग्रेस ने स्पष्ट कह दिया था कि देश की सुरक्षा से जुड़े हर निर्णायक कदम में हम सरकार और हमारी सेना के साथ मजबूती से खड़े हैं। हमारे वीर सैनिकों की यह कार्रवाई भारत की संप्रभुता और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। यह समय राजनीति से ऊपर उठने और राष्ट्रीय एकता का है। हम एकजुट है देश के साथ, सेना के साथ। कुमारी सैलजा ने देशवासियों से अपील करते हुए कहा है कि इस कठिन समय में एकता और संयम बनाए रखें।

कुमारी सैलजा ने कहा है कि जिस तरह से भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर चलाकर आतंकवाद को खत्म करने का संकल्प लिया है, उसे अंजाम तक पहुंचाना है हमें उम्मीद है कि भारत आगे भी बड़ी कार्रवाई करेगा और आतंकियों का खात्मा करेगा।

कुमारी सांसद ने कहा कि पाकिस्तान और पीओके से पैदा होने वाले आतंकवाद के हर स्वरूप के लिए भारत की एक दृढ़ राष्ट्रीय नीति है। भारत की यह अडिग नीति होनी चाहिए कि पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में आतंकवाद के सभी स्रोतों का पूरी तरह से सफाया किया जाए और यह नीति हमेशा सर्वोच्च राष्ट्रीय हित से प्रेरित होनी चाहिए. फिर कभी दूसरा पहलगाम न हो।

साहित्य, लेखन, भाषा व संगीतकला के क्षेत्र को उभारने में रविन्द्र नाथ टैगोर का अभूतपूर्व योगदान - रामपाल सैनी

एजेंसी

करनाल। डीएवी पीजी कॉलेज में अंग्रेजी विभाग के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध भारतीय कवि, लेखक, नाटककार, संगीतकार, दार्शनिक और चित्रकार रविंद्र नाथ टैगोर के जन्म दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य प्रोफेसर रामपाल सैनी, अंग्रेजी विभाग की अध्यक्षा डॉ सीमा शर्मा एवं अंग्रेजी विभाग के अन्य स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों ने उनके चित्र के समक्ष श्रद्धा सुमन अर्पित कर उन्हें याद किया। रविन्द्र नाथ टैगोर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए प्राचार्य प्रोफेसर रामपाल सैनी ने कहा कि वह भारत के एक समाज सुधारक थे, उन्होंने बाल विवाह, दहेज प्रथा और जातिवाद जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने संगीत, कला के क्षेत्र को उभारने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी रचनाएं भारतीय संस्कृति, समाज, और मानवीय मूल्यों पर आधारित प्रेरणादायक है। वह बंगाली साहित्य के सबसे महान लेखकों में से एक थे और भारतीय सांस्कृतिक चेतना को नया रूप देने वाले एक युगदृष्टा भी रहे। साहित्य के अलावा चित्रकला और संगीत के क्षेत्र में भी महारत

रखने वाले टैगोर की गीतांजलि, चोखेर बाली, गोरा, घरे बाइरे, काबुलीवाला और चार अध्याय समेत ढेरों बेहद चर्चित रचनाएं हैं, गीतांजलि उनकी वह महान काव्य-कृति है, जिसने कवि रवींद्रनाथ टैगोर को वर्ष 1913 में एशिया के पहले नोबेल पुरस्कार प्राप्त व्यक्ति होने का सम्मान दिलाया। प्राचार्य ने कहा कि हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ते हुए उनकी रचनाओं का स्मरण करते रहना चाहिए। अंग्रेजी विभाग की अध्यक्षा डॉ सीमा शर्मा ने कहा कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर बहुआयामी प्रतिभा के शख्सियत थे। उन्होंने कई भाषाओं का अध्ययन किया और वह बंगाली, अंग्रेजी और संस्कृत में कुशल थे। उन्होंने शांतिनिकेतन में विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की, जो एक अंतरराष्ट्रीय शिक्षा केंद्र था। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने उनकी रचनाओं, कृतियों से संबंधित पेपर रीडिंग प्रतियोगिता में भाग लिया। जिसमें एमए प्रथम वर्ष की दिपिका ने प्रथम, बीकॉम प्रथम वर्ष के प्रिंस ने द्वितीय एवं बीए द्वितीय वर्ष के आर्यन ने तीसरा स्थान हासिल किया।

शांतिनिकेतन में विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की, जो एक अंतरराष्ट्रीय शिक्षा केंद्र था। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने उनकी रचनाओं, कृतियों से संबंधित पेपर रीडिंग प्रतियोगिता में भाग लिया।

सांत्वना पुरस्कार आर्यन शर्मा और सोनम को मिला। इस मौके पर अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापक डॉ पूनम वर्मा, डॉ ममता, डॉ अमोल रत्न मारवाह, डॉ सुरभि, डॉ राधिका, सहित अन्य स्टाफ सदस्य एवं विद्यार्थी मौजूद थे।

पदभार संभालते ही एक्शन मॉड में आए निगमायुक्त प्रदीप दहिया

एजेंसी

गुरुग्राम। नव नियुक्त निगमायुक्त प्रदीप दहिया ने पदभार संभालते ही कामकाज की रफ्तार तेज कर दी है। पहले ही दिन उन्होंने निगम कार्यालय में जीएमडीए व निगम अधिकारियों के साथ बैठक की और ठोस कचरा प्रबंधन व मानसून से पूर्व की जा रही तैयारियों की विस्तार से जानकारी ली। निगमायुक्त ने कहा कि जनसमस्याओं का समाधान निगम की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए और इसके लिए सभी अधिकारी समन्वय से कार्य करें। बैठक के दौरान शहर में डोर टू डोर कचरा कलेक्शन को और प्रभावी बनाने, लिगेसी वेस्ट (पुराना कचरा) के निस्तारण की प्रक्रिया में तेजी लाने तथा सफाई व्यवस्था को और अधिक बेहतर करने के निर्देश निगमायुक्त द्वारा दिए गए। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि मानसून से पूर्व नालों की सफाई, जलभराव वाले क्षेत्रों की पहचान और आवश्यक उपाय समय रहते पूरे किए जाएं। इसके साथ ही सभी अधिकारी मैदानी स्तर पर सक्रिय रहकर कार्यो की निगरानी करें। उन्होंने कहा कि समय परिणाम दिखाने का है, पारदर्शिता और कार्य के प्रति प्रतिबद्धता ही प्राथमिकता होगी। बैठक में जीएमडीए अधिकारियों ने निगमायुक्त को मास्टर ड्रेनेज तथा जलभराव के मुख्य स्थलों के बारे में जानकारी दी तथा वहां पर किए जा रहे उपायों के बारे में बताया। अधिकारियों ने बताया कि गुरुग्राम में मुख्यत॒ तीन मास्टर ड्रेन हैं, जिन्हें लैग-1, 2 व 3 कहा जाता है। ये तीनों आगे जाकर नजफगढ़ ड्रेन में मिलती हैं। उन्होंने बताया कि अरावली में पानी को रोकने व हारवैस्ट करने के लिए चेक-डैम तथा क्रीक्स बनाए हुए हैं। नरसिंहपुर प्वाइंट के बारे में बताया गया कि बरसात के दौरान पंपों के माध्यम से पानी को बादशाहपुर ड्रेन में डाला जाता है। निगमायुक्त ने

अधिकारियों से कहा कि वे अपनी पूरी क्षमता के साथ कार्य करें तथा जल निकासी के पुख्ता प्रबंध सुनिश्चित किए जाएं, ताकि मानसून के दौरान किसी भी प्रकार की परेशानी ना होने पाए। उन्होंने निगम अधिकारियों से भी कहा कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में ड्रेनेज व सीवरेज की सफाई मानसून से पूर्व पूरी कर लें तथा पर्याप्त संख्या में मैनपावर व मशीनरी तैयार रखें।

सीआईए महेंद्रगढ़ की टीम ने अवैध हथियार के साथ एक को पकड़ा

नारनौल। पुलिस अधीक्षक ने सभी थाना प्रबंधकों, चौकी इंचार्जो को अवैध हथियार रखने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। जिनके तहत कार्रवाई करते हुए सीआईए महेंद्रगढ़ की पुलिस टीम ने थाना सदर नारनौल क्षेत्र से अवैध हथियार रखने के मामले में गुप्त सूचना के आधार पर एक आरोपी वीर सिंह वासी सागरपुर अटेली को अवैध हथियार के साथ गिरफ्तार किया है, आरोपी से पुलिस ने एक अवैध देसी पिस्टल, दो मैगजिन और एक जिंदा कारतूस बरामद किया है। आरोपी के खिलाफ थाना सदर नारनौल में आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया। आरोपी को आज न्यायालय में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।सीआईए महेंद्रगढ़ की टीम गश्त के दौरान नीरपुर बस स्टैंड पर मौजूद थी, टीम को गुप्त सूचना मिली कि वीर सिंह निवासी सागरपुर अटेली अवैध हथियार रखता है और आरपीएस स्कूल के पास पेट्रोल पंप के पास से पैदल नारनौल की तरफ जा रहा है। अगर तुरंत रेड की जाए तो अवैध हथियार सहित काबू आ सकता है।

नवनियुक्त जजपा जिला अध्यक्ष राजकुमार का पार्टी कार्यालय में किया स्वागत

एजेंसी

नारनौल। जननायक जनता पार्टी ने हरियाणा में जिला वार जिला अध्यक्ष की नियुक्ति की है। महेंद्रगढ़ जिला से यह कमान महेंद्रगढ़ क्षेत्र के गांव खातोद वासी राजकुमार खातोद को सौंपी है। इस नियुक्ति के बाद नवनियुक्त जिला अध्यक्ष नारनौल में पार्टी के जिला कार्यालय में बुधवार पहुंचे। यहां उनका पार्टी कार्यकर्ताओं ने फूल मालाओं से स्वागत किया। इसके बाद जिला अध्यक्ष निजामपुर पहुंचे और वहां स्व. ताऊ देवीलाल की मूर्ति पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष राजकुमार खातोद ने कहा कि जजपा पार्टी गरीब, कमेरा, किसान व युवाओं की पार्टी है। हर सुख दुख में सभी को साथ लेकर चलने वाले पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अजय सिंह चौटाला छोटे से छोटे कार्यकर्ताओं को सिर माथे पर बैठाते है। इसी सोच से आज मेरे जैसे छोटे से कार्यकर्ता को जिला अध्यक्ष की कार्य सौंपा है। उनका प्रयास रहेगा कि वह आम कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी के लिए रात दिन काम करें और शिखर तक पहुंचाएं। यह काम तभी संभव होगा, जब आप सभी पार्टी कार्यकर्ता कंधे से कंधा मिलाकर साथ चलेंगे। उन्होंने कहा कि भविष्य में वह गांव गांव से युवाओं को जोडऩे का कार्य करेंगे। इसके लिए आगामी रणनीति बनाई जाएगी। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में घुसकर आज जो भारतीय सेना ने आतंकियों के ठिकानों को ध्वस्त किया है,

NAME CHANGE
I, VIKRANT S/O RAJENDER R/O H.NO. 1160/30, MAIN GALI, GARHI BRAHMANAN, SONIPAT, HARYANA-131001, have changed my name and shall hereafter be known as VIKRANT SINGH.

देश में मार्च 2025 तक फोनधारकों की संख्या 120 करोड़

नयी दिल्ली। देश में मार्च 2025 तक कुल फोनधारकों की संख्या 120 करोड़ थी जिसमें से वायरलेस फोन धारकों की संख्या 116.37 करोड़ और वायरलाइन धारकों की संख्या 3.70 करोड़ थी। भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (ट्राई) द्वारा आज यहां जारी मासिक आंकड़ों के अनुसार मार्च 2025 में वायरलेस ब्राडबैंड धारकों की संख्या 90.27 करोड़ और वायरलाइन ब्राडबैंड धारकों की संख्या 4.13 करोड़ थी। कुल ब्राडबैंड धारकों की संख्या 94.41 करोड़ थी। मार्च 2025 में शुद्ध ग्राहकों की संख्या में 33.5 लाख बढ़ी जिसमें वायरलेस ग्राहकों की संख्या 32.1 लाख और वायरलाइन ग्राहकों की संख्या 1.3 लाख बढ़ी है। अब शहरी क्षेत्रों में टेलीफोन धारकों की संख्या में कमी आने लगी है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में इसमें वृद्धि हो रही है।

नौकरियों के आवेदन में पहली तिमाही में 30फीसदी की आई तेजी, 62 लाख महिलाओं ने भरे फॉर्म

नई दिल्ली। फ्रेशर्स व महिलाओं को नौकरियों की सबसे ज्यादा जरूरत है। एक रिपोर्ट के अनुसार, मार्च तिमाही में कंपनियों के पास 1.81 करोड़ नौकरी के आवेदन आए हैं जो एक साल पहले की तुलना में 30 फीसदी अधिक है। सबसे अधिक 62 लाख आवेदन महिलाओं ने दिए हैं जो पिछले साल की तुलना में 23 फीसदी अधिक है। अपना की रिपोर्ट के अनुसार, महिलाओं के आवेदन में यह वृद्धि बीपीओ, फाइनेंस, मानव संसाधन और शिक्षा जैसे क्षेत्र

में बेहतर कार्य विकल्प के कारण हुई है। चंडीगढ़, इंदौर और जमशेदपुर जैसे शहरों में महिलाओं के आवेदन दोगुने से अधिक हो गए। यह प्रमुख महानगरों की वृद्धि दर से अधिक है। फ्रेशर्स की ओर से भी 66 लाख आवेदन आए हैं जो पिछले साल की तुलना में 46 फीसदी अधिक है। जनवरी-मार्च में 3.1 लाख नौकरियां पोस्ट की गईं। पिछले वर्ष की तुलना में 26 प्रतिशत ज्यादा है। एलआईसी, पेटीएम, और फ्लिपकार्ट जैसी कंपनियों ने 2.1 लाख नौकरियां पोस्ट की। वारंगल, जबलपुर व प्रयागराज जैसे छोटे शहरों से प्रतिभाओं में 20 से 50 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। दिल्ली से लेकर देहरादून तक भारत के भर्ती परिदृश्य को एक नया रूप दिया जा रहा है।

सब्जियों के भाव घटने से घर में पकाई जाने वाली शाकाहारी थाली 4फीसदी सस्ती

नई दिल्ली। सब्जियों की कीमतों में भारी गिरावट से घर में पकाई जाने वाली शाकाहारी थाली सालाना आधार पर अप्रैल में चार फीसदी सस्ती होकर 26.3 रुपये पर आ गई है। मासिक आधार पर इसमें एक फीसदी की कमी आई है। रेटिंग एजेंसी क्रिसिल की बुधवार को जारी रिपोर्ट के अनुसार, एक साल में टमाटर की कीमतें 34 फीसदी घट गई हैं। आलू के भाव 11 फीसदी और प्याज के भाव 6 फीसदी घटे हैं। हालांकि, खाद्य तेलों के दाम में 19 फीसदी और एलपीजी

सिलेंडर की कीमत में छह फीसदी की तेजी ने थाली की कीमतों में और गिरावट को रोक दिया। रिपोर्ट के अनुसार, मांसाहारी थाली सालाना आधार पर चार फीसदी और मासिक आधार पर दो फीसदी सस्ती होकर 53.9 रुपये पर आ गई है। चिकन और सब्जियों की कीमतों में गिरावट का असर मांसाहारी थाली पर दिखा है। मांसाहारी थाली में 50 फीसदी लागत अकेले चिकन की होती है। जबकि प्याज भी लागत में बहुत योगदान करती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि खाद्य तेलों की कीमतें अगले दो से तीन महीने में कम होने लगेंगी।

भारत में सैटेलाइट इंटरनेट लाने की तैयारी में 'स्टारलिंक' को मिली मंजूरी, मिलेगी तेज इंटरनेट सेवा

नई दिल्ली। भारत सरकार ने अमेरिकी अरबपति एलन मस्क की कंपनी स्टारलिंक को देश में सैटेलाइट इंटरनेट सेवा शुरू करने के लिए हरी झंडी दिखा दी है। सरकारी सूत्रों के अनुसार, दूरसंचार विभाग (डीओटी) ने स्टारलिंक को 'लेटर ऑफ इंटेंट' (एलओआई) जारी कर दिया है। इसका मतलब है कि कंपनी अब भारत में अपनी सेवाएं शुरू करने के लिए अगला कदम उठा सकती है। स्टारलिंक से पहले भारत में सैटेलाइट इंटरनेट सेवा के लिए यूटेलसैट वनवेब और जियो सैटेलाइट कम्युनिकेशंस को लाइसेंस मिल चुका है। अब स्टारलिंक के जुड़ने से प्रतिस्पर्धा और विकल्प दोनों बढ़ेंगे। क्या है स्टारलिंक और कैसे काम करता है? स्टारलिंक, अमेरिकी कंपनी स्पेसएक्स का प्रोजेक्ट है, जिसे 2002 में दुनिया के सबसे अमीर आदमी एलन मस्क ने शुरू किया था।

ग्रीनलाइन ने श्रीराम फाइनेंस की साझेदारी में ग्रीन लॉजिस्टिक्स को दी रफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के लॉजिस्टिक्स क्षेत्र को हरित और टिकाऊ बनाने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए एस्सार की सहायक कंपनी ग्रीनलाइन मोबिलिटी सॉल्यूशंस लिमिटेड ने श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड के सहयोग से एलएनजी-पावर्ड ट्रकों के एक नए बेड़े को हरी झंडी दिखाई। कंपनी ने यहां बयान जारी कर बताया कि यह आयोजन पुणे के चाकन में आयोजित हुआ, जहां ग्रीनलाइन ने अपने ग्रीन मोबिलिटी मिशन के अगले चरण की शुरुआत की। ग्रीनलाइन पहले ही 650 से अधिक एलएनजी ट्रकों के साथ संचालन कर रही है। इसका बेड़ा अब तक चार करोड़ किलोमीटर से अधिक दूरी तय कर चुका है और 10 हजार टन से अधिक कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन की कटौती में सफल रहा है। इस प्रयास को अब श्रीराम फाइनेंस जैसे मजबूत वित्तीय साझेदार का सहयोग प्राप्त हो गया है, जिससे ग्रीन मोबिलिटी को स्केलेबल और सुलभ

बनाने की दिशा में नई गति मिलेगी। ग्रीनलाइन की योजना 10 हजार से अधिक एलएनजी और इलेक्ट्रिक व्हीकल (ईवी) ट्रकों की तैनाती की है, जिसे देशभर में 100 से अधिक एलएनजी स्टेशन, ईवी चार्जिंग और बैटरी स्वैपिंग केंद्रों का नेटवर्क समर्थन देगा। इस पहल से सालाना 10 लाख टन तक कार्बन उत्सर्जन में कटौती का लक्ष्य रखा गया है, जो केंद्र सरकार के ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम करने के लक्ष्यों से मेल खाता है। ग्रीनलाइन मोबिलिटी सॉल्यूशंस लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) आनंद मिमानी ने कहा, ÷श्रीराम फाइनेंस के साथ यह साझेदारी टिकाऊ लॉजिस्टिक्स समाधानों के बड़े विस्तार की दिशा में एक मजबूत कदम है। ब्लू एनर्जी मोटर्स द्वारा निर्मित हमारे ट्रक परिचालन दक्षता और हरित भविष्य के लिए हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। कंपनी की मुख्य वित्तीय अधिकारी (सीएफओ) शारवरी प्रभु ने कहा, जैसे-जैसे हम अपने ग्रीन फ्लीट का विस्तार करते हैं, वित्तीय सहयोग की भूमिका बेहद अहम होती जा रही है। श्रीराम फाइनेंस का समर्थन हमें पारंपरिक ट्रकिंग के हरित विकल्प देने में सक्षम बनाता है। श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड के संयुक्त प्रबंध निदेशक जी.एम. जिलानी ने कहा, हम इस पहल का हिस्सा बनकर गर्व महसूस करते हैं। यह साझेदारी हमारी जिम्मेदार वित्तीय सेवाओं और पर्यावरणीय प्रतिबद्धताओं को साकार करने की दिशा में एक मील का पत्थर है। यह हमारा पहला बड़ा निवेश है जो इलेक्ट्रिक मोबिलिटी से आगे बढ़कर क्लीन फ्यूल टेक्नोलॉजी में ग्रीन फाइनेंसिंग का विस्तार दर्शाता है।

नागराजू ने की साधारण बीमा कंपनियों के साथ बैठक

एजेंसी

नयी दिल्ली। वित्तीय सेवा मामलों के सचिव एम नागराजू ने निजी क्षेत्र की सभी साधारण बीमा कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों के साथ नवीनतम पहलों, सामने आई प्रमुख चुनौतियों और उद्योग के लिए आगे के रास्ते के मुद्दों पर विचार-विमर्श किया वित्त मंत्रालय ने 'एक्स' पर यह जानकारी देते हुए कहा कि श्री नागराजू ने बैठक की अध्यक्षता की। इस दौरान उन्होंने गैर-जीवन बीमा उत्पादों की सामर्थ्य और पहुंच बढ़ाने, दावों और ग्राहक शिकायतों का समय पर समाधान करने और देश में बीमा पैठ बढ़ाने के लिए हितधारकों के बीच सहयोग बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया।

तीन फीसदी से नीचे आ सकती है खुदरा महंगाई, खाद्य कीमतों में गिरावट बेहतर प्रबंधन का नतीजा

एजेंसी

नई दिल्ली। ऊंची ब्याज दरों से राहत मिलने के बाद अब आम लोगों को महंगाई से भी राहत मिल सकती है। बैंक ऑफ बड़ौदा की रिपोर्ट के अनुसार, अप्रैल के आंकड़ों में खुदरा महंगाई की दर तीन फीसदी से नीचे जा सकती है। इसके आंकड़े अगले हफ्ते जारी होंगे। पिछले कुछ समय से खाद्य वस्तुओं खासकर दालों और सब्जियों के भाव में भारी गिरावट आई है जिसका असर खुदरा महंगाई पर दिखेगा। रिपोर्ट के अनुसार, खुदरा महंगाई में कमी से आरबीआई को दरों में कटौती का और अवसर मिलेगा। जून में होने वाली बैठक में रेपो दर में ज्यादा कटौती हो सकती है। टमाटर, प्याज और आलू उत्पादक राज्यों में गर्मी में कमी आई है। टमाटर की खुदरा कीमत अगस्त, 2024 के बाद से सबसे कम हो गई है। यह अप्रैल, 2025 में सालाना आधार पर 34.4त्न कम हो गई है। आलू और प्याज की कीमतें अप्रैल, 2025 में सालाना आधार पर क्रमशः 11त्न और 5.7त्न घटी हैं।

चावल की खुदरा कीमत 4.1फीसदी घटी

चावल की खुदरा कीमत मार्च की तुलना में अप्रैल में 4.1फीसदी की घटी है। हालांकि, खाद्य तेलों की

कीमतों में तेजी आई हैं, पर यह खुदरा महंगाई को प्रभावित करने की स्थिति में नहीं हैं। टमाटर, प्याज और आलू की आवक में जबरदस्त से कीमतों में गिरावट है।

खाद्य कीमतों में गिरावट बेहतर प्रबंधन का नतीजा

उपभोक्ता मामलों के विभाग की सचिव निधि खरे ने कहा कि खाद्य कीमतों में जो गिरावट आ रही है वह सरकार के बेहतर प्रबंधन का नतीजा है। पिछले साल अलनीनो और भारी गर्मी की वजह से फसलों के उत्पादन और आवक पर असर पड़ा था। इससे महंगाई बढ़ी थी। हालांकि, पीली मटर और चना का आयात करना पड़ा जिससे उपलब्धता बढ़ गई। प्याज और दाल की कीमतों को कम करने के लिए सरकार ने सस्ते भाव पर ग्राहकों को बेचा। अब गर्मी सही है, बारिश का अनुमान अच्छा है तो दालों की पैदावार के साथ सब्जियों की भी कीमतें नियंत्रण में रहने की उम्मीद है।

'भारत के जलवायु वित्त वर्गीकरण' के प्रारूप ढांचे पर सुझाव आमंत्रित

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारत के जलवायु वित्त वर्गीकरण को विकसित करने के लिए आम बजट 2024-25 की घोषणा के अनुरूप में वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग ने प्रारूप ढांचे पर विशेषज्ञ/जनता की 25 जून 2025 तक टिप्पणियाँ आमंत्रित की हैं। वित्त मंत्रालय ने आज यहां जारी बयान में कहा कि वित्त मंत्री ने आम बजट 2025-26 में घोषणा की थी हम जलवायु अनुकूलन और शमन के लिए पूंजी की उपलब्धता बढ़ाने के लिए जलवायु वित्त के लिए एक वर्गीकरण विकसित करेंगे। यह देश की जलवायु प्रतिबद्धताओं और हरित संक्रमण की प्राप्ति में सहायता करेगा। इस घोषणा के अनुसरण में जलवायु वित्त वर्गीकरण का एक प्रारूप ढांचा विकसित किया गया है। यह ढांचा दृष्टिकोण, उद्देश्यों और सिद्धांतों को रेखांकित करता है जो वर्गीकरण का मार्गदर्शन करेंगे। यह भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं में योगदान देने वाली गतिविधियों, परियोजनाओं और उपायों को वर्गीकृत करने की कार्यप्रणाली का भी विवरण देता है, साथ ही 2047 तक विकसित भारत भारत के जलवायु वित्त वर्गीकरण का उद्देश्य जलवायु-अनुकूल प्रौद्योगिकियों और गतिविधियों के लिए अधिक संसाधन प्रवाह को सुविधाजनक बनाना है, जिससे देश

को प्राप्त करने से जुड़े लक्ष्यों को भी ध्यान में रखता है। मसौदा ढांचा क्षेत्रीय अनुलग्नकों को विकसित करने का आधार होगा। क्षेत्रीय अनुलग्नक जलवायु-समर्थक माने जाने वाले उपायों, गतिविधियों और परियोजनाओं और संक्रमण को बढ़ावा देने के लिए पहचाने जाने वाले उपायों की रूपरेखा तैयार करेंगे। 2070 तक नेट ज़ीरो होने के लक्ष्य को प्राप्त कर सके और साथ ही विश्वसनीय और सस्ती ऊर्जा तक दीर्घकालिक पहुँच सुनिश्चित कर सके। जलवायु वित्त वर्गीकरण देश के जलवायु कार्रवाई लक्ष्यों और संक्रमण मार्ग के अनुरूप गतिविधियों की पहचान करने के लिए एक उपकरण के रूप में काम करेगा।

2.23 लाख करोड़ के आईपीओ कतार में, 74 कंपनियां मंजूरी के इंतजार में, फिर से कंपनियों को करना होगा आवेदन

एजेंसी

मुंबई। अमेरिकी टैरिफ और देशों के बीच तनाव बढ़ने से भारतीय आईपीओ बाजार करीब छह माह से सुस्त पड़ा हुआ है। अब कंपनियां बाजार में उतरने के लिए स्थितियां सही होने का इंतजार कर रही हैं। कुल 2.23 लाख करोड़ रुपये के आईपीओ कतार में हैं। इनमें से 1.04 लाख करोड़ रुपये के इश्यू को सेबी की मंजूरी मिल चुकी है। 1.19 लाख करोड़ रुपये के लिए कंपनियों ने मसौदा जमा कराया है। प्राइम डाटाबेस के आंकड़ों के मुताबिक, 63 कंपनियों को पूंजी बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड यानी सेबी से मंजूरी मिल चुकी है। 74 कंपनियां अब भी सेबी से मंजूरी के इंतजार में हैं। यह सभी कंपनियां शेयर बाजार में उतर जाती हैं तो 2.23 लाख करोड़ रुपये जुटा लेंगी। इससे बड़ा फायदा यह होगा कि हमारे शेयर बाजार का पूंजीकरण बढ़ेगा। निवेशकों को

अलग-अलग सेक्टर की कंपनियों में निवेश का मौका मिलेगा। प्राइम डेटाबेस के अनुसार, भारत पिछले साल दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा आईपीओ बाजार था। इस साल अब तक स्टॉक एक्सचेंजों पर सूचीबद्ध आईपीओ में 58 प्रतिशत की गिरावट आई है।

फिर से कंपनियों को करना होगा आवेदनः विश्लेषकों के मुताबिक, जिन कंपनियों को आईपीओ लाने के लिए सेबी की मंजूरी मिल चुकी है और अगर वे अगले कुछ महीनों में बाजार में नहीं आती हैं तो मंजूरी खत्म हो जाएगी। ऐसे में उनको नए सिरे से आवेदन करना होगा। वैश्विक अनिश्चितता को देखते हुए इस समय केवल चुनिंदा संस्थागत निवेशक ही निवेश को तैयार हैं। यह रुझान इस बात का संकेत है कि वैश्विक व्यापार युद्ध और देशों के बीच तनावों ने आर्थिक दृष्टिकोण को धुंधला कर दिया है। दो अप्रैल से निफ्टी-50 में 4.8 फीसदी की तेजी आई है। हालांकि, सितंबर के अंत में रिकॉर्ड ऊंचाई से अभी भी 7 फीसदी नीचे है।

दुनिया में भारतीय आईपीओ बाजार सबसे बेहतर

भारतीय आईपीओ बाजार हाल के समय में दुनिया में बेहतर रहा है। खासकर कोरोना के बाद नए निवेशकों ने अच्छा खासा पैसा लगाया है। 2025 के अब तक के चार महीने में भले ही इश्यू लाने की रफ्तार कम हो गई हो, पर इससे पहले हर साल कंपनियां सूचीबद्धता में तेजी दिखाई हैं।

किशन रेड्डी ने किया अलौह धातु पुनर्चक्रण पारिस्थितिकी तंत्र के लिए वेबसाइट का शुभारंभ

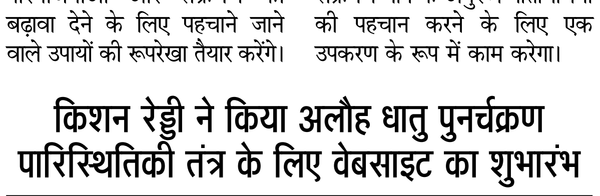

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने समर्पित गैर-लौह धातु रीसाइक्लिंग वेबसाइट और हितधारकों के पोर्टल का यहां शुभारंभ किया।इस्पात मंत्रालय ने कहा है कि इस पहल का उद्देश्य भारत में एक संरचित, पारदर्शी और टिकाऊ रीसाइक्लिंग पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना है। वेबसाइट एनएफएमरीसाइक्लिंग. जेएनआरडीडीसी.जीओवी.इन- के उद्घाटन के अवसर पर कोयला और खान राज्य मंत्री सतीश चंद्र दुबे और खान मंत्रालय और जेएनएआरडीडीसी के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। मंत्रालय ने कहा है कि इस वेब साइट को राष्ट्रीय अलौह धातु स्क्रैप रीसाइक्लिंग ढांचे के कार्यान्वयन दिशानिर्देशों के तहत विकसित इस मंच को प्रमुख हितधारकों को एक साथ लाने, डेटा दृश्यता में सुधार करने और एल्यूमीनियम, तांबा, सीसा, जस्ता और महत्वपूर्ण तत्वों के पुनर्चक्रण में साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

ऑपरेशन सिंदूर के बावजूद बढ़त के साथ बंद हुआ शेयर बाजार, सेंसेक्स और निफ्टी में मामूली तेजी

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार आज पूरे दिन उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद मामूली बढ़त के साथ बंद होने में सफल रहा। आज के कारोबार की शुरुआत बड़ी गिरावट के साथ हुई थी। बाजार खुलने के बाद बिकवाली के दबाव के कारण शेयर बाजार की गिरावट और बढ़ गई, लेकिन पहले आधे घंटे के कारोबार के बाद ही खरीदारों ने मोर्चा संभाल लिया, जिसकी वजह से अन्ततः शेयर बाजार हरे निशान में पहुंचने में सफल रहा। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.13 प्रतिशत और निफ्टी 0.14 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए। आज दिनभर के कारोबार के दौरान ऑटोमोबाइल, मेटल और कंज्यूमर ड्युरेबल्स सेक्टर के शेयरों में लगातार खरीदारी होती रही। इसी तरह आईटी, बैंकिंग, कैपिटल गुड्स,

पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज, ऑयल एंड गैस और टेक इंडेक्स भी मजबूती के साथ बंद हुए। दूसरी ओर, एफएमसीजी और हेल्थ केयर सेक्टर के शेयरों में आज बिकवाली का दबाव बना रहा। ब्रॉडर मार्केट में भी आज लगातार खरीदारी होती रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 1.36 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 1.16 प्रतिशत की तेजी के साथ आज के कारोबार का अंत किया। आज शेयर बाजार में आई मजबूती के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 423.52 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी मंगलवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 421.31 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 2.21 लाख करोड़ रुपये का फायदा हो गया। आज दिनभर के कारोबार में बीएसई में 4,046 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 2,203 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 1,685 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 158 शेयर बिना किसी उतार-चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,544 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,570 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 974 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 18 शेयर बढ़त के साथ और 12 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। जबकि निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 30 शेयर हरे निशान में और 20 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स आज 692.27 अंक की कमजोरी के साथ 79,948.80 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होते ही बिकवाली का दबाव बन जाने के कारण यह सूचकांक लुढ़क कर 79,937.48 अंक तक पहुंच गया। हालांकि पहले आधे घंटे के बाद ही बाजार में खरीदारी शुरू हो गई।

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बदलाव नहीं

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेज जारी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम में आज कोई बदलाव नहीं हुआ, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे।तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर आज अमेरिकी क्रूड 0.71 प्रतिशत उबलकर 59.51 डॉलर प्रति बैरल पर और लंदन ब्रेंट क्रूड 0.53 प्रतिशत की छलांग लगाकर 62.48 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

पीएनबी का मुनाफा 51.7 प्रतिशत बढ़ा

एजेंसी

मुंबई। सार्वजनिक क्षेत्र के पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) ने मार्च 2025 में समाप्त चौथी तिमाही में 4567 करोड़ रुपये का लाभ कमाया है जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के 3010 करोड़ रुपये के लाभ की तुलना में 51.7 प्रतिशत अधिक है।बैंक ने आज शेयर बाजार दी जानकारी में कहा कि वित्त वर्ष 2024-25 की अंतिम तिमाही में उसकी शुद्ध ब्याज आय 10757 करोड़ रुपये रही है जबकि मार्च 2024 में समाप्त तिमाही में यह आय 10363 करोड़ रुपये रही थी। बैंक ने कहा कि मार्च 2025 में समाप्त वित्त वर्ष में उसका शुद्ध लाभ 16630 करोड़ रुपये रहा है जो वित्त वर्ष 2023-24 के 8244.6 करोड़ रुपये के लाभ की तुलना में 101.7 प्रतिशत अधिक है। इस दौरान बैंक की शुद्ध ब्याज आय 6.7 प्रतिशत बढ़कर 42782 करोड़ रुपये रही है।

बैंक का सकल एनपीए मार्च 2025 में समाप्त तिमाही में 1.78 प्रतिशत सुधरकर 3.95 प्रतिशत पर रहा जबकि इससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में यह 5.78 प्रतिशत रहा था। इस दौरान शुद्ध एनपीए 0.40 प्रतिशत पर रहा जो मार्च 2024 के 0.73 प्रतिशत शुद्ध एनपीए की तुलना में 33 आधार अंक सुधरा है।

सर्राफा बाजार में मामूली तेजी, सोना-चांदी के बढ़े भाव

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज भी मामूली तेजी का रुख नजर आ रहा है। कीमत में आई तेजी के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में आज 24 कैरेट सोना 99,010 रुपये से लेकर 99,160 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 90,760 रुपये से लेकर 90,910 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। इसके पहले दिल्ली समेत देश के कई सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना कुछ देर के लिए 1 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम तक के स्तर को पार कर गया था, लेकिन बाद में इसके भाव में गिरावट आ गई। चांदी के भाव में भी आज तेजी आई है, जिसके कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में 99,100 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 99,160 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 90,910 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 99,010 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 90,760 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 99,060 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 90,810 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 99,010 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 90,760 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 99,010 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 90,760 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 99,160 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 90,910 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 99,060 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 90,810 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 99,160 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 90,910 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी आज सोना महंगा हुआ है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 99,010 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 90,760 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

घर का खाना या डाइट फूड. . . वेट लॉस के लिए क्या है बेस्ट यहां जानें

आज कल बढ़ता वजन ज्यादातर लोगों की समस्या बन गया है. इसे कम करने के लिए लोग एक्सरासइज करते हैं और डाइट पर फोकस करते हैं. कुछ लोग वेट लॉस के लिए डाइट फूड लेते हैं तो कुछ घर का खाना ही प्रेफर करते हैं. लेकिन दोनों से कौन वजन कम करने के लिए बेस्ट है चलिए जानते हैं.

अनहेल्दी लाइफस्टाइल की वजह से वजन बढ़ना एक आम समस्या बन गई है. बढ़ता वजन अपने साथ कई बीमारियां भी लेकर आता है. ऐसे में वजन को कम करना जरूरी हो जाता है. वजन कम करने के लिए फूड सबसे जरूरी होता है, कि आप किस तरह का और कितना खाना खा रहे हैं. आजकल सोशल मीडिया, यूट्यूब और फिटनेस ब्लॉग्स पर तरह-तरह के डाइट प्लान, डिटॉक्स ड्रिंक्स, मील रिप्लेसमेंट शेक्स और फैट बर्निंग फूड्स की भरमार है.

इन सब के बीच, बहुत से लोग सोच में पड़ जाते हैं कि क्या सादा, सिंपल घर का खाना वेट लॉस में कारगर है या नहीं. वहीं, कुछ लोग महंगे डाइट फूड्स और रेडी-टू-ईट हेल्दी स्नैक्स को वजन घटाने का शॉर्टकट मान लेते हैं. अगर आप भी इस दुविधा में हैं ये आर्टिकल आपके लिए ही है. इस आर्टिकल में हम आपको बताएंगे कि वजन कम करने के लिए घर का खाना बेहतर है या डाइट फूड.

गौतम गंभीर ने सुनील गावस्कर पर किया अटैक, कहा- 25 सालों से अपनी जागीर बनाया हुआ है...

ऑपरेशन सिंदूर~ भारत ने लश्कर-ए-तैयबा की कमर तोड़ी, दो टॉप आतंकी हुए ढेर

वैभव सूर्यवंशी के बाद आया एक और 14 साल का विस्फोटक खिलाड़ी, ठोक दिया दोहरा शतक

घर के खाने की खासियत क्या है?

घर का खाना बैलेंस और पोषक तत्वों से भरपूर होता है. जिसमें दाल, सब्जी, रोटी, चावल, सलाद, दही आदि शामिल होते हैं. होम मेड फूड में प्रोटीन, फाइबर, कार्ब्स, विटामिन और मिनरल्स जैसे न्यूट्रिशन होते हैं. जो ओवरऑल हेल्थ को फायदा पहुंचाते हैं.

घर के खाने के फायदे

घर के खाने का फायदा ये है कि ये फ्रेश होता है. इसे आप अपने स्वाद और सेहत के अनुसार घर के कम तेल, कम नमक और बिना किसी प्रोसेसिंग के बना सकते हैं. वहीं, घर के खाने में कोई प्रिजर्वेटिव नहीं होते हैं. साथ ही ये पेट भी देर तक भरा रखते हैं, जिससे ओवरईटिंग से भी बचा जा सकता है.

डाइट फूड क्या होता है?

डाइट फूड वह खाना होता है जो खास तौर पर वजन घटाने या फिट रहने के लिए तैयार किया गया होता है. इसमें अक्सर मील रिप्लेसमेंट शेक्स या बार्स, ओट्स, ग्रेनोला, म्यूसली, लो-कार्ब स्नैक्स, फैट-फ्री या शुगर-फ्री प्रोडक्ट्स, रेडी-टू-ईट हेल्दी मील्स शामिल होते हैं. इन फूड्स को ÷हेल्दी÷ कहकर बेचा जाता है, लेकिन इनमें कई बार छुपे हुए प्रिजर्वेटिव, आर्टिफिशियल स्विटनर और कम पोषण हो सकते हैं.

डाइट फूड के फायदे

डाइट फूड में कैलोरी काउंट कंट्रोल करना आसान होता है. ये जल्दी तैयार हो सकते हैं जिससे टाइम की भी बचत होती है. आप इसे ट्रैवल या ऑफिस के समय में भी आराम से बना सकते हैं.

जातिवार जनगणना से जुड़ी अपार संभावनाएं

जाति गिनने वालों को भी वर्गीकरण और जातियों की संख्या या प्रकृति समझने में दिक्कत हुई लेकिन सबसे ज्यादा दिक्कत निम्न जातियों द्वारा खुद को ऊंचा बताने के दावों को मानने न मानने की हुई। अब आरक्षण का लाभ जुड़ा है तो इस बार खुद को छोटी जाति का या अंत्यज बताने की होड़ होगी। चुनावी राजनीति में संख्या बल का महत्व होने से छोटी-छोटी जातियों का एक नाम के तहत जुटान भी संभव होगा।

पहलगाम कांड के बाद प्रधानमंत्री और संघ प्रमुख की बैठक हुई तो मुल्क %बड़े% फैसले की उम्मीद कर रहा था। फैसला बड़ा तो हुआ लेकिन पहलगाम के दोषियों को सख्त सजा देने का नहीं। यह कुछ नया ही विषय ऊपर ले आया और इसके चलते यह आरोप भी लगाने लगे कि प्रधानमात्री उस मामले में कुछ करने से बचना चाहते हैं और बढ़ते जनमत का ध्यान दूसरी तरफ मोड़ने के लिए उन्होंने जातिगत जनगणना का फैसला कर लिया। यह संयोग हो सकता है लेकिन यह फैसला इतना हल्का नहीं है। समाज और राजनीति के लिहाज से इसके दूरगामी परिणाम होंगे। चौंकाने और चालाकी का शक करने की एक और वजह संघ और भाजपा का पिछला रिकार्ड है जो आरक्षण की राजनीति, जातिगत जनगणना और हिन्दू समाज में %भेद% के खिलाफ रहा है। लेकिन कहना होगा कि जब जागो तब सबेरा और यह बहुत बड़ा फैसला ही नहीं है, इसमें काफी सारी विसंगतियों को दूर करने का अवसर भी है। सबसे बड़ी विसंगति तो ओबीसी की संख्या जाने बगैर उसको आरक्षण देना है और सुप्रीम कोर्ट द्वारा पचास फीसदी की सीमा लगाना है जबकि हर अनुमान पिछड़ों-दलित और आदिवासियों की संख्या का अनुपात ज्यादा मानता है। साथ ही मौजूदा समाज में जाति के साथ पिछड़ेपन के और आधार हैं लेकिन उनको चलताऊ मान लिया गया है। कहीं महिलाओं तो कहीं विकलांगों को दो-एक प्रतिशत आरक्षण जैसे समाधान की कोशिश की गई है। परिणाम है कि रोज नए समूह आरक्षण की मांग लेकर मैदान में डटे रहते हैं।

इनमें सबसे ज्यादा तो वे किसान जातियां हैं जो आज भी खेती के मैदान में डटी हैं और उनकी खेती की आमदनी उद्योग, व्यापार और कथित सेवा क्षेत्र की तुलना में पिछड़ती जा रही है। जाट, मराठा, पटेल जैसी जातियां कभी आरक्षण को ठुकरा चुकी थीं लेकिन बदले हालात में उनका आंदोलन सबसे उग्र होता है। दूसरा अध्याय खुद को ओबीसी से अनुसूचित जाति या जनजाति वर्ग में डालने का है। रेडी, लिंगायत, विक्कलिगा और नायर जैसी जातियां क्रीमी लेयर के फार्मूले के खिलाफ लगी रहती हैं। अल्पसंख्यक जमातों को आरक्षण के दायरे में लाना, महिलाओं को आरक्षण देना, निजी क्षेत्र में आरक्षण देना और फौज तथा पुलिस में आरक्षण की मांग भी उठती रहती है।

खैर मनाइए कि देसी भाषाओं से पढ़े बच्चों, गरीब और ग्रामीण समाज के वंचित बच्चों की तरफ से अभी तक जोरदार आवाज नहीं उठी है। इसलिए यह कहना एकदम उचित है कि जब समाज के हर वर्ग की संख्या और स्थिति का एक साथ व्यापक आंकड़ा आ जाएगा तो सारी वंचनाओं को मिटाने की तरफ कदम बढ़ाने वाली आरक्षण/विशेष अवसर की व्यवस्था लाई जा सकती है।इसलिए यह हिसाब छोड़िए कि यह फैसला क्यों हुआ और यह पहलगाम से ध्यान भटकाने के लिए हुआ, बिहार के आगामी चुनाव के लिए हुआ, कांग्रेस और विपक्ष के दबाव से हुआ या भाजपा को इसका श्रेय उसी तरह मिलेगा जैसा वी पी सिंह को मिला। शायद वह दौर बीत चुका है और लोग यह भी भूल गए हैं कि भाजपा ने आरक्षण के मुद्दे पर ही बिहार में कर्पूरी ठाकुर और केंद्र में वी पी सिंह सरकार गिरा दी है। इतना बड़ा फैसला लेने का श्रेय नरेंद्र मोदी को दिया जाना चाहिए। और यह उम्मीद छोड़ देनी चाहिए कि इस बार भी मण्डल जैसा तूफान उठेगा या सारी राजनीति तथा संसद और विधान सभाओं का सामाजिक चरित्र बदल जाएगा। वोट भी एकदम से किसी एक तरफ जाए अब इसकी संभावना भी कम लगती है।जो हो सकता है वह बहुत बड़ा है। इसमें सबकी जाति को गिनना, समझना और उसका वर्गीकरण करना एक जटिल काम है और जब जातिवार जनगणना होती थी और फिर रोकी गई तब ये सारे फैक्टर थे। जाति गिनने वालों को भी वर्गीकरण और जातियों की संख्या या प्रकृति समझने में दिक्कत हुई लेकिन सबसे ज्यादा दिक्कत निम्न जातियों द्वारा खुद को ऊंचा बताने के दावों को मानने न मानने की हुई। अब आरक्षण का लाभ जुड़ा है तो इस बार खुद को छोटी जाति का या अंत्यज बताने की होड़ होगी। चुनावी राजनीति में संख्या बल का महत्व होने से छोटी-छोटी जातियों का एक नाम के तहत जुटान भी संभव होगा। पर अगर एक साफ और सभी तरह की वंचनाओं को समेटने वाली व्यवस्था बने, जिसमें जातिगत भेदभाव का वेटेज(वजन) सबसे ज्यादा रखा जाए, तो न सिर्फ सर्वस्वीकृत आरक्षण व्यवस्था कायम होगी बल्कि इसमें कथित क्रीमी लेयर के भी स्वत~ छंटते जाने का काम होता जाएगा।

कभी जेएनयू के नामांकन में सौ अंकों का बीस फीसदी हिस्सा विभिन्न तरह की वंचनाओं के लिए अलग-अलग वेटेज के आधार पर तय होता था। इसमें जाति, आर्थिक स्थिति, लड़का-लड़की, गांव-शहर और अंग्रेजी स्कूल की पढ़ाई हुई या नहीं, इस आधार पर अलग-अलग अंक थे। जाति और आर्थिक स्थिति में भी कई श्रेणियां और उनके हिसाब से अंक थे। पर कुल विशेष अंक की सीमा बीस ही थी। अगर कोई लड़की बाकी कोई अंक नहीं पाती तो उनको जेंडर के दो या तीन विशेष अंक तो मिल जाते थे। गांव से आया सवर्ण और अच्छी आय वाले बच्चों को भी अंग्रेजी न जानने के नुकसान की भरपाई के दो या तीन अंक मिल जाते थे। दलित और आदिवासी को ज्यादा विशेष नंबर थे लेकिन ओबीसी समूह को भी ठीक ठाक विशेष अंक मिलते थे। जिसके परिवार की कमाई बढ़ी, शहरी हुआ, अंग्रेजी पढ़ाई शुरू हुई तो वह खुद ब खुद क्रीमी लेयर के ऊपर हों जाता था जिसमें दलित-आदिवासी भी हो सकते थे और ओबीसी भी। और इसी के चलते वहां के छात्र समुदाय का चरित्र एकदम अलग बना। उनका अकादमिक प्रदर्शन कैसा हुआ यह बताने की जरूरत नहीं है।

जनगणना में सामाजिक स्थिति जानने के दसियों आंकड़े इकठ्ठे किए जाते हैं। 2011 की जनगणना में तो जातियों का पता करने के साथ खेती-बाड़ी, मकान, दूकान, चारपहिया-दो पहिया, रंगीन टीवी, मोबाइल जैसी सारी सूचनाएं इकठ्ठा की गई थीं जिनमें कुछ जारी हुए कुछ दबा लिए गए। इस बार तो अज्ञात कारणों से जनगणना ही रोककर रखी गई है और जातिवार जनगणना ही नहीं महिलाओं का आरक्षण और संसदीय सीटों का पुनर्गठन भी आगे के लिए टाला गया है। गृह मंत्री का दावा है कि अगली जनगणना में बहुत व्यापक सूचनाएं जुटाई जाएंगी। सो जातिगत वंचना या जेंडर की स्थिति के साथ ही दूसरी वंचनाओं का हिसाब लगाना आसान होगा। फिर इस बीच लंबी चर्चाओं से जानकार लोगों से पिछड़ेपन के मानकों और वेटेज का एक सर्वमान्य फार्मूला भी तय कर लिया जाए। इसमे जन्मानुगत वंचनाओं का वेटेज ज्यादा होना चाहिए। पर खेतिहर समाज, मजदूरी वाले वर्ग, ग्रामीण और आदिवासी समाज की तकलीफों का भी महत्व समझना होगा। और जब कुल हिसाब होगा तो सचमुच में वही जमात सामने आएगा जिसे विशेष अवसर की जरूरत है। सो राजनीति चले कोई हर्ज नहीं, वोट की मारामारी हों कोई हर्ज नहीं लेकिन शासन से जुड़े लोगों को इस बीच पिछड़ेपन और वंचनाओं की पहचान और वर्गीकरण का काम पूरा कर लेना चाहिए जिससे आंकड़े आते ही एक व्यापक लाभ देने वाली व्यवस्था खड़ी हों जाए और रोज-रोज की राजनीति खत्म हो।

संपादकीय

त्वरित टिप्पणी : भेड़िये जान लें, उनके दिन लद चुके हैं

गुजरी 22 अप्रैल को पहलगाम नरमेध के बाद देश की रोती-बिलखती बेटियों को देख मेरे मन में आइजाह बर्लिन की उक्ति उभरी थी–भेड़ियों की आजादी, भेड़ों की मौत का सबब बनती है...

गुजरी 22 अप्रैल को पहलगाम नरमेध के बाद देश की रोती-बिलखती बेटियों को देख मेरे मन में आइजाह बर्लिन की उक्ति उभरी थी-भेड़ियों की आजादी, भेड़ों की मौत का सबब बनती है।मैं जानता था कि ये भेड़िये बहुत दिन अपने खून लगे पंजे और दांतों का उत्सव नहीं मना पाएंगे। भारत अब वह देश नहीं रहा जो अपने ऊपर हुए आघात को चुपचाप सहन कर ले। इस कुत्सित कांड के ठीक 15वें दिन भारतीय सेनाओं ने वह कर दिखाया जो इससे पहले कभी नहीं हुआ था।

मंगलवार आधी रात के बाद हिन्दुस्तानी मिसाइलों ने पाक अधिकृत कश्मीर और पंजाब के उन नौ स्थानों को ध्वस्त कर डाला, जो जिहाद के नाम पर इंसानों की औलादों को भेड़ियों में तब्दील करने की फैक्ट्रियां हुआ करते थे। याद करें, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सार्वजनिक तौर पर कहा था कि हम दहशत फैलाने वालों को मिट्टी में मिला देंगे। 'ऑपरेशन सिंदूर' के 25 मिनटों में नौ आतंकी ठिकाने और 26 दहशतगर्द, उनके समर्थक वाकई मिट्टी में मिल गए।

मोदीराज में हमारी सशस्त्र सेनाओं ने तीसरी बार पाकिस्तान में घुसकर पाकिस्तानियों का मान-मर्दन किया है। क्या यह पर्याप्त है? क्या इससे युद्ध भड़क सकता है? क्या इससे पाक पोषित आतंकवादियों की कमर हमेशा के लिए टूट गई?

इन सवालों के जवाब फौरी तौर पर देना नामुमकिन है, लेकिन एक बात तय है कि जो पाकिस्तानी फिलवक्त आतंकवाद को पोसने के धंधे में लगे हैं, उन्हें मालूम पड़ चुका है कि अब हर दुस्साहस की कीमत चुक पड़ेगी। रही बात भारत-पाक युद्ध की तो अब पाकिस्तान की राजनीतिक बिरादरी रावलपिंडी में बैठे उनके सैनिक आकाओं को करना है।

समीक्षकों का एक वर्ग है जो जनरल अर मुनीर के पुराने भाषण के आधार पर कहता है वे जरूर ऐसा कुछ करेंगे जो क्षेत्रीय शांति सुरक्षा के लिए खतरा साबित हो। पाकिस्तान प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और मंत्रिमंडल उनके अलम्बरदार भी ऐसी बातें कर रहे हैं।तय अगले कुछ दिन सतर्कता,सन्नद्धता और सज के हैं।

मुझे इसमें कोई शक नहीं कि सीमाओं सुरक्षा में सरकार और सेना कोई कोताही बरतेगी लेि एक फर्ज हम नागरिकों का भी है - सामाजिक एव बनाए रखने का। उम्मीद है हमारा समाज इस बार वक्त की कसौटी पर खरा उतरेगा।

कौन चाहता है युद्ध और क्या हासिल होगा उससे

जब हर तरह से युद्ध हमारे लिए हानिकारक है तो फिर इसका विकल्प क्या है? पाकिस्तान की हरकतों और आतंकवाद से हम कैसे निबटें? सवाल महत्वपूर्ण है और इसका जवाब यह है कि हम पाकिस्तान पर दबाव बनाने के लिए अमेरिका समेत दुनिया के दूसरे देशों से गुहार जरूर करें लेकिन ऐसा करने के पहले हमें इस दिशा में खुद ही पहल करनी चाहिए।

महाभारत के शांतिपर्व में कहा गया है-

%न युद्धात् परमं किंचिद् युद्धं सर्वं न संनादति।

युद्धेन संनादति सर्वं तस्माद् युद्धं परित्यजेत।।(युद्ध से बढ़कर कोई आपदा नहीं; युद्ध सब कुछ नष्ट कर देता है। इसलिए युद्ध का परित्याग करना चाहिए)।

भारत में जब कभी भी पाकिस्तान द्वारा पोषित आतंकवादी जमात की ओर से कोई बड़ा हमला होता है और उसमें बड़ी संख्या में लोग मारे जाते हैं तो मीडिया और सोशल मीडिया में युद्ध के ढोल-नगाड़े बजने लगते हैं। इस समय भी यही हो रहा है। पिछले महीने की 22 तारीख को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले को लेकर पूरा देश क्षुब्ध और उद्वेलित है। चूंकि हमले की जिम्मेदारी लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े द रसिस्टेंस फ्रंट ने ली है, जिसे पाकिस्तानी सेना और वहां की खुफिया एजेंसी आईएसआई से खाद-पानी मिलता है।

पहलगाम हमले में जो लोग मारे गए हैं, वे सभी मध्यमवर्गीय परिवारों के होंगे। उनमें किसी ने अपना बेटा तो किसी ने पति, किसी ने अपना भाई और किसी ने पिता को खोया है। उन सभी के दर्दनाक तरीके से मारे जाने पर उनके परिवारजनों का दुख और गुस्सा जायज है और उसमें पूरे देश का शामिल होना भी लाजिमी है। फिर भी कॉरपोरेट घरानों से नियंत्रित टीआरपी-पिपासु टीवी चैनल भारतीय जन-मन के क्षोभ, शोक और आक्रोश का निर्लज्जता के साथ व्यापार कर रहे हैं।

जिस दिन पहलगाम में हमला हुआ उस दिन से आज तक दिल्ली और मुंबई स्थित टीवी चैनलों पर तीतर-बटेर छाप बहसों में रक्षा विशेषज्ञों के तौर पर शामिल रक्षा तथा विदेश मंत्रालय, सेना एवं खुफिया सेवाओं के पूर्व अफसर जनाक्रोश को युद्धोन्माद में बदलने की कोशिश कर रहे हैं। टीवी चैनलों के मूर्ख एंकर-एंकरनियां भी वीर बालकों की मुद्रा में उनके सुर में सुर मिला रही हैं। युद्धोन्माद पैदा करने के लिए इन टीवी चैनलों ने चंद पैसों पर आसानी से उपलब्ध हो जाने वाले पाकिस्तान के भी कुछ नेताओं, पूर्व नौकरशाहों, पूर्व सैन्य अफसरों को हायर कर रखा है।

ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है। दरअसल ये रक्षा विशेषज्ञ किसी भी आतंकवादी हमले के बाद टीवी चैनलों के वातानुकूलित स्टूडियो में बैठकर पाकिस्तान को युद्ध के जरिये सबक सिखाने का सुझाव देते हैं और साथ ही यह रुदन भी कर डालते हैं कि भारतीय सेना के पास संसाधनों का अभाव है। अपनी ऐसी बातों से यह लोग आम लोगों पर यही प्रभाव छोड़ने की कोशिश करते हैं कि वे बहुत बहादुर और देशभक्त हैं, लेकिन बात इतनी सीधी नहीं है। दरअसल यह मामला उच्च तकनीक वाले हथियारों के अंतरराष्ट्रीय कारोबार से जुड़ा है।

भारत हथियारों का बहुत बड़ा खरीदार है, लिहाजा हथियार बनाने वाली कई विदेशी कंपनियों के हित भारत से जुड़े हैं। भारतीय सेना, सुरक्षा एजेंसियों, विदेश सेवा और रक्षा महकमे के कई पूर्व अफसर इन कंपनियों के परोक्ष मददगार होते हैं। यह कंपनियां ऐसे लोगों को उनके रिटायरमेंट के बाद अनौपचारिक तौर पर अपना सलाहकार नियुक्त कर लेती हैं। ये लोग इन कंपनियों के हथियारों की बिक्री के लिए तरह-तरह से माहौल बनाने का काम करते हैं। देश में युद्धोन्माद पैदा करना और सेना में संसाधनों का अभाव बताना भी उनके इसी उपक्रम का हिस्सा है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन लोगों को इस काम के लिए हथियार कंपनियों से अच्छा खासा पारिश्रमिक मिलता है। तो देशभक्ति के नाम यह इनका अपना व्यापार है जो इन दिनों जोरों पर चल रहा है।

युद्ध का माहौल बनाने में जुटे कुछ टीवी चैनलों ने तो यह भी बता दिया है कि दोनों देशों के बीच युद्ध में अगर परमाणु युद्ध हथियारों का इस्तेमाल होता है तो पाकिस्तान का नुकसान ज्यादा होगा, वह तबाह हो जाएगा, दक्षिण एशिया का भूगोल बदल जाएगा आदि-आदि। कुछ चैनल सुझा रहे हैं कि भारत युद्ध न भी करें तो पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में घुसकर आतंकवादियों के शिविर नष्ट कर दे। हालांकि भारत की ओर से ऐसी कार्रवाइयां पिछले 27 वर्षों में 11 बार हो चुकी हैं, जिनमें से दो बार तो मोदी सरकार के दौर में ही हुई हैं, तो भी पाकिस्तानी सत्ता प्रतिष्ठान और उसके द्वारा पोषित आतंकवादियों के मनसूबों पर इसका कोई असर नहीं हुआ है।भारतीय सत्ता प्रतिष्ठान का यह मुगालता पुराना है कि अमेरिका भारत का दोस्त है। इससे भी बड़ा मुगालता मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनाल्ड ट्रंप उनके व्यक्तिगत दोस्त है। हमारे कॉरपोरेट घरानों, कॉरपोरेट पोषित मीडिया और देश के उच्च मध्यम वर्ग के मन में भी अमेरिका के प्रति अगाध श्रद्धा है। ऐसे सभी लोगों के लिए क्या यह सूचना महत्वपूर्ण नहीं है कि अमेरिका ने पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की निंदा तो की है, लेकिन राष्ट्रपति ट्रम्प ने साथ में यह भी कहा है कि भारत और पाकिस्तान दोनों ही उनके करीबी हैं और दोनों खुद ही इस मसले को हल कर लेंगे। जाहिर है कि अमेरिका ने खुद को इस मामले से अलग रखने का इरादा जता दिया है। इसकी वजह यह है कि हथियार खरीदी के मामले में पाकिस्तान भी अमेरिका का कोई छोटा ग्राहक नहीं है। इसके अलावा कई मौकों पर पाकिस्तानी सैन्य अड्डों का इस्तेमाल भी वह करता रहा है।जहां तक चीन का सवाल है, उसके तो और भी ज्यादा हित पाकिस्तान के साथ जुड़े हुए हैं। उसने भी पहलगाम हमले की निंदा तो की है लेकिन पाकिस्तान को अपना मजबूत दोस्त और रणनीतिक भागीदार भी बताकर स्पष्ट कर दिया है कि युद्ध जैसी स्थिति में वह क्या करेगा। रूस की प्रतिक्रिया भी भारत के लिए आश्वस्तकारी नहीं है। तुर्की, ईरान, सऊदी अरब सहित कई मुस्लिम देश तो खुल कर पाकिस्तान के साथ हैं। यहां तक कि भारत के छोटे-छोटे पड़ोसी देश भी इस मामले में भारत से दूरी बनाए हुए हैं। ऐसे में अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारत-पाकिस्तान युद्ध की स्थिति में कौन किसके साथ रहेगा !कुल मिलाकर युद्ध हमारे लिए बुरी तरह घाटे का सौदा साबित होगा। पाकिस्तान भले ही हमारी तरह परमाणु शक्ति संपन्न है लेकिन वह निहायत ही उद्दण्ड और गैरजिम्मेदार मुल्क भी है। आर्थिक तौर पर तो वह बर्बाद है ही। उसके पास अपने बेगुनाह अवाम के अलावा खोने को भी कुछ खास नहीं है। इसलिए उसके साथ युद्ध की स्थिति में जो भी कुछ बिगड़ना है वह भारत का ही बिगड़ना है।

सवाल उठता है कि जब हर तरह से युद्ध हमारे लिए हानिकारक है तो फिर इसका विकल्प क्या है? पाकिस्तान की हरकतों और आतंकवाद से हम कैसे निबटें? सवाल महत्वपूर्ण है और इसका जवाब यह है कि हम पाकिस्तान पर दबाव बनाने के लिए अमेरिका समेत दुनिया के दूसरे देशों से गुहार जरूर करें लेकिन ऐसा करने के पहले हमें इस दिशा में खुद ही पहल करनी चाहिए, जो कि भारत सरकार ने पहलगाम हमले के बाद की भी है। भारत की इस पहलकदमी से आने वाले समय में पाकिस्तान पर निश्चित रूप से दबाव बनेगा। अलबत्ता इन कदमों से अदानी, अंबानी और जिंदल जैसे हमारे यहां के कुछ उद्योग समूहों के हित जरूर प्रभावित हो सकते हैं, जिनके कारोबारी रिश्ते गहरे तौर पर पाकिस्तान और वहां के सत्ता प्रतिष्ठान से ताल्लुक रखने वाले लोगों के साथ जुड़े हैं।पाकिस्तान के खिलाफ अपने स्तर पर की जा सकने वाली इस तरह की राजनयिक और आर्थिक नाकेबंदी के साथ ही हमें अपनी सुरक्षा व्यवस्था और खुफिया तंत्र को भी चाक-चौबंद करने के उपाय करने चाहिए। हर आतंकवादी हमले के बाद इस मोर्चे पर हमारी कमजोरियां उजागर होती हैं और सरकार की ओर से इन कमजोरियों को दुरुस्त करने की बातें भी होती हैं, लेकिन होता कुछ नहीं है। पहलगाम हमले में भी यह कमजोरी साफ तौर पर उभरकर सामने आई है। इससे पहले उड़ी, पठानकोट एयरबेस और पुलवामा में हुए आतंकवादी हमले भी हमारी इन्हीं कमजोरियों के परिणाम थे। इन कमजोरियों को दूर किए बगैर अगर हम पाकिस्तान का रण-निमंत्रण स्वीकार कर भी लें तो उससे मसले का कोई स्थायी हल नहीं निकल सकता। आखिरकार हम पाकिस्तान की तुलना में कहीं ज्यादा सभ्य देश हैं। ऐसे ही मौकों पर हमारी सभ्यता का इम्तिहान होता है, जब हम उकसावे में आए बगैर अपने विवेक का इस्तेमाल करते हुए अपने मूल्यों को बनाए रखें। युद्ध नहीं, शांति और सह-अस्तित्व ही हमारी सभ्यता का आधार है।

रहस्य-रोमांच

आत्महत्या के लिए मजबूर करने वाली पेंटिंग

ब्रिटिश म्यूजियम में एक रहस्यमयी तस्वीर थी। जो कोई अपने घर में यह तस्वीर टांगता, यह पेंटिंग उसे आत्महत्या करने के लिए मजबूर कर देती। यह तस्वीर नीले कागज पर काली खड़िया से खींची गयी एक बड़े जंगली बिल्ले की थी। यह इतनी सफाई के साथ खींची गयी थी कि उस तस्वीर को एकटक नजरें गड़ा कर देखने पर उस बिल्ले की नीली-नीली चमकती आंखें बिल्कुल सजीव दिखायी देती। उनमें एक हिंसात्मक चमक- सी नजर आती जिससे देखने वाले अपने

कुछ-कुछ इस चित्र की तरह दिखती थी पेंटिंग

अंदर एक बेचैनी महसूस करने लगते। शुरू में, जिस आदमी के पास यह तस्वीर थी, वह एक वनाधिकारी था, जो सुखी दाम्पत्य जीवन बिता रहा था। उसने एक दिन अकारण ही गोली मार कर आत्महत्या कर ली। उसकी विधवा ने वह चित्र काउफंट अलेक्जेंडर के हाथ बेच दिया। काउफंट को उस चित्र से बड़ा लगाव था। उसने उसे अपने कमरे की दीवार पर टांग रखा था। वह तस्वीर बार-बार उसका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करती रहती, जिसे देख-देखकर वह बड़ा खिन्न और उदास महसूस किया करता। उसे भय हुआ कि कहीं उसे भी आत्महत्या करने के लिए मजबूर न होना पड़े। तस्वीर को वह जलाना नहीं चाहता था क्योंकि वह उसे बहुत प्यारी थी, लेकिन और अधिक अपने पास उसे बनाये रखने का जोखिम भी वह मोल नहीं लेना चाहता था। विवश होकर उसने अपने मित्र को वह तस्वीर भेंट कर दी। फिर भी तस्वीर ने उसे नहीं बख्शा।

कुछ दिनों बाद ही बड़े रहस्यमय तरीके से उसकी मौत हो गयी। जिस मित्र को उसने तस्वीर दी थी। उसने अपने दोस्त की आखिरी निशानी मानकर उसे काफी समय तक अपने पास रखा और अंतत- अपने बेटे को उसने यह चित्र सौंप दिया।

बेटे ने उस चित्र को अपने कमरे की दीवार पर टांग दिया और उसे भूल गया। पर एक सर्दी की रात को जब वह अपने कमरे में बैठा खत लिख रहा था, उसे अचानक ऐसा महसूस हुआ मानो अपने कमरे में वह अकेला नहीं है, कोई अशरीरी भी उसके ईद-गिर्द मंडरा रहा है। उसने अपनी निगाह ऊपर उठायी लेकिन कहीं कोई नहीं था। सहसा उसकी आंखें तस्वीर वाले उस बिल्ले की आंखों से जा टकरायी। उसे अद्भुत रोमांच-सा हो आया, ऐसा लगा मानों वह तस्वीर उसे अपने सम्मोहन में कसती जा रही हो। उसके विचारों पर मानों उसने जबरन कब्जा कर लिया हो और धीरे-धीरे उस पर अपना समस्त अधिकार जमाती जा रही हो। बड़ी मुश्किल से वह उस तस्वीर से आंखें हटा पाया।

इस घटना से डरकर उसने तस्वीर अपने एक मित्र को दे दी जो जंगली जानवरों में रुचि रखता था। अपने नये घर की दीवार पर उसने उसे टांग दिया। लेकिन अभी छह महीने भी नहीं बीते थे कि उसने आत्महत्या कर ली। इसके बाद उसका एक दूर का रिश्तेदार उस चित्र को अपने साथ ले गया। लेकिन कुछ महीनों बाद वह भी अपने बिस्तर पर मरा पाया गया। उसने वास्तव में आत्महत्या की थी या उसका खून किया गया था, इस बारे में कुछ पता नहीं चल पाया। उस चित्र का भी बाद में कोई पता नहीं चला कि कहां गया।

कुत्तों के ठाठ निराले

जानवरों में इंसान के सबसे पुराने साथी कुत्ते के कई रंग हैं। रईस परिवारों में कुत्ते ठाठ से रहते हैं, पलते हैं, बड़े होते हैं। उसकी अहमियत घर के किसी सदस्य से कम नहीं होती। यह कुत्तों का अपना नसीब है कि उन्हें रईस घर परिवार मिलता है या फिर वे गली- मोहल्ले की खाक छानते फिरते हैं। कुछ उदाहरण

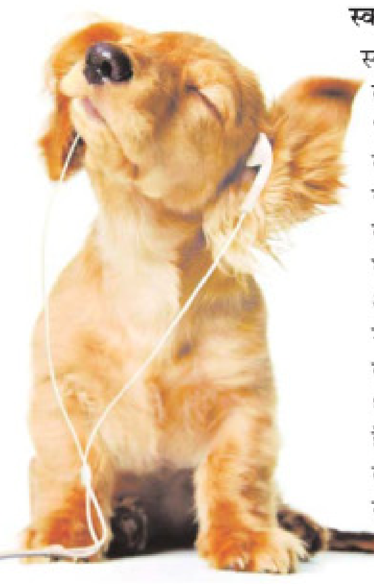

स्कूलों में बनाएंगे अनुशासन

स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों में अनुशासन होना नितांत आवश्यक है लेकिन बहुत से बच्चे अनुशासनहीन होते हैं और उन्हें इस पर सजा भी मिलती है। अब छात्रों को अनुशासन तोड़ने पर खड़े रहने, मुर्गा बनने, ग्राउंड के चक्कर लगाने, बेंत या डंडे की मार, थप्पड़ खाने जैसे दंड की आवश्यकता नहीं रहेगी, क्योंकि अब अनुशासन बनाए रखने का काम शिक्षक नहीं अपितु प्रशिक्षित कुत्ते करेंगे। घबराइये नहीं, फिलहाल यह प्रस्ताव ब्रिटेन के स्कूलों के लिए आया है, अब यह बात अलग है कि वहां यदि यह प्रयोग सफल होता है तो इसे भारत में भी अपनाया जा सकता है। हाल ही में ब्रिटेन में शिक्षकों की एक यूनियन ने स्कूलों में अनुशासन कायम रखने के लिए कुत्तों को नियुक्त कर उनकी सेवाएं लेने की सिफारिश की है। मूल रूप से यह प्रस्ताव एक शिक्षिका बेनडी डायलस का था जिसे प्रोफेशनल्स एसोसिएशन ऑफटीर्चस ने समर्थन दिया है। शिक्षिका छोटे बच्चों को पढ़ाती हैं और उनका कहना है कि बड़े कुत्तों से बच्चों को पंक्तिबद्ध करने, घुमाने, उन पर निगरानी रखने के अलावा बच्चों द्वारा फर्श पर गिराए गए दूध को साफकरने में मदद मिलेगी। ये कुत्ते बच्चों के झगड़े समाप्त करने जूते- चप्पलों और खिलौनों पर भी निगरानी रख सकेंगे। देखना यह है कि उनका यह प्रस्ताव अमल में आता है या नहीं।

बैंक में खाते

जापान में कुत्तों की कितनी अहमियत है, इसका अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि ओसाका शहर में तो सन्वास बैंक ने उनके लिए एक अनूठी सेवा शुरू की है। बैंक ने कुत्तों के नामों पर खाता खोलने की अनुमति दी है। खाता खोलने से पूर्व कुत्ते का पूर्ण विवरण तथा फोटो प्रस्तुत करना अनिवार्य है। बैंक पालतू कुत्तों को मालिक के परिवार का सदस्य मानती है ।

शान से पहनते हैं चश्मे

इंसानों को तो आपने चश्मा पहनते देखा है अब कुत्ते भी नजर और धूप के चश्मे पहनने लगे हैं। अमेरिका की मिडनाइट कं पनी कुत्तों के लिए धूप के चश्मे तो पहले से ही बना रही है, अब कमजोर नजर वाले कुत्तों के लिए डॉगल्स भी बना रही है। लॉस वेगास के पशु नेत्र चिकित्सक डॉ.माइकल ब्रिकमेन ने डॉगल्स बनाने में मदद की है। इसे चमड़े की एक पट्टी से कुत्ते के सिर पर बांधा जाता है। कुत्ते पालने की शौकीन बर्किंगघमशायर की हैलन ड्रेप डॉगल्स के आने से बहुत खुश हैं क्योंकि उनका कुत्ता पिछले छह सालों से धीरे-धीरे अंधा होता जा रहा है। अब उनका कुत्ता शान से चश्मा पहनता है और उसे सब कुछ साफ दिखाई देता है।

जर्मन अवार्ड के हकदार

जर्मन सरकार ने एक कुत्ते को पुरस्कृत किया। चौंकिए मत, इस कुत्ते ने आत्महत्या पर उतारू एक महिला को ऐसा करने से रोकने में पुलिस की मदद की थी। हुआ यह कि यहां के एक मनोचिकित्सक क्लीनिक की 39 वर्षीय महिला मरीज ने अपने आप को एक टॉयलेट में बंद कर लिया। खतरे की बात यह थी कि उसके पास एक चाकू भी था। जब पुलिस को पता चला कि उसे कुत्तों का बड़ा शौक है, तो पास ही के एक कुत्ताघर से संकर नस्ल के परजेल नामक कुत्ते को चुना गया, क्योंकि उसका चेहरा बड़ा आकर्षक था। रणनीति काम कर गई। टॉयलेट की दरार में से जैसे ही वह गया, महिला ने चाकू पटका और दरवाजा खोलकर उसे गोद में ले लिया।

टैक्स भी चुकाते हैं

जर्मनी के कुत्ते सबसे अलग है क्योंकि वहां उन पर भी टैक्स लगता है। पालक के पास किस नस्ल का और आकार का कुत्ता है, उसके अनुसार टैक्स तय होता है। यही नहीं, कुत्तों का भी बाकायदा पासपोर्ट बनता है। पासपोर्ट में कुत्ते के नाम के साथ उपनाम भी लिखना आवश्यक है और ये उपनाम जो परिवार उसे पाल रहा है, उसके मुखिया का होता है।

टीसी की भूमिका

कुत्तों को आप कम मत समझिए, पुलिस के खोजी कुत्ते बड़े से बड़े अपराधियों को धर दबोचते हैं, नशीली दवाइयों का पता लगा सकते हैं, लेकिन इन सबसे ऊपर अब भारतीय रेलवे ने उन्हें काम सौंपा है बिना टिकट यात्रियों को पकड़ने का। यों तो प्रत्येक ट्रेन और स्टेशन के निकासी द्वार पर टिकट यात्री उनकी आंखों में धूल झोंक कर निकल जाते हैं लेकिन अब बिना टिकट यात्रा करने वालों की शामत आ जाएगी। प्रयो ग के तौर पर मुंबई के अंधेरी रेलवे स्टेशन पर हाल ही में प्रशिक्षित कुत्ते तैनात किए गए हैं। ये कुत्ते रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स(आर.पी.एफ) के हैं। ये बिना टिकट यात्रियों को पलक झपकते ही पकड़ लेते हैं। यदि यह प्रयोग सफल रहा तो देश के तमाम रेलवे स्टेशनों पर कुत्ते बिना टिकट यात्रियों को पकड़ेंगे। कुत्तों की आंखों में धूल झोंक कर बच निकल पाना बड़ा मुश्किल है।

सोशल नेटवर्किंग साइट पर

लोकप्रिय सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक और माइक्रो ब्लॉगिंग साइट ट्विटर पर भले ही देश की हजारों नामचीन हस्तियों एवं आम लोगों की प्रोफाइल नहीं है लेकिन ब्रिटेन के पालतू पशुओं की प्रोफाइल भी अब इन वेबसाइटों पर है। ब्रिटेन में किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि दस में से एक पालतू की फेसबुक या ट्विटर पर प्रोफाइल है और ब्रिटेन में 50 प्रतिशत से अधिक लोग अपने पालतु की तस्वीरों का फेसबुक के जरिए आदान प्रदान करते हैं। यही नहीं, ब्रिटेन में सोशल नेटवर्किंग साइटों की संख्या में भी तेजी से इजाफा हुआ है जो कुत्ता पालकों को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं। इन साइटों में क्रिटटर, कैटस्टोर और डॉगी डेटिंग सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। अध्ययन में 52 प्रतिशत लोगों ने यह स्वीकार किया वे सोशल नेटवर्किंग साइटों पर अपने कुत्तों की तस्वीरें पेस्ट करते हैं और उनमें से 20 प्रतिशत लोग ई-मेल के जरिए इन तस्वीरों को अपने परिवार के लोगों एवं दोस्तों को भी भेजते हैं। दिलचस्प है कि महिलाएं इस काम में पुरुषों से आगे हैं।

बिंदु मिलाकर चित्र बनाओ

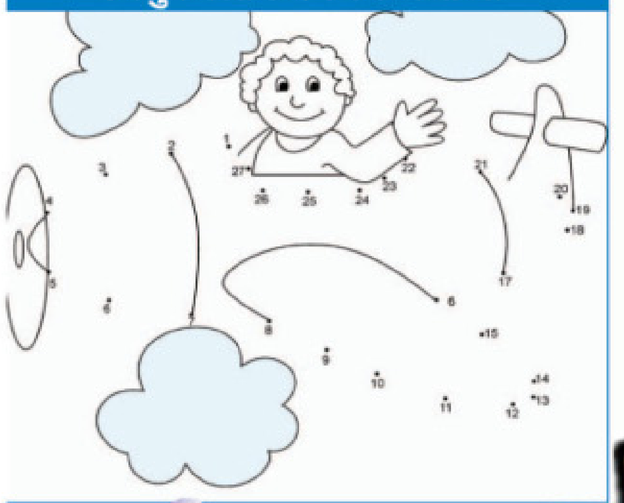

अंतर ढूंढो

स्कूल में भर्ती

(कहानी)

राजू 3 साल का है उसके स्कूल में दाखिला करने का वक्त आ गया है। इसका दाखिला किस स्कूल में कराएं, घर वाले 6 महीने से इस बात पर चर्चा कर रहे थे। किंतु फिर भी कोई एक स्कूल नहीं चुन पाए थे। हर कोई नया-नया स्कूल का नाम बता रहा था।

आखिर में दाखिले वाला दिन आ गया। अब दाखिले के लिए स्कूल के फार्म स्कूल की व्यवस्था व पढ़ाई, व स्कूल टाइम का पता लगाना शुरू किया गया। अंग्रेजी-स्कूलों की मांग थी कि बच्चे के मां-बाप अंग्रेजी बोलना, लिखना, पढ़ना जानते हों।

किंतु राजू के बाप तो एक मामूली दुकानदार थे। इसीलिए उन्हें अंग्रेजी नहीं आती थी।

अब समस्या ये थी कि कहीं पर भी अंग्रेजी स्कूल में भर्ती हो जाए। काफी धूल छानने के बाद एक छोटा सा अंग्रेजी माध्यम का प्राइवेट स्कूल मिला। अब समस्या ये थी कि वह घर से काफी दूर है। और बच्चा काफी छोटा है पढ़ाई जरूरी या बच्चा?

यह भी एक समस्या थी।

थक-हार कर उसका (राजू का) दाखिला हिंदी माध्यम में ही करा दिया गया। मगर अभी राजू के पापा ने हार नहीं मानी थी। वह अंग्रेजी स्कूल में दाखिला कराने के बाद भागदौड़ कर रहे थे। एक माह बाद एक विद्यालय में एक सीट खाली मिल ही गई।

और इस दाखिले के उसे कुछ पैसा भी खर्च करना पड़ा। आखिर राजू का दाखिला अंग्रेजी विद्यालय में हो ही गया। और उसका एक माह हिंदी विद्यालय में बैठने का आभास भी हो गया था। राजू का समय भी खराब नहीं हुआ और वह अंग्रेजी विद्यालय में भी पढ़ने लगा है।

ये राजू के दिमाग का काम था। राजू के पिता हिंदी भी सही से नहीं जानते थे पर उन्होंने अपने बच्चे को अच्छा पढ़ाने के लिए बड़ा परिश्रम किया आजकल दाखिला भी बहुत मुश्किल से होता है पर अब राजू का तो, देर से ही सही दाखिला हो ही गया था।

पानी के संकट से उबार सकते हैं बांज के जंगल

बांज के पेड़ों पर उगने वाली झुल नामक वनस्पति अनेक दवाओं, मसालों, प्राकृतिक रंग आदि बनाने में काम आती हैं

बांज के जंगलों में यूमस अधिक होता हैं जो पानी को अपने में संग्रहीत करने की क्षमता रखता हैं

जल संकट से जूझ रहे उत्तराखण्डवासियों को इस समस्या से निजात दिलाने में बांज के जंगल वरदान साबित हो रहे हैं।

वरदान सिद्ध हो रहा है यह पेड़ : एक समय था जब उत्तराखंड देश के अधिकांश हिस्सों को उत्तराखंड जल संकट से उबारता था लेकिन अब वही इस समस्या से जूझ रहा है। इस परेशानी से उबरने में बुजुगरे की दूरदृष्टि तथा अथक मेहनत काफी रंग ला रही है। बुजुगरे की वजह से वर्तमान पीढ़ी को उपहार में मिला बांज का जंगल अल्मोड़ा जिले के अनेक गांवों के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है।

जलस्रेत संकट मोचक बने: समुद्र तल से लगभग छह हजार फुट की ऊंचाई पर बसे उत्तराखंड में अल्मोड़ा के ताकुला ब्लाक के ढौल गांव में बांज के जंगल से निकले जल स्रेतों के कारण इस गांव में पानी की कमी नहीं है बल्कि अपने से नीचे बसे गांवों तथा आसपास के क्षेत्रों के लिए भी यही जलस्रेत संकट मोचक बने हैं।

यहां के बुजुगरे को पहले से अनुभव था : वैज्ञानिकों ने अपने शोधों से भले ही अब सिद्ध कर दिया है कि बांज (जिसका वैज्ञानिक नाम क्वारकस है) के पेड़ की आसपास की जमीन में पानी को संग्रहीत करने की उच्च क्षमता है, लेकिन ढौल गांव के बुजुगरे को अपने अनुभव से इस बात का अनुमान बहुत पहले हो गया था जिसमें उन्होंने बांज के पेड़ों को अपने बच्चों की तरह पालना शुरू कर दिया।

इनमें अपार प्राकृतिक लाभ देने की क्षमता : लगभग आठ से 10 वर्ग किलोमीटर में फैला बांज का यह जंगल करीब 150 वर्ष पुराना है। केवल लकड़ी की कटाई और लीसा आदि पर ही नजर रखने वाली संकीर्ण दृष्टि से बांज के जंगल व्यावसायिक दृष्टि से लाभप्रद नहीं नजर आते हैं, पर इनमें अपार प्राकृतिक लाभ देने की क्षमता है। बांज के पेड़ों के तने पर उगने वाली झुल नामक वनस्पति का प्रयोग अनेक दवाओं, मसालों, प्राकृतिक रंग आदि बनाने में किया जाता है।

इसका वृक्ष छतरी की आकृति का होता है : राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ के वैज्ञानिक डॉ. डीके उप्रेती ने बताया कि बांज के जंगलों में यूमस अधिक होता है जो पानी को अपने में संग्रहीत करने की क्षमता रखता है। इसका वृक्ष छतरी की आकृति का होता है तथा इसकी पत्तियां खूब घनी व चौड़ी होने के साथ स्पंजी तथा हवा भरी होती हैं जो यूमस बनने में सहायक होती हैं। उन्होंने बताया कि यूमस की अधिकता के कारण बांज के पेड़ों से गिरने वाली पत्तियां अम्लीय न होने के कारण जल्दी गल जाती हैं जिससे आसपास की जमीन हवादार एवं सोखने के समान बन जाती हैं।

कैंसर के इलाज में मददगार नया प्रोटीन

एक भारतीय मूल के वैज्ञानिक समेत अनुसंधानकर्ताओं ने एक ऐसा नया प्रोटीन डिजायन किया है जो कैंसर कारक कोशिकाओं को प्रभावी ढंग से खत्म कर सकता है और अन्य कई बीमारियों में भी प्रभावी है।

प्रोएजियो नामक प्रोटीन : मानव प्रोटीन से तैयार प्रोएजियो नामक यह प्रोटीन कोशिका सतह रिसेप्टर (प्रोटीन) ''इंटीग्रिन वी 3' पर एक खास जगह को निशाना बनाता है जबकि अन्य वैज्ञानिक ऐसा नहीं कर पाए हैं। अमेरिका के ''जार्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी' के अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि प्रोएजियो उस कोशिका को व्यवस्थित ढंग से मार देता है जिसमें ''इंटीग्रिन वी 3' होते हैं।

इंटीग्रिन युगल, वी 3, सामान्य उत्तक में उच्च स्तर पर प्रकट नहीं होता : यह इंटीग्रिन दवा विकास के केंद्र में रहा हैं क्योंकि ''वी 3' के असामान्य रूप से प्रकट होने का कई रोगों के विकास से संबंध होता है। इस अध्ययन के मुख्य लेखक और जार्जिया स्टेट में प्रोफेसर झी रेन लिउ ने कहा, ''यह इंटीग्रिन युगल, वी 3, सामान्य उत्तक में उच्च स्तर पर प्रकट नहीं होता।' उन्होंने कहा, ''ज्यादातर मामलों में यह कई रोगजनक स्थितियों से संबद्ध होता है। अतएव, यह कई रोगों के इलाज में काफी कारगर होता है।'

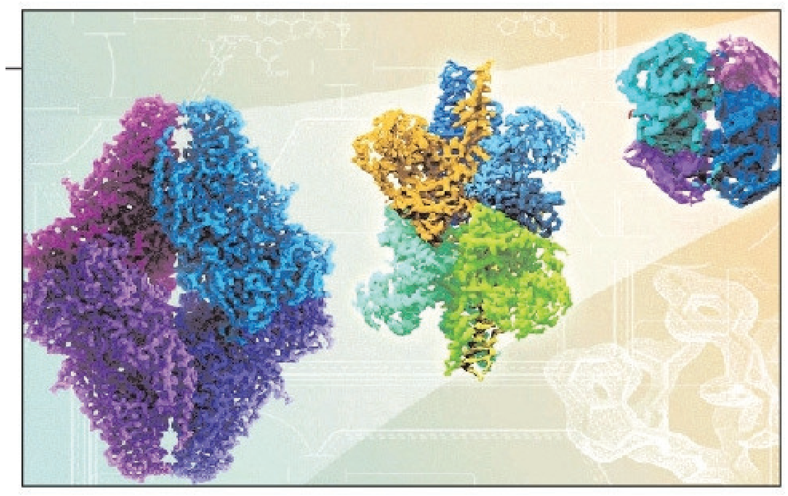

वीडियो देखने में अधिक डाटा खर्च करते हैं किशोर

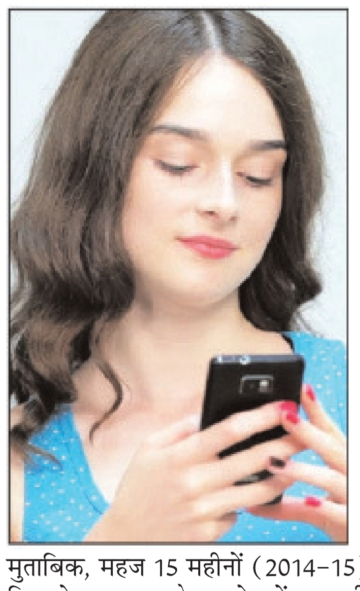

चार वर्षों में किशोरों द्वारा टीवी स्क्रीन पर वीडियो देखने में खर्च किया जाने वाला समय 50 फीसदी घटा है

वहीं इसके उलट, स्मार्टफोन पर वीडियो देखने में खर्च होने वाला समय 85 फीसद बढ़ा है

एक अध्ययन के मुताबिक, देश में स्मार्टफोन वीडियो देखने के लिए किशोर सबसे अधिक मोबाइल डाटा का उपयोग करते हैं।एरिक्सन मोबिलिटी रिपोर्ट के नवीनतम संस्करण के मुताबिक, महज 15 महीनों (2014-15) में किशोरों के बीच स्मार्टफोन वीडियो देखने के लिए सेलुलर डाटा के उपयोग में 127 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। अध्ययन में कहा गया है, ''चार वर्षो (2011-15) की अवधि में किशोरों द्वारा टीवी स्क्रीन पर वीडियो देखने में खर्च किया जाने वाला समय 50 फीसद घटा है। वहीं इसके उलट, स्मार्टफोन पर वीडियो देखने में खर्च होने वाला समय 85 फीसद बढ़ा है।' इस सव्रेक्षण में यह अनुमान भी लगाया गया है कि वर्ष 2018 तक कनेक्टड डिवाइस की श्रेणी में इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) के मोबाइल फोन से आगे निकल जाने की संभावना है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स, परस्पर गणना करने वाले उपकरणों, मैकेनिकल व डिजिटल मशीनों की एक पण्राली है जिसमें मानव से मानव के बीच अथवा मानव से कंप्यूटर के बीच संवाद के बिना एक नेटवर्क पर डाटा स्थानांतरित करने की क्षमता होती है। अध्ययन के मुताबिक, 2021 तक कनेक्टड कुल 28 अरब उपकरणों में से करीब 16 अरब आईओटी उपकरण होंगे।

क्विलिंग से करिए जेवर डिजायन

एक-दूसरे में गूंथकर या चांदी के महीन कागज से पहनने योग्य आभूषण तैयार करने की कला अब यहां पर एक नई कार्यशाला में सीखी जा सकती है। सजावटी डिजायन तैयार करने के लिए रंगीन कागज के स्ट्रिप्स का इस्तेमाल लपेटने, आकार देने के लिए ग्लू के साथ किया जाता है।अपनी 13 वर्षीय बेटी से यह कला सीखने वाली आईटी पेशेवर और लेखिका माला गुप्ता ने इंडिया हैबिटेट सेंटर में कागजेवर (पेपर जेवर) पर आज से पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन शुरू किया। गुप्ता ने बताया, ''मैंने अपनी बेटी से इसे एक दूसरे से लपेटना सीखा। इसका मुझ पर चिंतनशील प्रभाव पड़ा और दिनभर इस काम को करने के बाद मैंने अपने तनाव में कमी पाई।' उन्होंने बताया कि कार्यशाला से प्रतिभागियों को फिर से अपनी रचनात्मकता खोजने में मदद मिलेगी क्योंकि वे अपने कागज से जेवर तैयार करेंगे।' उन्होंने बताया, ''पिछले साल से अपनी बेटियों के साथ कार्यशालाओं का आयोजन कर रही गुप्ता ने अद्वितीय डिजायनों में कागज आभूषण की एक विस्तृत श्रृंखला तैयार की है।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आलस्य का त्याग करें। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। शुभांक-2-5-7

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। दिमाग में निर्मूल तर्क-कुतर्क पैदा होंगे। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी व अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। शुभांक-5-6-7

मिथुन (का की कू घ ड छ के को हा): परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। शुभांक-5-6-9

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। बुद्धि और धन का दुरूपयोग न करें व्यर्थ के आडम्बरों से बचें। अपनी परिसंपत्ति को संभालकर रखें। परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता हैं। मानसिक तनाव में बढ़ोतरी होगी। बाहरी सहयोग की अपेक्षा रहेगी। शुभांक-1-6-7

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। कार्यसिद्धि होने में देर नहीं लगेगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। शुभांक-2-5-6

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): शैक्षणिक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। परिवार में कोई मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। शुभांक-3-8-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): जमीन जायदाद का लाभ भी हो सकता है। आवास, मकान तथा वाहन की सुविधाएं मिलेंगी। कर्ज तथा रोगों से मुक्ति भी संभव है। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। रुपए पैसों की सुविधा मिल जाएगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। शुभांक-2-3-7

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। बनते हुए कार्यों में बाधा आएगी। धन से लाभ होने लगेगा। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। शुभांक-2-6-8

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): बढ़ते घाटे से कुछ राहत मिलने लगेगी। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। धार्मिक स्थलों की यात्रा का योग बना है। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। शुभांक-4-8-9

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। शैक्षणिक क्षेत्र में उदासीनता रहेगी। मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। कार्यक्षेत्र में तनाव पैदा होगा। खान-पान में सावधानी रखें। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे है। शुभांक-5-6-8

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-6-8-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-3-6-8

हंसी के फूव्वारें

सेकेंड क्लास के डिब्बे में बहुत ज्यादा भीड़ थी. एक यात्री ने उसमें चढ़ने की कोशिश की . तभी अन्दर से किसी ने कहा- 'इधर जगह नहीं है कोई दूसरा कम्पार्टमेंट देखिए!'

'अरे भई! मुझे तो सिर्फ खड़े रहने भर के लिए स्थान चाहिए.' बाहर वाले ने कहा.

'तो फिर प्लेटफार्म पर ही आराम से खड़े रहिए न. अन्दर आकर हमको क्यों तंग करते हो ?' अन्दर से तुरन्त आवाज आई.

❑ ❑ ❑

सुरेश को गम्भीर सोच में डूबे देखकर उसके मित्र नरेश ने पूछा- 'क्यों भई,इतनी गहराई से क्या सोच रहे हो ?'

'बेटे के कारण मैं बहुत परेशानी में हुँ . कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूँ ? मैं चाहता हूँ कि वह जज बने. बेटे की मां चाहती है कि वह प्रोफेसर बने और बेटा डाक्टर बनने की जिद किये बैठा है.'

'तुम्हारे लड़के की उम्र कितनी है?' नरेश ने जिज्ञासावश पूछा.

'चार साल !' सुरेश ने बताया.

इसपर नरेश ने अपना माथा पीट लिया.

❑ ❑ ❑

शालिनी - मेरे पिताजी का साहित्य में गहरा योगदान है.

रीतू -क्या वे बहुत बड़े लेखक हैं?

शालिनी ने कहा- नहीं, वे किताबों की जिल्दसाजी करते हैं.

काकुरो पहेली - 4048

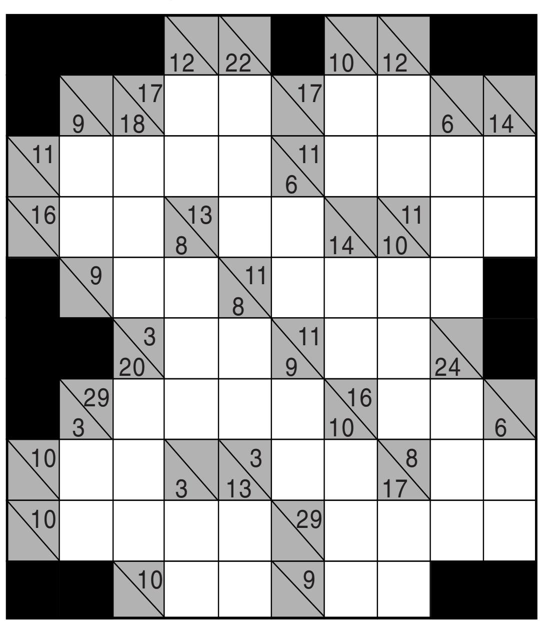

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

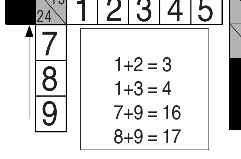

1+2 = 3
1+3 = 4
7+9 = 16
8+9 = 17

काकुरो - 4047 का हल

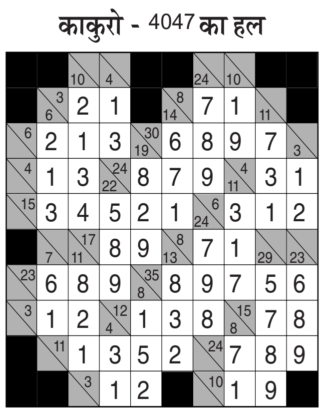

फिल्म वर्ग पहेली - 4048

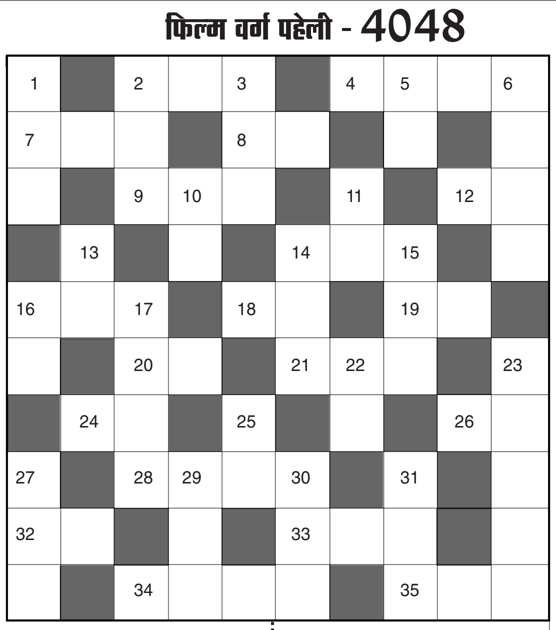

बायें से दायें:-

२. अक्षय खन्ना, सोनाली की 'ओ गोरी आजा' गीत वाली फिल्म-३
४. 'कहाँ से आई रानी' गीत वाली अजय, काजोल की फिल्म-२,२
७. आमिर, रानी मुखर्जी की 'आँखों से तूने' गीत वाली फिल्म-३
८. राजेश वाली 'हम दोनों' में हेमा के साथ दूसरी नायिका कौन थी?-२
९. अमिताभ, ऋषि, हेमा की 'चल चल मेरे भाई' गीत वाली फिल्म-३
१२. 'हिना' की पाक नायिका?-२
१४. धर्मेन्द्र, हेमा की 'प्यार के इस खेल में' गीत वाली फिल्म-३
१६. 'दिल में तुझे बिठाके' गीत वाली शशिकपूर, शबाना की फिल्म-३
१८. जैकी, अनिल, पूनम की 'हर करम अपना' गीत वाली फिल्म-२
१९. 'फिलहाल' में नायिका 'रेखा' की भूमिका किसने की है?-२
२०. सनीलदत्त, रीनाराय, आशा की 'जलता है जिया' गीतवाली फिल्म-२
२१. 'आ तेरी तसवीर' गीत वाली देवनंद, मधुबाला की फिल्म-३
२४. अनिल कपूर, पद्मिनी की 'वो सात दिन' के निर्देशक कौन थे?-२
२६. संजयदत्त, सलमान, रवीना की 'सुनो गौर से' गीत वाली फिल्म-२
२८. 'दिल दीवाने का' गीत वाली नसीर, धर्मेन्द्र, पल्लवी, एकता की फिल्म-४
३२. सनी, शिल्पा शेट्टी की 'आशिकी बनके' गीत वाली फिल्म-२
३३. 'दिल में जो बातें हैं' गीत वाली देवआनंद, हेमा की फिल्म-३
३४. नसीर, आदित्य, पूनम ढिल्लों, मंदाकिनी अभिनीत एक फिल्म-४
३५. आमिर, ग्रेसीसिंह की 'मधुबन में जो कन्हैया' गीत वाली फिल्म-३

ऊपर से नीचे:-

१. 'तुम रूठ के मत जाना' गीतवाली भारत भूषण, मधुबाला की फिल्म-३
२. रवीना, राईमा, संजीव सूरी की 'बहार ही बहार' गीत वाली फिल्म-३
३. 'चोरी चोरी जब नजरें' गीतवाली फिल्म-३
५. अनिल, गोविंद की 'दीवाना मस्ताना' की नायिका कौन थी?-२
६. 'रस्ते में वो खड़ा' गीतवाली सनी, रजनीकांत, श्रीदेवी की फिल्म-४
१०. राकेश रोशन, सिम्मी की 'जब भी ये दिल' गीत वाली फिल्म-२
११. 'अब चाहे सर फूटे' गीत वाली फिल्म-२
१३. संजयदत्त, टीना मुनीम की 'क्या यही प्यार है' गीत वाली फिल्म-२
१४. 'सावन के झूले पड़े' गीतवाली फिल्म-३
१५. 'फूल तुम्हें भेजा है' गीत वाली 'सरस्वतीचंद्र' की नायिका-३
१६. 'बार बार दिन ये आये' गीत वाली जीतेंद्र, बबीता की फिल्म-२
१७. राजेश खन्ना, हेमा की 'कहानियाँ सुनाती है' गीत वाली फिल्म-४
२२. 'पर्दे में कोई बैठा है' गीतवाली फिल्म-२
२३. चंकी, मिथुन, सोमी अली की 'क्या आँखें हैं' गीत वाली फिल्म-३,२
२५. 'भैया मेरे पापा को' गीत वाली फिल्म-२
२७. शबाना आजमी, श्वेता प्रसाद अभिनीत बाल फिल्म-३
२९. 'दिल नहीं देना' गीत वाली फिल्म-३
३०. फिल्म 'सपने' की नायिका कौन थी-३
३१. 'चोरी चोरी तेरे संग' गीत वाली मिथुन, आयशा की फिल्म-३

फिल्म वर्ग पहेली 4047

सूडोकु -4048

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -4046 हल

8	2	4	3	9	7	5	1	6
3	5	6	1	4	2	7	8	9
1	9	7	6	5	8	2	3	4
9	6	2	5	8	3	1	4	7
5	3	1	4	7	9	8	6	2
4	7	8	2	1	6	9	5	3
2	8	3	9	6	1	4	7	5
6	1	5	7	2	4	3	9	8
7	4	9	8	3	5	6	2	1

शब्द पहेली -4048

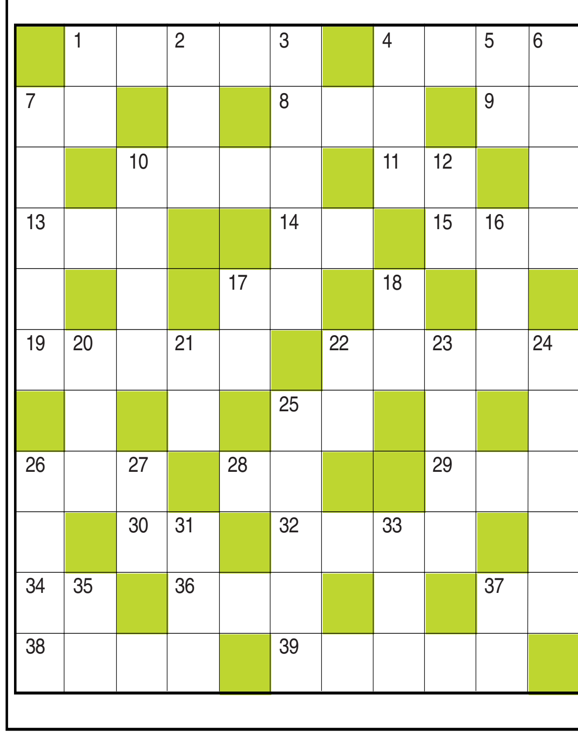

बाएँ से दाएँ

1.राजीव गांधी की पत्नी का नाम-3,2
4.उदारता,बडप्पन-4
7.भोजन,खाद्य पदार्थ-2
8.प्रहरी,रक्षा करने वाला-3
9.अपशिष्ट पदार्थ-2
10.कामदेव,चंद्रमा-4
11.नाड़ी,नस-2
13.जबरन,जबरदस्ती-3
14.वायदा,वचन-2
15.भवन,आलय-3
17.आर्ट,हुनर-2
19.ख्वाबगाह, आरामगाह, सोने का कमरा-5
22.उद्देश्यहीनता-5
25.परिणाम-2
26.अंजन,नेत्रांजन-3
28.सांझ,संध्या-2
29.अधीन-3
30.निश्चित-2
32.निष्ठावान,सत्तानिष्ठ-4
34.बेइमान,सेंधमार-2
36.दाम,मूल्य-3
37.एक छोटी सवारी गाड़ी-2
38.मुस्लिम कैलेंडर का एक महीना-4
39.अश्रु,आंसू-5

ऊपर से नीचे

1.स्वर्ण,कनक-2
2.गुजर करना-3
3.धैर्यवान-3,2
4.राशिचक्र की एक राशि-3
5.आंशिक भीगा हुआ-2
6.सामंजस्य-4
7.यायावर,बंजारा-5
10.चुनाव,वोटिंग-4
12.दुख,कष्ट-2
16.यज्ञ,होम-3
17.कमरा,रूम-2
18.उम्मीद,आस-2
20.जुड़वा-3
21.प्याला-2
22.हृदय,हार्ट-2
23.निकृष्टतर-4
24.बलवान,दमदार-5
25.स्वदेशवासी-5
26.आलसी,निठल्ली-4
27.बुरी आदत-2
31.भरोसा,विश्वास-3
33.आंचल,पल्लू-3
35.अंग्रेजी शराब का एक प्रकार-2
37.समय, वक्त-2

शब्द पहेली 4047 का हल

रामबन में भूस्खलन , जम्मू-कश्मीर राष्ट्रीय राजमार्ग बंद

एजेंसी

रामबन। जम्मू कश्मीर के रामबन में भूस्खलन की वजह से जम्मू-कश्मीर राष्ट्रीय राजमार्ग बंद हो गया है।अधिकारियों के अनुसार, चंबा सेरी, रामबन में बारिश व भूस्खलन के कारण जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर दोनों तरफ से वाहनों की आवाजाही के लिए बंद हो गई है। मार्ग से मालवा हटाया जा रहा है। यात्रियों को सलाह दी गई है कि वे मौसम में सुधार होने और सड़क साफ होने तक राष्ट्रीय राजमार्ग पर यात्रा न करें।

भारत-पाक सीमा से तीन ड्रग तस्कर गिरफ्तार

चंडीगढ़। पंजाब पुलिस एवं बॉर्डर सिक्युरिटी फोर्स (बीएसएफ) ने सीमावर्ती क्षेत्र अमृतसर में एक अभियान चलाकर तीन ड्रग तस्करों को गिरफ्तार करके उनके पास से हेरोइन, पिस्तौल व कारतूस बरामद किए हैं।

बीएसएफ प्रवक्ता ने बताया कि खुफिया शाखा की विशेष सूचना पर कार्रवाई करते हुए टीमों ने अमृतसर के अवानबसु गांव में तीन ड्रग तस्करों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपितों के पास से 25 ग्राम हेरोइन, एक पिस्तौल, मैगजीन और 4 जिंदा कारतूस, 2000 रुपये की ड्रग मनी, 4 स्मार्टफोन, एक मोटरसाइकिल और एक ट्रैक्टर बरामद किया। गिरफ्तार किए गए व्यक्ति अमृतसर जिले के कोटला और चक डोगर गांवों के रहने वाले हैं। उनके नेटवर्क और सीमा पार संबंधों का पता लगाने के लिए पुलिस पूछताछ कर रही है।

कांगड़ा हवाई अड्डा हाई अलर्ट पर, 9 मई तक सभी एअरलाइंस की फ्लाइट रद्द

धर्मशाला। 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद उपजे हालात के मद्देनजर हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा हवाई अड्डे को भी हाई अलर्ट पर रखा गया है जिसके चलते कांगड़ा हवाई अड्डे पर आने वाली सभी फ्लाइट को भी रद्द कर दिया गया है। वर्तमान हालात को देखते हुए कांगड़ा हवाई अड्डे पर सुरक्षा पहले से और अधिक बढ़ा दी गई है। हवाई अड्डे पर हर आने जाने वाले व्यक्ति व गाड़ियों की गहनता से जांच की जा रही है। उधर कांगड़ा हवाई अड्डे के निदेशक धीरेंद्र शर्मा ने बताया कि कांगड़ा हवाई अड्डे पर आज आने जाने वाली सभी फ्लाइट को रद्द कर दिया गया है। 9 मई 12 बजे तक इस हवाई अड्डे को बंद रखा जाएगा। धीरेंद्र शर्मा ने बताया कि किसी भी आपातकालीन स्थिति में वायुसेना इस हवाई अड्डे का इस्तेमाल कर सकती है। उन्होंने बताया कि हाई अलर्ट पर आने के बाद कांगड़ा हवाई अड्डे पर अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था में बढ़ोतरी की गई है और किसी भी व्यक्ति को कांगड़ा हवाई अड्डे में प्रवेश की अनुमति नहीं है। उन्होंने कहा कि आगामी आदेशों तक कांगड़ा हवाई अड्डे को इसी तरह बंद रखा जाएगा। धीरेंद्र शर्मा ने बताया कि आज जिन लोगों की फ्लाइट रद्द की गई है वह सभी लोग एअरलाइंस कम्पनी के संपर्क में रहें और किस तरह से ग्राहकों का पैसा वापिस किया जाना है उस पर भी सभी एअरलाइंस के कर्मचारी कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांगड़ा हवाई अड्डे पर पहुंचने वाले सभी यात्रियों को भी हवाई अड्डे के कर्मचारियों द्वारा उचित मार्गदर्शन दिया जा रहा है ताकि किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना एअरलाइंस के ग्राहकों को न करना पड़े।

कर्रेगुट्टा मुठभेड़ में 22 नक्सली ढेर, मुख्यमंत्री साय बोले- सुरक्षाबलों ने बड़ी सफलता हासिल की

बीजापुर। जिले में तेलंगाना की सीमा से लगी कर्रेगुट्टा की पहाड़ी पर जारी नक्सल विरोध अभियान के दौरान सुरक्षाबलों को बड़ी सफलता मिली है। सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में 22 नक्सलियों को ढेर कर दिया है। मारे गए नक्सलियों में बड़े कैडर के नक्सली भी हो सकते हैं। अभी नक्सलियों के साथ भीषण मुठभेड़ जारी है। मुठभेड़ में मारे जाने वाले नक्सलियों की संख्या और भी बड़ा सकती है। मुठभेड़ की पुष्टि करते हुए छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने भी अपने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि बीजापुर जिले के कर्रेगुटा पहाड़ी में चल रहे नक्सल विरोधी अभियान में हमारे सुरक्षाबलों ने एक बड़ी सफलता हासिल की है। मुठभेड़ में अब तक 22 से अधिक नक्सलियों के मारे जाने की खबर है। लाल आतंक के विरुद्ध चल रही निर्णायक लड़ाई में हमारे वीर जवानों के अदम्य साहस, पराक्रम और बलिदान को शत-शत नमन करता हूं। मुख्यमंत्री ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने संकल्प लिया है कि 31 मार्च 2026 तक देश को नक्सलवाद से मुक्त करना है और हम इस लक्ष्य की ओर तेज़ी से अग्रसर हैं। तेलंगाना राज्य की सीमा से लगी कर्रेगुट्टा की पहाड़ी पर अब तक का सबसे लंबा नक्सल विरोधी अभियान 15 दिन से चल रहा है। फिलहाल यहां मुठभेड़ के जारी है।

पाकिस्तान नहीं आ रहा बाज, कुपवाड़ा, बारामूला, उरी और अखनूर में नियंत्रण रेखा पर सीमा पार से की गोलाबारी

एजेंसी

श्रीनगर। भारत के पहलगाम आतंकी हमला का बदला लेने के बाद पाकिस्तान दुनिया के सामने गिड़गिड़ा जरूर रहा है पर उसकी फौज जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा और अंतरराष्ट्रीय सीमा पर गोलीबारी और गोलाबारी करने से बाज नहीं आ रही। पाकिस्तान की फौज ने आज तड़के से कुछ पहले कुपवाड़ा, बारामूला, उरी और अखनूर इलाकों में नियंत्रण रेखा पर सीमा पार से गोलाबारी की।

इससे एक दिन पहले भारतीय सशस्त्र बल 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पड़ोसी मुल्क के मजबूत आतंकी ढांचों को तहस-नहर कर चुका है। सैन्य अधिकारियों के अनुसार, 07-98 मई की रात को पाकिस्तानी सेना की चौकियों ने जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा, बारामूला, उरी और अखनूर इलाकों में नियंत्रण रेखा के पार छोटे हथियारों और तोपों से बिना उकसावे के गोलीबारी की। भारतीय सेना ने इसका उचित जवाब दिया है। जम्मू-कश्मीर के अधिकारियों ने बताया कि पाकिस्तान ने आधी रात बाद गोले और मोर्टार दागकर करनाह इलाके में

नागरिक इलाकों को निशाना बनाया। भारतीय सशस्त्र बलों ने बिना उकसावे के की गई इस कार्रवाई का प्रभावी ढंग से जवाब दिया। अभी तक किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान सेना के गोलाबारी शुरू करने के बाद करनाह में अधिकांश नागरिक सुरक्षित ठिकानों में चले गए हैं। ऑपरेशन सिंदूर के बाद सुरक्षा कारणों से जम्मू और कश्मीर संभाग के कई जिलों में शिक्षण संस्थान बंद रहे। कुछ में परीक्षाएं भी स्थगित कर दी गईं। पूरे कश्मीर में केंद्रीय नियंत्रण कक्ष स्थापित किए गए। जिला मजिस्ट्रेट ने कहा, मौजूदा स्थिति को देखते हुए जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण श्रीनगर की समग्र निगरानी में जिला आपातकालीन संचालन केंद्र , श्रीनगर के उपायुक्त कार्यालय में एक संयुक्त नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है। कश्मीर के 10 जिलों में इसी तरह के नियंत्रण कक्ष स्थापित किए गए हैं। जम्मू संभाग में सीमा से लगे पांच जिलों में जम्मू, सांबा, कठुआ, पुंछ, राजोरी जिलों में स्कूल-कॉलेज बंद रहे। इनमें निजी स्कूल भी शामिल रहे। जम्मू विश्वविद्यालय ने प्रस्तावित सभी परीक्षाएं स्थगित दी हैं। इसके अलावा क्लस्टर विश्वविद्यालय, आईआईएम, आईआईटी जम्मू में भी शैक्षणिक गतिविधियां नहीं हुईं। कश्मीर संभाग में श्रीनगर हवाई अड्डे के आसपास, बारामूला, कुपवाड़ा, गुरेज सहित कई जिलों में शैक्षणिक संस्थान बंद रहे। इन जिलों में भी परीक्षा स्थगित कर दी गई। कश्मीर विश्वविद्यालय की अधिसूचना में 10 मई तक सभी परीक्षाएं स्थगित करने की घोषणा की गई है।

अमित शाह से मुलाकात के बाद बोलीं ममता बनर्जी- आतंक के खिलाफ जंग में हम साथ

एजेंसी

कोलकाता। भारत-पाकिस्तान सीमा पर तनाव के बीच पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से बैठक के बाद देशवासियों को संयम और एकता का संदेश दिया है। उन्होंने साफ कहा कि यह समय कंधे से कंधा मिलाकर देश के लिए काम करने का है और किसी भी तरह की अफवाह या भय की कोई ज़रूरत नहीं है। ममता बनर्जी ने कहा, हम सबने मिलकर काम करने का फैसला लिया है। लोगों को अनावश्यक रूप से भयभीत होने की कोई जरूरत नहीं है। उन्होंने पुलिस और प्रशासन के सभी स्तरों को सतर्क रहने का निर्देश दिया है और बताया कि सभी जिलों के डीएम, एसपी और थाना अधिकारियों को निगरानी बढ़ाने को कहा गया है। यह बैठक उस वक्त हुई है जब 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर के नौ ठिकानों पर हमला किया है। इस कार्रवाई के बाद पाकिस्तान ने भी सीमा पर गोलाबारी तेज कर दी है, जिससे हालात और तनावपूर्ण हो गए हैं। इन्हीं हालातों को देखते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नेपाल और पाकिस्तान की सीमा से सटे 10 राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ एक आपात बैठक की। इस बैठक में जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, सिक्किम और पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री, पुलिस महानिदेशक और वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। हालांकि ममता बनर्जी ने बैठक के विषयवस्तु पर विस्तार से कुछ नहीं कहा, लेकिन इतना जरूर कहा कि हम सब देश के साथ हैं। उन्होंने जनता से अपील की कि बिना पुष्टि के किसी भी खबर पर विश्वास न करें। ममता ने कहा, भ्रम फैलाने वाली और भड़काऊ खबरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

उत्तराखंड में छह तीर्थयात्रियों को गंगोत्री धाम ले जा रहा हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त

एजेंसी

उत्तरकाशी। उत्तराखंड में आज सवेरे लगभग 8:45 बजे एक हेलीकॉप्टर गंगनानी के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसमें छह तीर्थयात्री और पायलट समेत सात लोग हैं। हेलीकॉप्टर तीर्थयात्रियों को लेकर गंगोत्री धाम जा रहा था। जिला आपदा प्रबंधन की टीम मौके पर पहुंची चुकी है। रेस्क्यू ऑपरेशन चल रहा है। रेस्क्यू ऑपरेशन में पुलिस, फोर्स, आपदा प्रबंधन क्यूआरटी, टीम 108 एंबुलेंस वाहन, तहसीलदार भटवाड़ी, बीडीओ भटवाड़ी, राजस्व टीम शामिल है। एसडीआरएफ की टीम भी पहुंच चुकी है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि हेलीकॉप्टर हादसे में कुछ लोगों के हताहत होने का अत्यंत दुःखद समाचार प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि ईश्वर दिवंगत आत्माओं को श्रीचरणों में स्थान एवं शोकाकुल परिजनों को यह असीम दुःख सहन

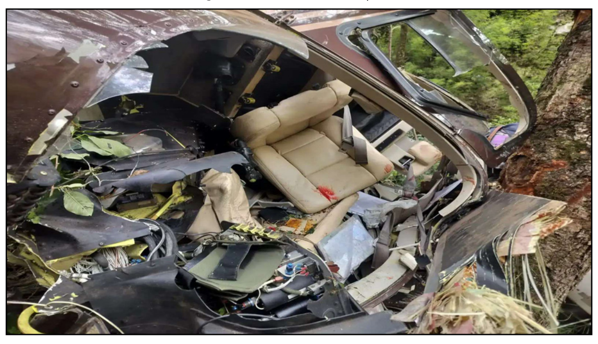

करने की शक्ति प्रदान करें। उन्होंने कहा कि हादसे की जांच के निर्देश दिए गए हैं। यह हेलीकॉप्टर एयरोट्रांस सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का है। इसकी रजिस्ट्रेशन संख्या वीटी-ओएक्सएफ है। हेलीकॉप्टर सहस्त्रधारा हेलीपैड, देहरादून से खरसाली हेलीपैड के लिए उड़ान पर था। हेलीकॉप्टर के पायलट कैप्टन रॉबिन सिंह थे। हेलीकॉप्टर में कुल सात व्यक्ति सवार थे। इनमें एक पायलट और छह यात्री शामिल हैं।

सेना के ऑपरेशन सिंदूर पर हमें गर्व है: रेवंथ रेड्डी

एजेंसी

हैदराबाद। आतंकवाद के खिलाफ भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान में स्थित आतंकी ठिकानों पर सैन्य कार्रवाई का तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने गर्व जताया। मुख्यमंत्री ने सैन्य कार्रवाई के बाद राज्य के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। मुख्यमंत्री ने सेना के प्रति सम्मान और एकजुटता का प्रदर्शन करने के लिए एक रैली निकालने का ऐलान किया। मुख्यमंत्री रेवंथ रेड्डी ने 'एक्स' पर पोस्ट किया कि एक भारतीय नागरिक के तौर पर उन्हें पाकिस्तान में आतंकी शिविरों पर हमारी सेना का 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत कार्रवाई पर गर्व है। देश के सभी नागरिकों के लिए एक साथ खड़े होने और एकता दिखाने का समय आ गया है। 'जय हिंद'।मुख्यमंत्री ने राज्य में उत्पन्न परिस्थितियों को लेकर बुधवार को सचिवालय में एक समीक्षा बैठक की और सभी विभागों को अलर्ट रहने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि आज देर शाम को अंधेरे के बाद शहर के विभिन्न भागों में होने वाली मॉक ड्रिल की वे खुद निगरानी करेंगे। बैठक में मुख्यमंत्री रेड्डी ने कहा कि हमें यह संदेश देना चाहिए कि हम सब 'ऑपरेशन सिंदूर' के मद्देनजर सेना के साथ हैं। ऐसे समय में राजनीति के लिए कोई जगह नहीं है। उन्होंने आपातकालीन सेवाएं प्रदान करने वाले विभागों के अधिकारियों व कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द की जा रही हैं। मुख्यमंत्री ने मंत्रियों और अधिकारियों को विदेश यात्राएं रद्द करने का आदेश दिया। उन्होंने मीडिया और सोशल मीडिया में अनावश्यक घोषणाएं करने वाले के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

रेवंत रेड्डी ने एक टोल-फ्री नंबर जारी करनेका आदेश दिया, जो जनता के लिए 24 घंटे उपलब्ध रहेगा। मुख्यमंत्री ने कहा है कि भारतीय सेना के प्रति सम्मान और समर्थन के साथ अपनी एकजुटता का प्रदर्शन करने के लिए गुरुवार शाम 6 बजे एक रैली निकालने का ऐलान किया। यह रैली सचिवालय से शहर के नेकलेस रोड तक जाएगी।

एयर स्ट्राइक के बाद राजस्थान में हाई अलर्ट, जोधपुर-किशनगढ़ एयरपोर्ट 10 मई तक बंद

एजेंसी

जयपुर। पाकिस्तान में हुई एयर स्ट्राइक के बाद राजस्थान में हाई अलर्ट जारी कर दिया गया है। सुरक्षा के मद्देनज़र जोधपुर और किशनगढ़ एयरपोर्ट से 10 मई तक सभी फ्लाइट्स रद्द कर दी गई है। वहीं, बीकानेर एयरपोर्ट को एक दिन के लिए बंद किया गया है। इंडिगो एयरलाइंस ने बीकानेर से 10 मई तक अपनी सभी उड़ानें रद्द कर दी हैं। उत्तर-पश्चिम रेलवे ने भी एहतियातन अपने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द कर दी हैं और तत्काल ड्यूटी पर लौटने का आदेश जारी किया गया है। बॉर्डर से सटे जिलों श्रीगंगानगर, बाड़मेर, जैसलमेर और बीकानेर में स्कूलों की छुट्टी घोषित कर दी गई है। जिला कलेक्टरों के आदेश पर इन जिलों में सभी परीक्षाएं स्थगित कर दी गईं। बीकानेर और श्रीगंगानगर में सरकारी

कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द कर उन्हें मुख्यालय नहीं छोड़ने का निर्देश दिया गया है। आपात स्थिति से निपटने के लिए जोधपुर के मथुरादास माथुर (एमडीएम) अस्पताल में 120 बेड आरक्षित किए गए हैं। इनमें से 50 बेड मातृ एवं शिशु विंग, 50 मुख्य बिल्डिंग में और 20 बेड मल्टीलेवल आईसीयू में रखे गए हैं। अस्पताल प्रशासन ने सभी जरूरी मेडिकल व्यवस्थाएं दुरुस्त कर दी हैं। किशनगढ़ हवाई अड्डे से बुधवार से अगले तीन दिन तक सभी नागरिक उड़ानों का संचालन अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया है। एयरपोर्ट निदेशक बीएल मीणा ने बताया कि यह निर्णय सुरक्षा कारणों को ध्यान में रखते हुए लिया गया है और सभी उड़ानें अब 10 मई की सुबह 5:29 बजे तक स्थगित रहेंगी। इस दौरान एयरपोर्ट से कोई भी सिविल फ्लाइट न तो उड़ान भरेगी और न ही वहां उतरेगी। स्टार एयरलाइंस ने एक एडवाइजरी जारी कर हिंडन व नांदेड़ के लिए उड़ान रद्द करने की जानकारी दी थी। इसके बाद कंपनी के प्रतिनिधि अजय सहाय जसरा ने बताया कि सुरक्षा कारणों से स्टार एयर की नांदेड, हिंडन, आदमपुर, किशनगढ़ और भुज के लिए/से संचालित सभी उड़ानें बुधवार के दिन के लिए रद्द कर दी गई हैं।

ऑपरेशन सिंदूर की कामयाबी के बाद बढ़ाई गयी बिहार के मुख्यमंत्री आवास की सुरक्षा व्यवस्था

एजेंसी

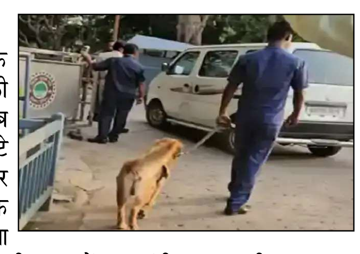

पटना। पाकिस्तान के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर की कामयाबी के बाद अब अंतरराष्ट्रीय सीमाओं से सटे राज्यों की सुरक्षा को और मजबूत कर दिया गया है। इसके तहत बिहार की सुरक्षा व्यवस्था भी कड़ी कर दी गयी है। राजधानी पटना में मुख्यमंत्री आवास की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। यहां आनेवाली सभी गाड़ियों की चेकिंग के लिए डॉग स्क्वायड की टीम तैनात कर दी गई है। मुख्यमंत्री आवास में जानेवाली किसी प्राइवेट गाड़ी को बिना डॉग स्क्वायड की टीम की जांच के बगैर जाने की अनुमति नहीं होगी।

अमित शाह ने की थी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से बात

पाकिस्तान और नेपाल से सटे भारतीय सीमाओं पर सुरक्षा को लेकर केंद्र सरकार सतर्क हो गई है। इसी के तहत केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एक आपात बैठक बुलाई, जिसमें सीमावर्ती राज्यों के मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक शामिल हुए। यह बैठक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए हुई और इसका उद्देश्य भारत की आंतरिक सुरक्षा की समीक्षा करना था।

युवा सशक्तिकरण के लिए कौशल विकास के साथ मिशन मोड में आगे बढ़ रही योगी सरकार

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को 1 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचाने के लक्ष्य को लेकर योगी सरकार ने 'कौशल' को आधार बनाकर मिशन मोड में कदम बढ़ा दिए हैं। इसके अंतर्गत युवाओं को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण के साथ ही कौशल योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक युवाओं को दिए जाने पर बल दिया गया। इसके साथ ही, प्रशिक्षण में स्थानीय आवश्यकताओं और आधुनिक तकनीकों को जोड़ने के साथ औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों और कौशल विकास मिशन को मिलकर रोजगार उन्मुख पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की भी योजना है। प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमशीलता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन

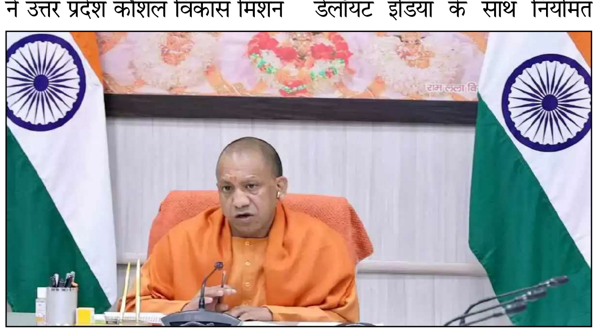

कार्यालय, लखनऊ में डेलॉयट इंडिया के प्रतिनिधियों के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक में कौशल विकास योजनाओं की वर्तमान प्रगति और भविष्य की दिशा पर विस्तार से चर्चा हुई। मंत्री ने निर्देश दिया कि डेलॉयट इंडिया के साथ नियमित बैठक कर आगामी दो वर्षों की प्रगति रिपोर्ट तैयार की जाए। साथ ही, यह भी सुनिश्चित किया जाए कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में चल रही कौशल योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक युवाओं को मिले। बैठक में मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि युवाओं को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण दिया जाए, जिससे वे रोजगार के लिए भटकने को मजबूर न हों। राज्यमंत्री ने कहा कि अप्रेंटिसशिप को बढ़ावा देना सरकार की प्राथमिकता है। इसके लिए विभिन्न संस्थानों से निरंतर संवाद किया जाए और अधिकाधिक अवसर युवाओं को प्रदान किए जाएं। उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि योजनाओं की समीक्षा छात्रों की प्रतिक्रिया से हो, जिसके लिए रैंडम कॉल और फील्ड निरीक्षण कर छात्रों से सीधे संवाद स्थापित किया जाए।

जाति जनगणना के सदैव विरोध में रहे कांग्रेस-सपा सहित इंडी गठबंधन के घटक दल : डॉ. के. लक्ष्मण

एजेंसी

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी के पिछड़ा वर्ग मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. के. लक्ष्मण ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जातीय जनगणना कराये जाने का फैसला लेकर भारत की राजनीति में एक नया इतिहास लिखने का काम किया है। इससे अन्य पिछड़े एवं अति पिछड़े वर्ग के लोगों को अपनी संख्या के अनुपात में संवैधानिक अधिकारों को पाने का अवसर मिलेगा। पिछड़ा वर्ग मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के. लक्ष्मण राजधानी लखनऊ के सहकारिता भवन में संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस-सपा सहित इंडी गठबंधन के तमाम घटक दल जाति आधारित जनगणना के सदैव विरोध में रहे। अधिकांश समय में कांग्रेस पार्टी या गैर भाजपा दलों

की सरकारें देश में रही हैं, लेकिन अफसोस कि गैर भाजपाई किसी भी सरकार ने जातीय जनगणना कराने का कभी साहस नहीं जुटाया। लक्ष्मण ने कहा कि देश इस बात को जानता है कि अन्तिम रूप से जातीय जनगणना आजादी के पूर्व वर्ष 1931 में हुई थी। इसके बाद जातीय जनगणना नहीं हुई। आज राहुल गांधी, अखिलेश यादव तथा तेजस्वी यादव जैसे अनेक पिछड़ा वर्ग विरोधी सोच रखने वाले मोदी के जातीय जनगणना कराने के फैसले का श्रेय लेने की होड़ में खड़े हो गये हैं। अच्छा होता कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल जैसे सभी गैर भाजपाई दलों के नेता भारत के पिछड़े वर्ग के लोगों से माफी मांगते। कार्यक्रम में भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष व उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री नरेन्द्र कश्यप ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जातीय जनगणना के फैसले से आज पिछड़े वर्ग के लोगों में जश्न का माहौल है, लोग खुशियां मना रहे हैं, लड्डू बांट रहे हैं तथा ढोल-बैण्ड बाजे बजाकर प्रधानमंत्री के फैसले का स्वागत कर रहे हैं। क्योंकि जातीय जनगणना होने से सामाजिक न्याय एवं संवैधानिक अधिकारों को पाने के नये अवसर मिलने वाले हैं।

बीकानेर में ज्वेलरी शॉप में सिलेंडर ब्लास्ट, तीन लोगों की मौत

एजेंसी

बीकानेर। शहर के सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र में एक ज्वेलरी शॉप में एलपीजी सिलेंडर ब्लास्ट हो गया। हादसे में 3 लोगों की मौत हो गई, जबकि कुछ के अभी भी अंदर फंसे होने की आशंका है। पुलिस और स्थानीय लोग लगातार रेस्क्यू कर रहे हैं। ब्लास्ट इतना भीषण था कि शॉप में रखा सामान सड़क तक उड़कर आ गया। घटना में घायल पांच लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना सिटी कोतवाली के पास स्थित मथुरा मार्केट में हुई हैजानकारी के अनुसार, मथुरा मार्केट में स्थित बिल्डिंग में कई छोटी-छोटी शॉप हैं, जहां सोने-चांदी के गहने बनाए जाते हैं। इन शॉप में एलपीजी गैस सिलेंडर का उपयोग किया जाता है। घटना के समय कई लोग अंडरग्राउंड में काम कर रहे थे। अब तक पांच लोगों को बचाया जा चुका है, लेकिन अभी भी कुछ लोगों के अंदर फंसे होने की आशंका जताई जा रही है। जांच में सामने आया है कि यह बिल्डिंग अवैध रूप से निर्मित की गई है। शॉप के नीचे दो फ्लोर का बेसमेंट है, जहां सुरक्षा का कोई इंतजाम नहीं है। एक साथ बड़ी संख्या में मजदूर छोटी जगह में काम करते हैं, जो सुरक्षा की दृष्टि से चिंताजनक है। घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और राहत-बचाव कार्य शुरू किया।

आपरेशन सिंदूर पर पहलगाम हमले में बलिदान आईएएफ कॉर्पोरल हैल्यांग की पत्नी ने जताई खुशी

एजेंसी

इटानगर। पहलगाम नरसंहार में बलिदान हुए भारतीय वायु सेना (आईएएफ) के कॉर्पोरल तागे हैल्यांग की पत्नी चारो कोमहुआ तागे ने आज भारतीय सेना द्वारा चलाए गए अपरेशन सिंदूर का स्वागत करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की है। अरुणचल प्रदेश के लोवार सुवनसिरी जिला, जिरो निवासी कोमहुआ ने कहा कि भारतीय सेना द्वारा आतंकवादियों के 9 ठिकानों पर किये गये हमले की खबर सुन कर आज मुझे बहुत खुशी महसूस हो रही हैं। उन्होंने कहा कि आतंकवादियों ने मेरे पति के साथ-साथ कई अन्य निर्दोश लोगों की निर्मम हत्या की है। कोमहुआ ने कहा कि अगर चाहते तो मेरे पति और मैं

वहां से भागकर अपनी जान बचा सकते थे, लेकिन मेरे पति एक फौजी होने के नाते उन्होंने अपनी जान की परवाह किये बिना लोगों को बचाने में जुटे रहे, इसी दौरान आतंकियों ने मेरे सामने ही उन्हें गोलीमार कर उनकी हत्या कर दी।

इस बात का जिक्र करते हुए उनकी आंखे डबडबा गयीं। उन्होंने भारत सरकार से आतंकवादियों को जड़ से समाप्त करने की अपील कि ताकि भविष्य में पहलगाम जैसी घटना दुवारा ना हो। वहीं, अरुणाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव किपा काहा ने भी आपरेशन सिंदूर का स्वागत करते हुए कहा कि इस समय हम देश और सरकार के साथ हैं। उन्होंने देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और विपक्ष के नेता राहुल गंधी के निर्णय की प्रशंसा करते हुए कहा कि आतंकियों के खिलाफ और कठोर फैसला लेना चाहिये। साथ ही हमें अपनी जमीन पाकिस्तान शासन वाले क्षेत्र पीओके को भी वापस लेना चाहिए, क्योंकि वह भी हमारी जमीन है। इस समय देश के सभी लोगों सरकार के साथ हैं।

वेकेशन में अपने बच्चों को बिजी रखने के लिए अपनाएं ये तरीकें

बच्चों को गर्मियों की छुट्टियां होते ही ज्यादातर पेरेंट्स अपने बच्चों के साथ वेकेशन मनाने की तैयारी पहले से ही करने लगते हैं। हर मां-बाप चाहते है कि उनके बच्चे अपनी छुट्टियां मौज और मसती से बिताएं। ऐसे में हर बच्चे का मन होता है कि वह अपने पेरेंट्स के साथ किसी वेकेशन पर जाएं। पर कुछ पेरेंट्स काम में बिजी होने के कारण बच्चों के साथ वेकेशन पर नहीं जा पाते। इसलिए आज हम पेरेंट्स को कुछ ऐसे टिप्स बताएगें जिसे वह अपने बच्चों को वेकेशन में बिज़ी रख सकते है। तो आइए जानते हैं...

- एक्टिविटीज़ में भाग लेने के लिए भेजें

माता-पिता को चाहिए कि वह अपने बच्चों को घर में बिठाने की जगह स्कूल में ऑर्गनाइज़ की जानेवाली एक्स्ट्राकुरिकलर एक्टिविटी में भेजें। ऐसा करने से वह अपने स्कूल फ्रेंड्स के साथ एक्टिविटीज़ में भाग लेने के लिए आसानी से तैयार भी हो जाएगें।

- समर कैंप

गर्मी की छुट्टियों में समर कैंप लगाने के लिए बच्चों की एडमिशन करवा

दें क्योंकि इन कैंप को लगाने से आपके बच्चों को अलग अनुभव मिलता है और साथ ही वह स्वतंत्र रूप से चीज़ों को मैनेज करना भी सीख सकते हैं।

- क्रिएटिव आर्ट क्लासेस

जो बच्चे क्रिएटिव आर्ट का शौक रखते हैं तो उन्हें उसका शौक पूरा करने के लिए के लिए गर्मी की छुट्टियों में क्रिएटिव आर्ट क्लासेस जरूर ज्वाइन करवाएं। ऐसा करने से उनकी छुट्टियां बोरिंग नहीं होगी और वह मौज-मस्ती से अपने दोस्ते के साथ अपनी वेकेशन को बिता सकेगे।

- रुटीन एक्सरसाइज़ क्लासेस लगाएं

अगर आप अपने बच्चों को वेकेशन में कहीं घुमाने के लिए नहीं लेकर जा सकते तो छुट्टियों में बच्चों को घर में बैठाने की जगह रूटीन एक्सरसाइज़ जैसे कि योगा, कराटे, स्वीमिंग कलासेस आदि लगाने के लिए प्रेरित करें।

- घर में आपके साथ मदद करने के लिए कहें

छुट्टियों में बच्चों को बिजी रखना चाहते है तो आप अपने साथ घर के छोटे-छोटे कामों में बच्चों को मदद भी ले सकते हैं। जैसे कि आप बच्चों के कमरे में पड़ी बुक और टॉय को अच्छे से अरेंज कर सकते हैं। ऐसा करने से आपके बच्चें बिज़ी तो रहेगे ही साथ ही वह क्लीनलीनेस और डिसिप्लीन भी सिखेंगे।

- फैमिली ट्रिप पर साथ लेकर जाएं

बच्चों की वेकेशन में उन्हें घूमाने के लिए फैमिली ट्रिप प्लान करें। ऐसा करने से आप अपने बच्चों के साथ क्वालिटी टाइम बिता सकते है और बच्चे इस फैमिली ट्रिप को हमेशा याद भी रखेगे।

बच्चे के साथ सोने के हैं बहुत सारे फायदे

पेरेंट्स अपने काम में इतना ज्यादा व्यस्त रहते हैं कि उनके पास बच्चो के लिए टाइम ही नहीं होता। भागदौड़ की जिंदगी और बदलती जीवनशैली के कारण वह दिनभर तो बच्चों के साथ टाइम बिता नहीं पाते, पर इस दूरी को कम करने के लिए वह रात को बच्चों के साथ सोते हैं। आज हम आपको बच्चों के साथ सोने से फायदों के बारें में बताएगें। तो आइए जानते हैं...

- सुरक्षित महसूस करना

बच्चे अक्सर रात को अकेले सोने से डर कर उठ जाते हैं और उनकी नींद पूरी नहीं होती। ऐसे में स्वयं को असुरक्षित महसूस करते हैं। कभी-कभी तो बच्चे डर कर भी रोने लगते हैं। ऐसे बच्चें अक्सर अपने मां-बाप के साथ स्वयं को सुरक्षित महसूस करते है।

- हेल्दी बैड टाइम रूटीन

समय पर सोने से नींद तो अच्छी आती ही है साथ ही हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। इसलिए पेरेंट्स को चाहिए कि वह बच्चों में हेल्दी बैड टाइम रूटीन डालने के लिए उनके साथ ही सोएं।

- मानसिक रूप से करीब

रात को बच्चों के साथ सोने आप उनके दिन की हर हरकत के बारे में आसानी से पूछ सकते हैं। ऐसा करने से आपका बच्चा आपके साथ अपने दिल की सारी बातें बताएगा। अगर उसे कोई परेशानी है तो वह आपसे कहेगा और बिना किसी मानसिक परेशानी लिए आराम से सो पाएगा।

- समय बिताना

यदि आपका बच्चा हर रोज आपसे कहानी सुन कर सोता है तो इसका मतलब है कि उसकी सोने की इच्छा नहीं है और आपके साथ कुछ वक्त बिताना चाहता है। इसलिए जो मां-बाप अपने बच्चों के साथ दिन में समय नहीं बिता पाते वह रात को बच्चों के साथ समय बिताने के लिए जरूर सोएं। - अच्छे संस्कार जो बच्चे रात के समय अपने पेरेंट्स के साथ सोते हैं उन्हें कहानियां सुना कर आप अच्छे संसकार दे सकते हैं। इन कहानियों से उन्हें बहुत सारी सीख भी मिलती है जिन्हें वह हमेशा याद रखते हैं।

- आत्मसम्मान में वृद्धि

जो बच्चे अपने पेरेंट्स के साथ सोते हैं उनमें आत्मसम्?मान में वृद्धि होती है। ऐसे बच्चे किसी के दबाव में कम रहते हैं और वह ज्यादा खुश रहते हैं।

इन लक्षणों से पहचानें बच्चे की नजर कमजोर है

पहले मनोरंजन के नाम पर बच्चे बहुत सारे खेल खेलते थे, जिसमें ज्यादातर आऊटडोर गेम्स शामिल होते थे। वह अपना अधिकतम समय कहानी सुन कर या खेल-कूद में बिताया करते है लेकिन अब तो टैलीविजन, वीडियो गेम्स और कंप्यूटर ही उनकी पहली पसंद बन गए हैं। टैलीविजन और वीडियो गेम्स के सामने बैठे वह अपने शरीर को बिलकुल भी हिलाना पसंद नहीं करते। लेकिन यह पैरेंट्स की जिम्मेदारी बनती हैं कि वह अपने बच्चों के स्वास्थय का पूरा ध्यान रखें। बच्चे के शरीर की तरह उनकी आंखें भी बहुत कोमल होती है। अगर छोटी उम्र में ही चश्मा लग जाएं तो पूरी उम्र उससे पिछा नहीं छुटता। यदि आपको यह लगता है कि आपके बच्चे की नजर कमजोर हो रही हैं तो नीचे दिए गए लक्षणों को ध्यान में रखें। अगर लक्षण दिखाई दे तो तुरंत आंखों की जांच करवाएं।

1. बार-बार आंखों को मलना यह बच्चों की कमजोर नजर की निशानी हो सकती है। वैसे कई बच्चों को वैसे भी आंखें मलने की आदत होती है।
2. लगातार सिर दर्द की होने के पीछे कई कारण हो सकते हैं लेकिन लेकिन अगर बच्चे को टीवी देखते या पढ़ाई करते समय सिर दर्द हो तो यह आई साइड विक की निशानी हो सकती है। 3. अगर बच्चा एक आंख बंद करके टीवी देखें या वीडियो गेम खेले तो समझ लें कि उसे चश्मा लगने वाला है।
4. तेज रोशनी में पलके झपकना और धीमी रोशनी को ओर बढ़ते वक्त धब्बे नजर आते हैं तो यह लक्षण विटामिन की कमी के हैं। अपने बच्चे के आहार में विटामिन ए की मात्रा को बढ़ाएं और उसे रोज सुबह गाजर का जूस पिलाएं।
5. भेंगापन कई बार बच्चे मज़ाक में भी अपनी नजरों को तिरछा करते हैं। यदि ये मजाक ना होकर हर दूसरे, तीसरे दिन की आदत बनती जा रही है तो अपने बच्चे की आंखों का इलाज कराएं।
6. सिर को बार-बार घुमाना भी कमजोर नजर का एक लक्षण है। यदि आपका बच्चा टी.वी. देखते समय बीच-बीच में आंखों को बंद करके सिर को हिलाता रहता है, तब इस लक्षण पर ध्यान दें।
7. अगर बच्चे को दूर से कोई चीज साफ ना नज़र आए और वह उसे देखने के लिए बहुत करीब आए तो बच्चे की नजर जरूर चैक करवाएं।
8. आई बॉल की गति से लक्षण को पहचानना मुश्किल हो सकता है। इस लक्षण को पहचाने के लिए बात करते वक्त आपको अपने बच्चे की आंखों को गौर से देखना होगा। यदि आई बॉल की गति में कुछ भिन्नता नज़र आए तो तुरंत एक नेत्र विशेषज्ञ से संपर्क करें।
9. नींद पूरी ना होने के कारण भी बच्चों की आंखें लाल हो सकती हैं लेकिन रोज लालगी आती है तो नजर टेस्ट जरूर करवाएं।
10. आंखों में दर्द के कारण बच्चे को आंखों में चुभन महसूस होती है तथा उसके आंखों से पानी भी आने लगता है तो समझ लें आंखों की रोशनी कम हो

मां-बाप की लड़ाई में क्यों पिसे बच्चा?

बच्चों के व्यवहार पर उसके माता-पिता के व्यवहार की छाप दिखाई देती है। यह बात बहुत सारी रिसर्च में भी कहीं गई है कि बच्चे के व्यवहार में 90 प्रतिशत असर उसके अभिभावकों के व्यवहार का ही होता है। उनके स्वभाव और सोच पर आपको वैसी ही झलक दिखाई देगी जैसा माहौल उसे बचपन से लेकर बड़ा होने तक मिला होगा। अगर माहौल खुशनुमा हैं तो बच्चा खुश मिजाज होगा लेकिन अगर माहौल लड़ाई-झगड़े से भरा पड़ा हैं तो बच्चे का स्वभाव गुस्सैल, चिड़चिड़ा और ईर्ष्या वाला होगा। बहुत सारे मातापिता ऐसे हैं जो अपने बच्चों के सामने ही लड़ाई, बहस और मारपीट शुरू कर देते हैं लेकिन क्या उन मां-बाप ने कभी सोचा है कि ऐसा करने पर बच्चे के मन पर क्या बीतती होगी या इस लड़ाई का उनके दिमाग पर कैसा असर पड़ता होगा। ऐसे माहौल से बच्चे की लाइफ में कई तरह की समस्याएं उत्पन्न हो सकती है। वह मानसिक रूप से बीमार पड़ सकते हैं। *** माता-पिता के झगड़ों का बच्चों पर बुरा असर**

-डिप्रेशन

बच्चे डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं क्योंकि उन्हें खुशहाल माहौल और प्यार नहीं मिलता।

-सहमें रहना बच्चों के सामने मारपीट, बहस और गाली-ग्लौच करते हुए पैरेंट्स इस बात को भूल जाते हैं कि उनकी इन हरकतों की वजह से उनके बच्चे सारी उम्र डरे सहमें रहते हैं। उन्हें किसी भी रिश्ते को निभाने में डर लगता है।

-मानसिक रूप से परेशान

ऐसे माहौल में रहने वाले बच्चों को मानसिक विकास अच्छे से नहीं हो पाता। वह बचपन की मस्तियों को खो देते हैं। कई बार तो बच्चा खुद को ही उन झगड़ों की वजह मानने लगता है।

-चिड़चिड़ा और गुस्सैल

झगड़े को देखकर उसका स्वभाव भी चिड़चिड़ा और गुस्सैल हो जाता हैं, जिसका असर जीवन भर उसकी जिंदगी में देखने को मिलता हैं। यही स्वभाव आगे चलकर उसकी लाइफ में बहुत सारी प्रॉब्लम खड़ी कर देता है।

- पढ़ाई में कमजोर

ऐसे बच्चे का दिमाग कभी फ्रैश नहीं होता। वह न तो ढंग से किसी दूसरे बच्चे से बात कर पाता हैं और न ही पढ़ाई।

***इन बातों का रखें ध्यान**

- -माता-पिता आपसी मन-मुटाव की बातें बंद कमरे में ही निपटाएं।
- -बच्चों के सामने ऐसी कोई बात न करें जो उन्हें तनाव दें।
- बच्चों को बड़ों की आपसी बातचीत से दूर रखें।
- बच्चे को खुशनुमा माहौल दें।

आर्चरी वर्ल्ड कप स्टेज-2: भारत की पुरुष और महिला कंपाउंड टीमों ने फाइनल में बनाई जगह, पक्के किए दो पदक

एजेंसी

शंघाई। भारत की पुरुष और महिला कंपाउंड तीरंदाजी टीमों ने वर्ल्ड कप स्टेज-2 में दमदार प्रदर्शन करते हुए फाइनल में प्रवेश कर लिया। इस उपलब्धि के साथ ही भारत ने इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में दो पदक पक्के कर लिए हैं। विश्व की नंबर-1 पुरुष कंपाउंड टीम—ओजस देवताले, अभिषेक वर्मा और ऋषभ यादव की तिकड़ी—ने क्वार्टरफाइनल में ग्रेट ब्रिटेन को 239-232 से हराया। इसके बाद सेमीफाइनल में डेनमार्क के खिलाफ कड़ा मुकाबला रहा, लेकिन भारत ने 232-231 से जीत दर्ज की। क्वार्टरफाइनल में भारत ने पहला सेट 59-60 से गंवाया, लेकिन अगले दो सेट 60-58 और 60-57 से जीतकर बढ़त बना ली। चौथे सेट में भी भारत ने 60-57 से जीत हासिल की। सेमीफाइनल में भारत की शुरुआत खराब रही और पहला सेट 57-60 से हार गया। लेकिन दूसरे सेट में स्कोर 58-58 से बराबर रहा। तीसरे सेट के बाद डेनमार्क को 118-115 की बढ़त थी, लेकिन भारत ने चौथे सेट में 60-57 से बाजी मारते हुए स्कोर 175-175 पर बराबर किया और आखिरी सेट में 57-56 की मामूली बढ़त के साथ फाइनल में जगह बना ली। महिला कंपाउंड टीम—मधुरा धमांगांवकर, चिकिता तनिपार्थी और ज्योति सुरेखा वेन्नम—ने क्वार्टरफाइनल में कजाखस्तान को 232-229 से हराया। इसके बाद सेमीफाइनल में ग्रेट ब्रिटेन को 232-230 से मात देकर फाइनल में जगह बनाई।

ऑल इंडिया इंटर जोनल हाकी टूर्नामेंट में प्रधान महालेखाकार प्रयागराज की टीम उपविजेता

प्रयागराज। भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग द्वारा कोलकाता में आयोजित ऑल इंडिया इंटर जोनल हाकी टूर्नामेंट में प्रधान महालेखाकार प्रयागराज की हाकी टीम उपविजेता रही। कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा टीम के सभी खिलाड़ियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर मनोरंजन क्लब के महासचिव अमित सिंह ने टीम के सभी सदस्यों को बधाई देते हुए कहा कि आप लोग इसी तरह अपने खेल का प्रदर्शन करते रहें। किसी भी तरह के सहयोग के लिए क्लब आप लोगों के साथ हमेशा रहेगा। टीम के कोच मयंक दूबे को धन्यवाद देते हुए कहा कि आपके नेतृत्व में टीम की एकजुटता और प्रदर्शन विगत कई वर्षो से सराहनीय रहा है। राजेश कुमार तिवारी ने बताया कि क्लब की तरफ से प्रखर श्रीवास्तव, कुशल वाल्मीकि, विजय पाण्डेय, मुमताज अहमद, निरंजन राय, संजीव कुमार सिंह आदि ने टीम के सभी खिलाड़ियों को इस प्रदर्शन के लिए बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं दी।

पेट्रा क्वितोवा ने इटालियन ओपन में पहली जीत दर्ज की

रोम। दो बार की विंबलडन चैंपियन और चेक गणराज्य की टेनिस खिलाड़ी पेट्रा क्वितोवा ने अपने पहले बच्चे के जन्म के बाद इटालियन ओपन मुकाबले में पहली जीत दर्ज की है। रोम में इटालियन ओपन के पहले दौर में चेक गणराज्य की खिलाड़ी क्वितोवा ने रोमानिया की इरिना-कैमेलिया बेगू पर सीधे सेट 7-5, 6-1 से जीत दर्ज की। पेट्रा क्वितोवा ने महिला टेनिस संघ (डब्ल्यूटीए) को मैच के बाद कहा कि मुझे 95 प्रतिशत लग रहा था कि मैं कोर्ट में कभी वापस नहीं लौट

पायेगी। उस समय मैं टेनिस से ऊब चुकी थी। मैं सोच रही थी 'मैं अब और नहीं खेल सकती' इसलिए हमने बच्चे के लिए प्रयास करने का फैसला किया। क्वितोवा टूर्नामेंट के दूसरे दौर में ट्यूनीशिया की विश्व नंबर 36 की ओन्स जबूर से भिड़ेगी। दूसरे मैच में, ब्रिटेन की सोनय कार्टल ने दो घंटे 10 मिनट तक चले संघर्षपूर्ण मुकाबले में ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी किम्बर्ली बिरेल को 4-6, 6-3, 6-4 से हराया।

स्कॉलरशिप ने तीरंदाजी में आने के लिए किया प्रेरित: सरवेश

भागलपुर। बिहार में चल रहे खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2025 में तीरंदाजी अंडर-18 प्रतियोगिता में भाग ले रहे तमिलनाडु के स्मरण सरवेश ने कहा कि स्कॉलरशिप मिलने के बाद खेल में अधिक मन लगने लगा था।सरवेश ने भागलपुर सैंडिस कंपाउंड में चल रही खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2025 में तीरंदाजी में पुरुषों के रिकर्व व्यक्तिगत स्पर्धा फाइनल के प्रवेश कर लिया है और अब वह अपने खिताबी मुकाबले में स्वर्ण पर निशाना साधने उतरेंगे। सरवेश की मां तमिलनाडु में सुपरिटेंडेंट ऑफ पुलिस यानी के एसपी की पद पर कार्यरत हैं और अब उनका बेटा तीरंदाजी में स्वर्ण पर निशाना साधने के लिए तैयार हैं. फाइनल में गुरुवार को सरवेश का सामना महाराष्ट्र के उज्जवल भरत ओलेकर से होना है। तमिलनाडु के इस युवा खिलाड़ी ने स्कॉलरशिप को लेकर कहा, मैं भी खेलो इंडिया के स्कीम का हिस्सा हूं। एक युवा खिलाड़ी को इससे काफी मदद मिलती है। स्कीम के अलावा भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) और खेल महासंघ से हमें फुल सपोर्ट मिल रहा है। जब स्कॉलरशिप मिलने लगा तो मेरा मन इस खेल में लगने लगा। इस उम्र में जब आप करियर बनाना शुरू करते हैं तो स्कॉलरशिप काफी मदद करती है।

रोहित शर्मा के शानदार टेस्ट करियर पर बीसीसीआई ने दी बधाई, बताया भारतीय क्रिकेट का प्रेरणास्रोत

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने रोहित शर्मा के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने पर उन्हें भावभीनी शुभकामनाएं दी हैं। बोर्ड ने उनके योगदान को 'प्रेरणादायक और शानदार' बताते हुए उनके उज्ज्वल करियर की सराहना की है। रोहित अब टेस्ट और टी20 फॉर्मेट को अलविदा कह चुके हैं, हालांकि वह भारत की वनडे टीम का हिस्सा बने रहेंगे। रोहित ने बुधवार रात सोशल मीडिया पर एक भावुक पोस्ट कर टेस्ट क्रिकेट से तत्काल प्रभाव से संन्यास की घोषणा की। रोहित शर्मा ने 2013 में टेस्ट क्रिकेट में कदम रखा और भारत के 35वें टेस्ट कप्तान के रूप में जिम्मेदारी संभाली। अपने 67 टेस्ट मुकाबलों में उन्होंने 40.57 की औसत से 4,301 रन बनाए, जिसमें 12 शतक और 212 रनों की सर्वश्रेष्ठ पारी शामिल है। आंकड़ों से परे, उन्होंने भारतीय क्रिकेट को धैर्य,

नेतृत्व और समर्पण की एक मजबूत विरासत सौंपी है।

मिडल ऑर्डर से ओपनर तक का सफर बना मिसाल

एक समय मिडल ऑर्डर बल्लेबाज रहे रोहित शर्मा ने खुद को टेस्ट क्रिकेट के सबसे सफल ओपनरों में शामिल किया। उन्होंने तकनीकी मजबूती और आक्रामकता के संतुलन के साथ टीम को मजबूत शुरुआत देने का काम किया। उन्होंने टेस्ट क्रिकेट को पूरी गंभीरता और ज़िम्मेदारी से खेला।

कप्तान के रूप में भी निभाई अहम भूमिका

रोहित ने 24 टेस्ट में टीम की कप्तानी की, जिनमें से 12 में भारत को जीत मिली। उन्होंने संक्रमणकालीन दौर और चोटों से जूझती टीम को मजबूती से संभाला। उनके नेतृत्व ने युवाओं को प्रेरित किया और उनकी बल्लेबाज़ी ने करोड़ों प्रशंसकों का दिल जीता।

बीसीसीआई अध्यक्ष और सचिव ने दी शुभकामनाएं

बीसीसीआई अध्यक्ष रॉजर बिन्नी ने कहा,रोहित शर्मा का प्रभाव आंकड़ों से कहीं ऊपर है। उन्होंने टीम को स्थिरता, आत्मविश्वास और अनुशासन दिया। उनकी नेतृत्व क्षमता और संयमित स्वभाव ने भारतीय क्रिकेट को एक नई दिशा दी है।

वहीं, बीसीसीआई के मानद सचिव देवजीत सैकिया ने कहा, रोहित शर्मा न सिर्फ एक शानदार बल्लेबाज रहे बल्कि एक ऐसे कप्तान भी, जिन्होंने हमेशा टीम को प्राथमिकता दी। उनका अनुशासन, विनम्रता और उत्कृष्टता आज की पीढ़ी के लिए मिसाल है। भारतीय क्रिकेट हमेशा उनके योगदान का ऋणी रहेगा। रोहित शर्मा भले ही सफेद कपड़ों से विदा ले चुके हों, लेकिन उनका योगदान, शैली और नेतृत्व भारतीय क्रिकेट के इतिहास में सदैव अमिट रहेगा।

आरसीबी ने देवदत्त पडिक्कल की जगह मयंक अग्रवाल को टीम में किया शामिल

एजेंसी

बेंगलुरु। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के शेष मुकाबलों के लिए रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) ने मयंक अग्रवाल को चोटिल देवदत्त पडिक्कल के स्थान पर टीम में शामिल किया है। पडिक्कल को दाहिनी हैमस्ट्रिंग में चोट लगी है, जिसके चलते उन्हें पूरे टूर्नामेंट से बाहर होना पड़ा है। बाएं हाथ के बल्लेबाज़ देवदत्त पडिक्कल इस सीजन आरसीबी की बल्लेबाज़ी का मजबूत स्तंभ रहे। उन्होंने 10 पारियों में 247 रन बनाए, जिसमें दो अर्धशतक शामिल हैं। उनका स्ट्राइक रेट 150.60 रहा और वे 11 मैचों के बाद टीम के दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज़ थे। बेंगलुरु के स्थानीय खिलाड़ी मयंक अग्रवाल एक दशक से भी अधिक समय बाद आरसीबी की टीम में लौटे हैं। मयंक ने अब तक 127 आईपीएल मैच खेले हैं, जिनमें उन्होंने 2661 रन बनाए हैं। उनके नाम एक शतक और 13 अर्धशतक दर्ज हैं। आरसीबी ने उन्हें 1 करोड़ रुपये में टीम में शामिल किया है। आरसीबी के क्रिकेट निदेशक मो बोबट ने कहा, देवदत्त का इस स्टेज पर बाहर होना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है, खासकर जब उन्होंने इस सीजन में शानदार प्रदर्शन किया है। हम उन्हें जल्द स्वस्थ होने की शुभकामनाएं देते हैं। वहीं, मयंक अग्रवाल का टीम में स्वागत करते हुए हमें खुशी हो रही है। उनका अनुभव और बहुमुखी प्रतिभा हमारे लिए टूर्नामेंट के अहम चरण में काफी मददगार साबित होगी। आरसीबी को अब लीग चरण में तीन मुकाबले खेलने हैं, जिनमें पहला 9 मई को लखनऊ में एलएसजी के खिलाफ, दूसरा 13 मई को बेंगलुरु में हैदराबाद के खिलाफ और तीसरा और अंतिम 17 मई को बेंगलुरु में केकेआर के खिलाफ है।

सऊदी प्रो लीग 2024-25: खिताबी दौड़ में पिछड़ा अल नासर, अल इत्तिहाद से हार के बाद चौथे स्थान पर फिसला

एजेंसी

नई दिल्ली। क्रिस्टियानो रोनाल्डो की टीम अल नासर को सऊदी प्रो लीग के एक अहम मुकाबले में अल इत्तिहाद के खिलाफ 2-3 की हार का सामना करना पड़ा। अल-अव्वल पार्क में खेले गए इस मुकाबले में अल नासर ने दो गोल की बढ़त बना ली थी, लेकिन दूसरे हाफ में टीम ने वह बढ़त गंवा दी। रोनाल्डो इस मैच में गोल करने में नाकाम रहे।

तीसरे मिनट में सादियो माने ने दिलाई बढ़त

अल नासर की शुरुआत जबरदस्त रही और तीसरे मिनट में ही सादियो माने ने गोल कर टीम को 1-0 की बढ़त दिला दी। यह मौका उन्हें इत्तिहाद के डिफेंडर अब्दुलएलाह अल-अमारी की गलती से मिला, जिनकी बैक पास किक माने के पास पहुंच गई। माने ने गेंद को कंट्रोल करने के बाद गोलकीपर प्रेड्रैग राजकोविच को छकाते हुए गेंद को नेट में डाल दिया।

पहले हाफ में 2-0 की मजबूत स्थिति में थी अल नासर

पहले हाफ के खत्म होने से पहले अल नासर ने अपनी बढ़त दोगुनी कर ली। इस बार माने ने असिस्ट किया और अयमन यहया ने बिना समय गंवाए गेंद को नेट में

पहुंचाया। पहले हाफ के बाद ऐसा लग रहा था कि अल नासर आसानी से मुकाबला जीत लेगी।

बेंजेमा-कांते ने किया पलटवार, औआर ने दिलाई जीत

दूसरे हाफ की शुरुआत में ही अल इत्तिहाद ने आक्रामक रुख अपनाया और पांच मिनट के अंदर वापसी के संकेत दे दिए। रोनाल्डो के पुराने साथी करीम बेंजेमा ने हेडर के जरिए गेंद को आगे बढ़ाया और इसके तीन मिनट बाद ही एन'गोलो कांते ने कट बैक पास पर शानदार गोल कर स्कोर 2-2 कर दिया। निर्णायक गोल हौस्सेम औआर के नाम रहा, जिनका पहला शॉट अल नासर के गोलकीपर बेंटो ने रोक लिया था, लेकिन रिबाउंड पर गेंद इत्तिहाद के खिलाड़ी से टकराकर नेट में चली गई।

प्वाइंट टेबल में बड़ा असर, इत्तिहाद शीर्ष पर मजबूत: इस हार के साथ अल नासर अब अंक तालिका में चौथे स्थान पर खिसक गया है और अब वह शीर्ष पर मौजूद अल इत्तिहाद से 11 अंक पीछे है। वहीं इत्तिहाद ने इस जीत से अपने शीर्ष स्थान को और मजबूत कर लिया है।

पीएसजी ने आर्सेनल को हराकर फाइनल में बनाई जगह, रुइज़ और हकीमी रहे हीरो

एजेंसी

पेरिस। फैबियन रुइज़ और अचरफ हकीमी के गोलों की मदद से पेरिस सेंट-जर्मेन (पीएसजी) ने रात को आर्सेनल को सेमीफाइनल के दूसरे चरण में 2-1 से हराकर कुल 3-1 के अंतर से चैम्पियंस लीग 2024-25 के फाइनल में प्रवेश कर लिया। यह क्लब के इतिहास में दूसरी बार फाइनल में पहुंचना है।

रुइज़ और हकीमी के गोलों ने दिलाई जीत: पहले चरण में 1-0 से बढ़त हासिल कर चुकी पीएसजी ने अपने घरेलू मैदान 'पार्क डेस प्रिंस' में शानदार प्रदर्शन किया। 27वें मिनट में फैबियन रुइज़ ने बॉक्स के बाहर से जोरदार शॉट मारकर पहला गोल किया। इसके बाद दूसरे हाफ में अचरफ हकीमी ने 72वें मिनट में दूसरा गोल दागकर मुकाबले को लगभग खत्म कर दिया।

साका ने लौटाई उम्मीद, लेकिन चूके मौके पर आर्सेनल के लिए बुकायो साका ने 76वें मिनट में एक गोल कर वापसी की उम्मीद जगाई, लेकिन इसके बाद एक ओपन गोल मिस कर बैठे। इससे पहले गोलकीपर डोनारुम्मा ने कई शानदार बचाव कर आर्सेनल को शुरुआती बढ़त लेने से रोका।

विवादित पेनल्टी और मिस हुआ मौका

64वें मिनट में पीएसजी को एक विवादित पेनल्टी मिली, जब हकीमी के शॉट पर गेंद आर्सेनल के लुईस-स्केली के हाथ से छू गई। हालांकि, विटिन्हा इस मौके को गोल में नहीं बदल सके और डेविड राया ने शानदार बचाव किया।

अब इंटर मिलान से भिड़ेगा पीएसजी

अब पीएसजी का मुकाबला 31 मई (1 जून, भारतीय समय अनुसार) को म्यूनिख में इंटर मिलान से होगा। इससे पहले पीएसजी 2020 में फाइनल में पहुंचा था, जहां उसे बायर्न म्यूनिख से हार मिली थी।

आर्सेनल का टूटा सपना

आर्सेनल की यह दूसरी फाइनल में पहुंचने की कोशिश थी, जो 19 साल बाद संभव हो सकती थी। लेकिन एक बार फिर यूरोपीय खिताब की तलाश अधूरी रह गई। अब मिकेल आर्टेटा की टीम प्रीमियर लीग में लगातार तीसरी बार उपविजेता बनने के लक्ष्य पर ध्यान देगी।

अपने आईपीएल भविष्य पर बोले एमएस धोनी- 'अभी मेरे लिए कोई फैसला लेने का समय नहीं'

एजेंसी

कोलकाता। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल 2025) धोनी का आखिरी सीजन होगा या नहीं, इसका फैसला खुद माही ने भी अभी नहीं किया है। 43 वर्षीय धोनी ने कहा कि वो हर साल सिर्फ दो महीने ही खेलते हैं और हर सीजन के बाद उन्हें यह तय करने के लिए 6-8 महीने मेहनत करनी होती है कि उनका शरीर अगले सीजन का दबाव झेल पाएगा या नहीं। कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ रोमांचक जीत के बाद धोनी ने कहा, अभी मेरे लिए कोई फैसला लेने का समय नहीं है, लेकिन जहां भी जाता हूं वहां मुझे प्यार और अपनापन महसूस होता है। धोनी इस सीजन कम फिजिकल योगदान दे रहे हैं, सीएसके कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने

भी माना कि धोनी के घुटने उन्हें लंबे समय तक बल्लेबाजी करने की इजाजत नहीं देते। 180 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए धोनी 13वें ओवर में बल्लेबाजी के लिए आए। उन्होंने शिवम दुबे के साथ मिलकर मैच को आखिरी ओवर तक पहुंचाया और आंद्रे रसेल की गेंद पर एक अहम छक्का लगाकर टीम को जीत दिलाई। इस मैच में दो युवा सितारे चर्चा में रहे - उर्विल पटेल और डेवाल्ड ब्रेविस। आईपीएल डेब्यू कर रहे उर्विल ने शुरुआत से ही आक्रामक तेवर दिखाए और मात्र 11 गेंदों में 31 रन ठोक दिए, जिसमें चार छक्के शामिल थे। वहीं ब्रेविस ने 22 गेंदों में फिफ्टी जड़ दी, जिसमें वैभव अरोड़ा के एक ओवर में 6,4,4,6,6,4 जैसे शॉट्स भी शामिल थे। प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो चुकी सीएसके की टीम अब बाकी बचे मैचों का इस्तेमाल युवा खिलाड़ियों को आजमाने के लिए कर रही है। धोनी ने कहा, नेट्स या प्रैक्टिस गेम से ज्यादा जरूरी होता है असली मैच। हम देखना चाहते हैं कि दबाव में खिलाड़ी का रवैया कैसा होता है, वो मानसिक तौर पर कितना मजबूत है।

त्रिकोणीय महिला एकदिनी श्रृंखला: दक्षिण अफ्रीका को हरा फाइनल में पहुंची भारतीय टीम, श्रीलंका से होगा खिताबी मुकाबला

एजेंसी

कोलंबो। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने त्रिकोणीय एकदिवसीय श्रृंखला के आखिरी और निर्णायक मुकाबले में शानदार प्रदर्शन करते हुए दक्षिण अफ्रीका को 23 रन से हराकर फाइनल में जगह बना ली है। अब भारत का खिताबी मुकाबला 11 मई को कोलंबो में श्रीलंका से होगा। भारत द्वारा दिए गए 338 रन के विशाल लक्ष्य का पीछा करते हुए दक्षिण अफ्रीका की शुरुआत खराब रही। टीम ने 7 रन पर पहला विकेट गंवाया। सलामी बल्लेबाज़ लौरा गुडॉल (7) और तजमीन ब्रिट्स (26) को अमनजोत कौर ने आउट कर भारत को मजबूत शुरुआत दिलाई। इसके बाद अनेरे डर्कसेन (81 रन, 80 गेंद) और कप्तान क्लो ट्रायोन (67 रन, 43 गेंद) ने पारी को संभालने की कोशिश की, लेकिन टीम को जीत नहीं दिला पाई। अंतिम दो ओवरों में दक्षिण अफ्रीका को 39 रन की दरकार थी, लेकिन खराब रोशनी के कारण खेल थोड़ी देर रोका गया। जब मैच दोबारा शुरू हुआ, तब अफ्रीकी टीम केवल 15 रन ही बना सकी।भारतीय गेंदबाजों में अमनजोत कौर ने 3 विकेट लेकर मैच का रुख मोड़ दिया, जबकि दीप्ति शर्मा ने 2 विकेट चटकाए। श्री चरनी और प्रतीका रावल को 1-1 सफलता मिली।

मनोलो मार्केज ने कोलकाता शिविर के लिए 28 सदस्यीय भारतीय फुटबॉल टीम घोषित की

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय फुटबॉल टीम के मुख्य कोच मनोलो मार्केज़ ने कोलकाता में 18 मई से शुरू हो रहे राष्ट्रीय कैंप के लिए 28 सदस्यीय संभावित टीम की घोषणा कर दी है। मोहुन बागान सुपर जाइंट के युवा फॉरवर्ड सुहैल अहमद भट को पहली बार टीम में शामिल किया गया है। पूर्व नंबर-1 गोलकीपर गुरप्रीत सिंह संधू को एक बार फिर बाहर रखा गया है।

गुरप्रीत पर फिर नहीं दिखा भरोसा: गुरप्रीत सिंह संधू ने आखिरी बार पिछले साल मलेशिया के खिलाफ फ्रेंडली मैच में भारत के लिए खेला था, जहां उनकी एक बड़ी गलती से विपक्षी टीम को गोल मिला और मुकाबला 1-1 की बराबरी पर समाप्त हुआ। इसके बाद उन्हें इस साल मालदीव के खिलाफ फ्रेंडली और बांग्लादेश के खिलाफ एशियन कप क्वालीफायर में भी टीम से बाहर रखा गया था। उनकी जगह गोलपोस्ट की जिम्मेदारी विषाल

कैथ को सौंपी गई है।

तीसरी बार एएफसी एशियन कप के लिए क्वालीफाई करने की कोशिश: भारत एएफसी एशियन कप में लगातार तीसरी बार क्वालीफाई करने की तैयारी में है। टीम को तीसरे राउंड के क्वालीफायर में ग्रुप सी में बांग्लादेश, हॉन्गकॉन्ग चाइना और सिंगापुर के साथ रखा गया है। ग्रुप की शुरुआती दोनों मैच ड्रॉ रहे हैं, जिससे सभी चारों टीमों के पास एक-एक अंक हैं।

थाईलैंड से फ्रेंडली, फिर हॉन्गकॉन्ग से बड़ी भिड़ंत

टीम की तैयारियों के तहत भारत 10 दिनों का ट्रेनिंग कैंप कोलकाता में लगाएगा, जिसके बाद 4 जून को थाईलैंड के खिलाफ एक फ्रेंडली मुकाबला खेलेगा। इसके बाद टीम 10 जून को हॉन्गकॉन्ग के खिलाफ अहम क्वालीफायर मैच खेलने के लिए काई ताक स्पोर्ट्स पार्क, कौलून सिटी रवाना होगी।

भारत की संभावित टीम-

गोलकीपर: ऋतिक तिवारी, विषाल कैथ, गुरमीत सिंह चाहल, अमरिंदर सिंह।

डिफेंडर: नाओरेम रोशन सिंह, राहुल बेके, कोंशम चिंगलेन्साना सिंह, अनवर अली, थांगजम बॉरिस सिंह, संदेश झिंगन, आशीष राय, सुभाशीष बोस, मेहताब सिंह, टेकचम अभिषेक सिंह, निखिल प्रभु।

मिडफील्डर: सुरेश सिंह वांगजाम, नाओरेम महेश सिंह, आयुष देव छेत्री, उदंता सिंह कुमाम, लालेनगमाविया राल्ते, लिस्टन कोलाको, आशिक कुरुनियन, ब्रैंडन फर्नांडिस।

जतिन वर्मा बने यूपी फेंसिंग एसोसिएशन के अध्यक्ष

एजेंसी

लखनऊ । लखनऊ के खेल प्रमोटर जतिन वर्मा को यूपी फेंसिंग एसोसिएशन का अध्यक्ष चुना गया है जबकि वरिष्ठ खेल प्रशासक अभिजीत सरकार वरिष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर चुने गए हैं। एसोसियेशन की वार्षिक आम सभा की बैठक में केडी सिंह बाबू स्टेडियम के मीटिंग हाल में संघ के रिक्त पदों को मनोनयन के माध्यम से भरा गया। यह पद निवर्तमान अध्यक्ष पंकज सिंह (भाजपा विधायक) द्वारा पद छोड़ने के चलते रिक्त हुआ था। बैठक में उत्तर प्रदेश ओलंपिक एसोसिएशन के पर्यवेक्षक के तौर पर महासचिव डा.आनन्देश्वर पाण्डेय व खेल विभाग के पर्यवेक्षक के तौर पर लखनऊ मंडल के क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी अनिमेष सक्सेना की मौजूदगी रही।

आईपीएल 2025: सीएसके ने केकेआर को दो विकेट से हराया, बिगाड़ प्लेऑफ का खेल

एजेंसी

कोलकाता। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 57वें मैच में चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) ने मेजबान कोलकाता नाइटराइडर्स (केकेआर) को दो विकेट से हरा दिया है। इस हार के साथ कोलकाता के भी प्लेऑफ में पहुंचने की उम्मीद को धक्का लगा है। कोलकाता की ओर से मिले 180 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी सीएसके की शुरुआत काफी खराब रही। टीम को दोनों ओपनर आयुष म्हात्रे और डेवन कॉनवे बिना खाता खोले आउट हो गए। फिर आईपीएल में पदार्पण कर रहे उर्विल पटेल ने अच्छे शॉट लगाकर टीम को उम्मीद की राह पर लौटाया। उर्विलल ने 11 गेंदों में 31 रन की पारी खेली। प्रमोट कर बल्लेबाजी के लिए ऊपर भेजे गए आर. अश्विन (8 रन) और रविंद्र जडेजा (19 रन) भी जल्द पवेलियन लौट गए। हालांकि इसके बाद शिवम दुबे और डेवाल्ड ब्रेविस ने 67 रन की साझेदारी कर टीम को मजबूद स्थिति में ला खड़ा किया। आखिर में महेंद्र सिंह धोनी ने 17 रन की पारी खेलकर टीम को जीत दिला दी।

कोलकाता के लिए वैभव अरोड़ा ने तीन विकेट और हर्षित राणा व वरुण चक्रवर्ती ने दो-दो विकेट चटकाए। जबकि मोइन अली को एक सफलता मिली। इससे पहले, टॉस जीतकर बल्लेबाजी करते हुए केकेआर 20 ओवर में 6 विकेट पर 179 रन बनाए। टीम के लिए अजिंक्या रहाणे ने 48 रन और सुनील नारायण ने 26 रन बनाए। जबकि आंद्रे रसेल 38 और मनीष पांडे 36 रन बनाकर

नाबाद रहे। चेन्नई की ओर से नूर अहमद ने चार विकेट चटकाए। जबकि अंशुल कम्बोज और रविंद्र जडेजा के खाते में एक-एक विकेट रहा।

खेलो इण्डिया यूथ गेम्स 2025 : मप्र के खिलाड़ियों ने आज कुल 11 पदक किये अर्जित

एजेंसी

भोपाल। बिहार के पटना शहर में आयोजित खेलो इण्डिया यूथ गेम्स- 2025 में मध्य प्रदेश के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 11 पदक अर्जित किए। इनमें छह स्वर्ण, तीन रजत और तीन कांस्य शामिल है। प्रतियोगिता में अब तक मध्य प्रदेश के खिलाडियों ने आठ स्वर्ण, तीन रजत और तीन कांस्य सहित कुल 14 पदक अर्जित किये है। इसके साथ ही मध्य प्रदेश मेडल टैली में तीसरे स्थान पर आ गया है। खेलो इण्डिया यूथ गेम्स- 2025 में मध्य प्रदेश के खिलाड़ियों ने मलखम्भ में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए चार स्वर्ण, दो रजत और एक कांस्य पदक आपने नाम किया। खेलो इंडिया यूथ गेम्स-2025 में मलखम्भ में कुल नौ स्वर्ण पदक दाँव पर हैं। अब तक सात स्वर्ण पदक के मुकाबले हुए, जिसमें मध्य प्रदेश के खिलाड़ियों ने छह स्वर्ण पदक अर्जित किये हैं। अभी दो स्वर्ण पदक के मुकाबले होना शेष हैं। खेले गए मुकाबले में मध्य प्रदेश के देवेन्द्र पाटीदार ने अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन देते हुए, आल राउंड व्यक्तिगत बालक वर्ग में स्वर्ण, पोल मलखम्भ व्यक्तिगत बालक वर्ग में स्वर्ण, हैंगिंग मलखम्ब व्यक्तिगत बालक वर्ग में स्वर्ण और रोप मलखम्ब व्यक्तिगत बालक वर्ग में रजत पदक सहित कुल तीन स्वर्ण और एक रजत पदक अपने नाम किया। ऑल राउंड व्यक्तिगत बालक

वर्ग में मध्य प्रदेश के यतिन कोरी ने रजत पदक आपने नाम किया। मलखम्भ में ही ऑल राउंड व्यक्तिगत बालिका वर्ग में मध्य प्रदेश की सिद्धि गुप्ता ने अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन देते हुए स्वर्ण पदक जीता। मलखम्भ के पोल मलखम्भ व्यक्तिगत बालक वर्ग मुकाबले में मध्य प्रदेश के यतिन कोरी ने कांस्य पदक जीता। शूटिंग के मुकाबलों में शॉटगन ट्रैप व्यक्तिगत बालक वर्ग प्रतियोगिता में मध्य प्रदेश के सैयद आयन अली ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक आपने नाम किया। वही मध्य प्रदेश की पूनम रघुवंशी ने शॉटगन ट्रैप व्यक्तिगत बालिका वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक अर्जित किया। शॉटगन ट्रैप व्यक्तिगत प्रतियोगिता बालिका वर्ग में मध्य प्रदेश की पूनम रघुवंशी ने शानदार प्रदर्शन दिखाते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। गतका में फरी सोट्टी टीम प्रतियोगिता बालिका वर्ग में मध्य प्रदेश की मनप्रीत कौर, माहि पटेल और वैष्णवी शर्मा की टीम ने कड़े मुकाबले के बाद कांस्य पदक अपने नाम किया। वहीं, जुडो में 52 किग्रा व्यक्तिगत बालिका वर्ग में मध्य प्रदेश की नैंसी कुंडू ने रजत पदक अपने नाम किया। खेल मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने प्रदेश के खिलाड़ियों की सराहना करते हुए बताया कि मलखम्भ और शूटिंग खिलाड़ियों का यह अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है।

बिग बॉस 17 फेम

सोनिया बंसल

का बड़ा फैसला, ग्लैमर से अध्यात्म की ओर चल पड़ीं एक्ट्रेस

'बिग बॉस 17' से अपनी पहचान बनाने वाली एक्ट्रेस सोनिया बंसल ने एक्टिंग की दुनिया को अलविदा कह दिया है. हिंदी और तेलुगू फिल्मों के साथ-साथ कई म्यूजिक वीडियोज में नजर आ चुकीं सोनिया ने ग्लैमर की चकाचौंध से दूर एक नई राह चुनी है. उन्होंने खुद इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि अब वह लाइफ कोच बन गई हैं और लोगों की जिंदगी को बेहतर बनाने में मदद करेंगी. सोनिया के इस फैसले से उनके फैंस बहुत ज्यादा हैरान हैं.सोनिया बंसल ने बताया कि इस भागदौड़ भरी जिंदगी में उन्होंने खुद को कहीं खो दिया था. उन्होंने कहा कि अक्सर लोग दूसरों की जरूरतों को पूरा करने में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि अपनी ही देखभाल करना भूल जाते हैं. सोनिया ने महसूस किया कि परफेक्ट दिखने, खुद को बनाए रखने और ज्यादा पैसा कमाने की होड़ में वह अपनी असली पहचान खो बैठी थीं. इसी वजह से उन्होंने एक्टिंग की दुनिया से किनारा करने का फैसला किया.

जिंदगी से गायब हो गई शांति

'बिग बॉस 17' की पूर्व कंटेस्टेंट सोनिया ने आगे कहा कि उनके पास पैसा, शोहरत और नाम सब कुछ था, लेकिन अंदरूनी शांति गायब थी. उन्होंने सवाल किया कि अगर आपके पास शांति ही नहीं है तो इतने सारे पैसे का क्या फायदा? बाहरी तौर पर सब कुछ होते हुए भी, अंदर से खालीपन महसूस होना एक अंधेरी जगह जैसा होता है. इसी एहसास ने उन्हें अपनी जिंदगी में एक नया मकसद ढूंढने के लिए प्रेरित किया.

नहीं जीना चाहतीं दिखावे की जिंदगी

सोनिया अब दिखावे की जिंदगी नहीं जीना चाहती हैं. उन्होंने बताया कि वो अपने दिल की गहराई से यह समझना चाहती हैं कि वो असल में अपनी जिंदगी से क्या चाहती हैं. एक्टिंग इंडस्ट्री ने उन्हें पहचान तो दिलाई, लेकिन सुकून नहीं दिया. सोनिया अब अपनी सच्चाई के साथ जीना चाहती हैं और एक लाइफ कोच और आध्यात्मिक हीलर बनकर दूसरों की मदद करना चाहती हैं. उनका मानना है कि सच्ची खुशी अंदरूनी शांति में ही मिलती है, न कि बाहरी चकाचौंध में.

भारत माता की जय...ऑपरेशन सिंदूर पर बॉलीवुड सितारों ने लगाए जय हिंद के नारे, निमरत बोलीं- एक देश एक मिशन

भारत ने जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले का करार जवाब दे दिया है. भारत ने पाकिस्तान और क्ष्य में 9 ठिकानों पर एयरस्ट्राइक की है. इस स्ट्राइक में लश्कर और जैश के 100 से ज्यादा आतंकी मारे गए हैं. भारतीय सशस्त्र बलों ने इस ऑपरेशन को 'ऑपरेशन सिंदूर' नाम दिया है. भारत के इस बड़े कदम पर पूरा देश गर्व महसूस कर रहा है. ऐसे में बॉलीवुड के कई सितारों ने 'ऑपरेशन सिंदूर' पर अपना-अपना रिएक्शन शेयर किया है और साथ ही जय हिंद के नारे भी लगाए हैं. इसमें अनुपम खेर से लेकर रितेश देशमुख जैसे सितारों का नाम शामिल है.दिग्गज एक्टर अनुपम खेर ने 'ऑपरेशन सिंदूर' को लेकर एक्स अकाउंट पर ट्वीट करते हुए लिखा, भारत माता की जय! इसके साथ उन्होंने भारत के झंडे के इमोजी भी अपने पोस्ट के साथ लगाए.

जय हिंद, जय महाकाल - अक्षय कुमार

अक्षय कुमार ने भी ऑपरेशन सिंदूर को सपोर्ट करते हुए पोस्ट शेयर किया है. उन्होंने अपने एक्सा अकाउंट पर ऑपरेशन सिंदूर की तस्वीर शेयर करते हुए लिखा, जय हिंद, जय महाकाल.

भारत माता की जय - रितेश देशमुख

एक्टर रितेश देशमुख ने भी देश के इस बड़े कदम पर अपनी खुशी जाहिर की है. उन्होंने भी एक्स अकाउंट पर लिखा, जय हिंद की सेना॰ भारत माता की जय. इतना ही नहीं उन्होंने अपने पोस्ट में एक तस्वीर भी सभी के साथ शेयर की है, जिसमें ऑपरेशन सिंदूर लिखा नजर आ रहा है.

एक्टर विनीत कुमार सिंह ने भी इस मौके पर पोस्ट किया. उन्होंने पहलमगाम हमले का बदला लेने पर खुशी जाहिर करते हुए अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर पोस्ट शेयर किया. एक्टर ने लिखा, जय हिंद. इसके अलावा विनीत ने भी ऑपरेशन सिंदूर वाली तस्वीर शेयर की.

जय हिंद, वंदे मातरम - मधुर भंडारकर

डायरेक्टर और राइटर मधुर भंडारकर का नाम भी ऑपरेशन सिंदूर पर रिएक्शन देने वाले सितारों की लिस्ट में शामिल है. उन्होंने अपनी पोस्ट में लिखा, हमारी प्रार्थनाएं हमारी सेना के साथ हैं. एक राष्ट्र, हम सब एक साथ खड़े हैं. जय हिंद, वंदे मातरम.

यूं ही कोई अल्लू अर्जुन जैसा सुपरस्टार नहीं बन जाता है...बॉलीवुड वालों को क्या-क्या सीखना चाहिए?

भारतीय फिल्मों के कई सुपरस्टार्स हुए लेकिन पुष्पा एक्टर अल्लू अर्जुन ने उन सबके बीच एक अलग ही छवि बनाई है. अल्लू अर्जुन को अब आईकॉनिक सुपरस्टार या फिर लार्जर दैन सुपरस्टार भी कहा जाने लगा है. पुष्पा और पुष्पा 2 ने एक ग्लोबल स्टार का रुतबा बनाया है. लेकिन क्या यह आज के उस माहौल में इतना आसान था जहां तमाम बड़े स्टार्स की फिल्में बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप हो रही हैं? अल्लू अर्जुन को इतनी बड़ी कामयाबी कैसे मिली? इसके पीछे कौन-सा विज़न था? आखिर कोई एक्टर एक सुपरस्टार कैसे बन जाता है- और अपने स्टारडम से हरेक किसी को चकाचौंध कर पाता है- ये जानना वाकई बहुत दिलचस्प है.जाहिर है ये सुपरस्टारडम किसी को यूं ही नहीं मिल जाता. वास्तव में इसके पीछे एक विज़न भी काम करता है. सुपरस्टार बन जाना अपने दौर को प्रतिनिधित्व करने जैसा होता है. हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में राजेश खन्ना, अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान और ऋतिक रोशन या फिर साउथ सिनेमा के एनटीआर, एमजीआर, मोहन लाल और रजनीकांत सबने अपने समय के मिजाज को पर्दे पर जीकर दिखाया है और हर उम्र के लोगों को प्रभावित किया है. उसी कड़ी में आज के समय में अल्लू अर्जुन भी अपनी प्रतिभा और नजरिये से सबको चौंका रहे हैं.

जंजीर, दीवार, तेजाब की याद आई

हालांकि अल्लू अर्जुन के पुष्पा किरदार में वही एंगर था तो सत्तर-अस्सी के दशक में अमिताभ बच्चन की जंजीर, दीवार जैसी फिल्मों में देखा गया था या कि नब्बे के दशक में अनिल कपूर की तेजाब जैसी फिल्मों में. बिग बी की प्रसिद्ध फिल्म अग्निपथ के विजय दीनानाथ चौहान किरदार से पुष्पा कैरेक्टर को कितना अलग कर सकते हैं! लेकिन पुष्पा उस दौर में आती है जब सोसायटी की नई पीढ़ी की महत्वाकांक्षा की परतों के नीचे में गुस्सा दबा हुआ था. यह गुस्सा सत्तर के दशक से भी अलग है. जब फिल्म की कहानी और किरदार में इसे आज के टेम्परामेंट के साथ प्रस्तुत किया गया तो वह युवाओं के दिल से कनेक्ट कर गया और पुष्पा का हर अंदाज वायरल हो गया.

फैन्स की रुचि और पसंद को समझें

जाहिर है पुष्पा किरदार आज के राजनीतिक-सामाजिक हालात से उपजी सोच है और उस सोच को अल्लू अर्जुन ने बहुत ही उम्दा तरीके से जीकर दिखाया है. वह उस किरदार को खुलकर खेल गए. लेकिन यह कितना आसान था. दर्शकों के दिलो दिमाग पर छा जाना कितना सरल था. इतना ही नहीं, आज की तारीख में फिल्में कैसे दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करे, फिल्मी कलाकारों, निर्देशकों को समय के मुताबिक क्या-क्या करना चाहिए- इन सबके बारे में अल्लू अर्जुन एक मॉडर्न ख्याल रखते हैं. जिसका विस्तार से जिक्र उन्होंने बीते दिनों वेव्ज समिट मुंबई के दौरान अपने लंबे इंटरव्यू में किया है.

इधर IPL खेल रहे युजवेंद्र चहल, उधर

धनश्री वर्मा

की आ गई मौज! 800 करोड़ी एक्टर के साथ मिला बड़ा मौका

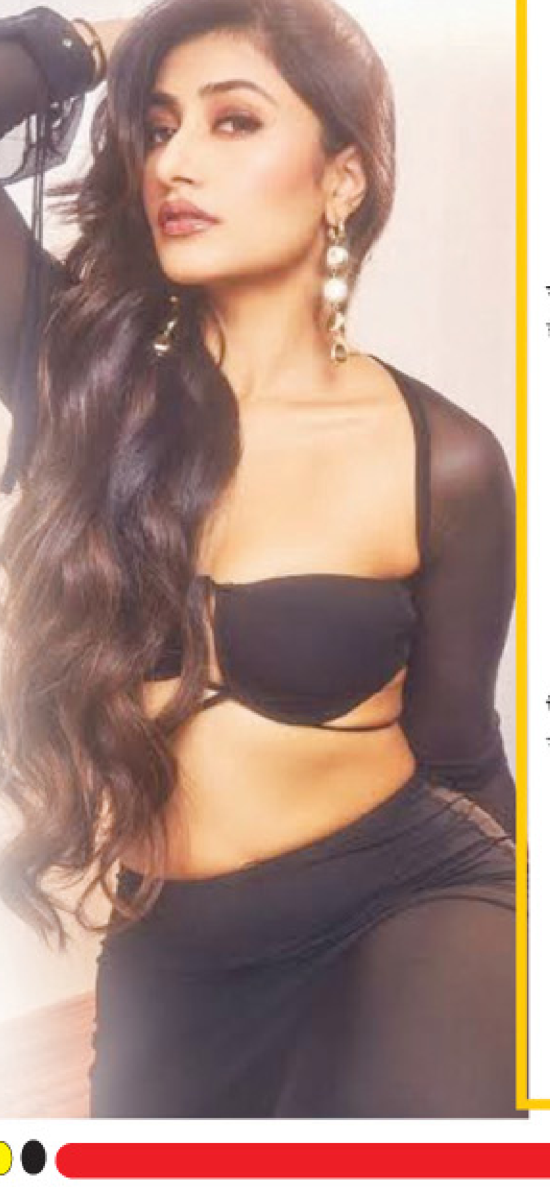

भारतीय क्रिकेटर युजवेंद्र चहल इस समय IPL 2025 में अपने परफॉर्मेंस से सुर्खियां बटोर रहे हैं. इसके साथ ही RJ महवश से भी उनका नाम जुड़ रहा है. जहां वो उन्हें हर मैच में सपोर्ट करने पहुंचती हैं. कुछ वक्त पहले टीम बस में भी साथ जाती दिखी थीं. हालांकि, चहल और धनश्री वर्मा के रास्ते अब अलग हो गए हैं. दोनों का कुछ वक्त पहले ही तलाक हुआ है. इधर चहल मैच खेल रहे हैं, तो वहीं एक्स वाइफ के हाथ बड़ा मौका लग गया है.राजकुमार राव ने 'स्त्री 2' से 800 करोड़ से भी ज्यादा पैसे छापे थे. फिल्म को दुनियाभर से काफी प्यार मिला था. जल्द उनकी फिल्म 'भूल चूक माफ' आने वाली है. जिसका बीते दिनों एक स्पेशल नंबर आया, नाम था- TING LING SAJNA.

धनश्री वर्मा की मौज आ गई!

युजवेंद्र और धनश्री के रास्ते अलग-अलग हो गए हैं. लेकिन एक्ट्रेस लगातार काम कर रही हैं. कुछ वक्त पहले भी जयपुर में शूटिंग करती नजर आईं थीं. अब उनका नया गाना आ गया है. 2 मिनट 35 सेकंड के वीडियो में धनश्री वर्मा ने जबरदस्त डांस किया है. उनके साथ राजकुमार राव भी दिखाई दिए. लोग दोनों की जोड़ी को पसंद भी कर रहे हैं. दरअसल धनश्री कोरियोग्राफर हैं. कई म्यूजिक वीडियो में नजर आ चुकी हैं. हालांकि, यह उनके बड़े प्रोजेक्ट्स में से एक है.

कुछ वक्त पहले खबर आई थी कि धनश्री वर्मा जल्द साउथ फिल्मों में डेब्यू करने वाली हैं. हालांकि, फिल्म की कहानी डांस के इर्द गिर्द होने की बातें सामने आ रही हैं. दरअसल धनश्री वर्मा टीवी शो 'झलक दिखला जा' का भी हिस्सा रह चुकी हैं. पर वो जीत नहीं पाईं थी. उस दौरान उन्हें सपोर्ट करने चहल भी वहां पहुंचे हुए थे.

गाने को कैसा रिस्पॉन्स मिल रहा है?

'भूल चूक माफ' के इस गाने TING LING SAJNA को 18 घंटे पहले रिलीज किया गया था. खबर लिखे जाने तक 29 लाख व्यूज मिल चुके हैं. वहीं काफी संख्या में लोगों ने कमेंट्स भी किए हैं. देखना होगा कि एक्टिंग की दुनिया में वो कब तक कदम रखेंगी. डांस से अक्सर इम्प्रेस करती रही हैं.